CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शब्द ब्रह्म
या
भाषा का रहस्यलोक

[Shabd Brahm or Mysteriology of Language]

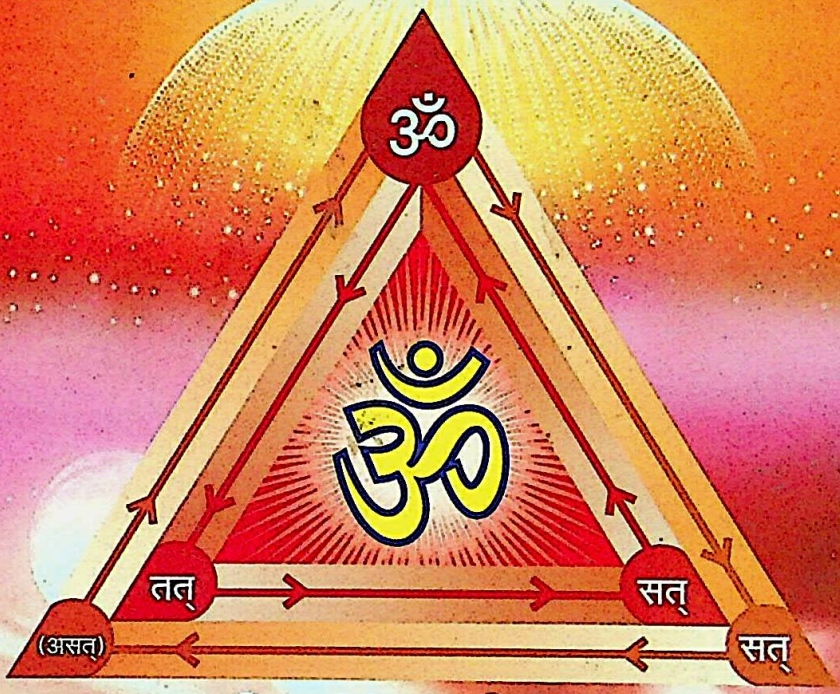

ॐ तत्सदिति ब्रह्म (गीता 17:23)

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म (गीता 8:13)

त्वमक्षरं सदसत्तत्परं (गीता 11:37)

ॐ तत् सत् एवं ॐ सद् सत्तत्परं का शाश्वत चक्र

1. मध्य का ॐ सत्-असत् से परे परम् ब्रह्म है।
2. पंच महाभूतों के क्षोभ से यह ॐ तत् सत् (त्रिवृत्त) में विभाजित हो जाता है।

- आचार्य हरि दत्त शर्मा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

8.3

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आदरणीय
सुश्री ऊर्मिला शर्मा जी को
सादर —
हरिदत्त
17-11-2020

मो० 9454893409

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शब्द ब्रह्म
या
भाषा का रहस्यलोक

[Shabd Brahm
or
Mysteriology of Language]

संपर्क -
मो. 9454893409

- आचार्य हरि दत्त शर्मा

राजनीतिक अकादमी, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

✡ शब्द ब्रह्म या भाषा का रहस्यलोक
Shabd Brahm or Mysteriology of Language

✡ लेखक - आचार्य हरि दत्त शर्मा

✡ राजनीतिक अकादमी, वाराणसी (प्रकाशन)
9, कीर्ति नगर, करौंदी, वाराणसी-221005
मो. 9454893409

✡ © सर्वाधिकार लेखकाधीन

✡ प्रथम संस्करण 2019

✡ मूल्य : ₹ 250/-

✡ मुद्रक : श्री महावीर प्रेस
भेलूपुर, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नमन एवं निवेदन

"शब्द ब्रह्म या भाषा का रहस्यलोक" नाम की यह पुस्तक भाषा शास्त्र के क्षेत्र में अद्वितीय है। न भूतो न भविष्यति ही इसके लिये कहा जा सकता है। विश्वास न हो तो इसी पद्धति से अपनी भाषा के शब्दों से इसका परीक्षण स्वयं कर लें। अपने शरीर-ब्रह्माण्ड को ईश्वरप्रदत्त शाश्वत प्रयोगशाला बनाते हुए, स्वयं को शब्दमय बना लें, सब कुछ स्पष्ट होता जायेगा।

'शब्द ब्रह्म' का यह विवेचन विश्व के भाषा, धर्म, दर्शन, साहित्य, समाज, राज्य, विज्ञान आदि क्षेत्रों में निश्चित ही क्रांति (नया प्रकाश) ला देगा।

वाराणसी. - आचार्य हरि दत्त शर्मा

दिनांक 14 जनवरी 2019

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय सूची

	नमन एवं निवदेन	i
	विषय सूची	ii-iii
	ताम्र अभिलेख (मूल अभिलेख एवं हिन्दी रूपान्तरण)	iv
1.	शब्द मीमांसा	1
1.1	आधुनिक भाषा विज्ञान	1
1.2	भाषाविदों की जिज्ञासायें	2
1.3	भारतीय मेधा का तोता स्वरूप	3
1.4	शब्द शास्त्र का भारतीय आधार	3
1.5	शब्द की व्यापकता	5
1.6	शब्द के शास्त्रीय अर्थ का आधार	6
2.	महाभारत और पुराण	9
2.1	महाभारत का सच	10
2.2	आज के संजय	11
3.	Nishan नीसान/निशान	12
3.1	नीसान, निसान (Nisan) और निशान	13
3.2	नीसान और विज्ञान	14
4.	Much, More, Most का रहस्य	19
4.1	एक महान खोज	19
4.2	Much = मच/मुच	20
4.3	More (मोर)	20
4.4	Most (मोस्ट)/म्वस्ट	22
4.5	मोस्टमान देवता का मंदिर	23
5.	व्याडि	24
6.	शय्या (Bed)	26
6.1	शय्या का वैज्ञानिक और आध्यात्मिक स्वरूप	27
6.2	शय्या का भौतिक स्वरूप	28
6.3	कुमाऊँनी में सय्य/शय्य/शय्या	30
6.4	शय्य/शय्या/लार (लपसी) का अर्थ पलंग कैसे?	31
6.5	शय्या और Bed का 'एकं सत्'	32
7.	साड़ी और धोती	33
8.	शंकर के डमरू का विज्ञान स्वरूप	33
9.	बाण और Ban (बैन = रोक)	34
10.	Many (मैनी) More (मोर) Most (मोस्ट)	36
11.	True (ट्रू) = सत्य = तरु/तरू	37
12.	Calcium (कैलशियम) = काल शिऊँ = सोया हुआ काल	44
12.1	काम देव का भस्म होना	47

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

12.2	कामदेव का विज्ञान पक्ष	48
12.3	भाषा के तुलनात्मक अध्ययन का महत्व	48
12.4	अशरीरी कामदेव का सृष्टि रचना में सहयोग	50
12.5	कामदेव और लोभ (lov) - लव (love) का विज्ञान	50
12.6	लोभ और लव की माया	52
13.	Action (क्रिया)/आग्शन/आग्सन	54
13.1	ईश्वर या देवों की भाषा	55
14.	अन्न और मन का सम्बन्ध	59
15.	त्वमेव माता च पिता त्वमेव	61
16.	Knowledge (नालेज/क्नोवलेज)	63
17.	Good, Better, Best : गुड, बेटर, बेस्ट	65
18.	रोमन कैथोलिक (Roman Catholic)	68
19.	सभ्यता का प्रारंभ (Civilization) = शिवइ लाई जैसन	71
20.	फेर्रो (Ferro)/Ferrum (फैरम) : फेरो/फेरूँ	73
21.	संस्कृत भाषा और भारत	77
21.1	संस्कृत भाषा की सर्वोच्चता	78
21.2	संस्कृत साहित्य का विज्ञान	80
22.	पुराणों का विज्ञान	80
23.	Sir (सर) = सिर/शिर	83
23.1	शिर/सर का Sir 'सर' कैसे बन गया?	85
24.	इस्लाम	86
25.	राम और अल्लाह का विज्ञान स्वरूप	88
26.	Noon (नून = दोपहर) /नून = नमक	90
27.	उतिल (util/utel)	93
28.	Magistrate : मैजिस्ट्रेट या मजिस्ट्रेट	94
28.1	Magistrate (माजीस/मागीस् + तरात्) का रहस्य	95
28.2	माझी से मजिस्ट्रेट	95
29.	Director (डाई रेक्टोर/डाई रेक्टर)	97
29.1	शरीर ब्रह्माण्ड ही भाषा का आधार है	99
29.2	एकं सत विप्रा बहुधा वदन्ति	100
30.	Deliver (डेलीवर/देलीभर)	101
31.	Human (ह्यूमन) = शांत मन	103
32.	Diaspora (दियास्पोरा) = दियाछ पोरा	105
33.	Bá al (बाल) = बाल देवता	106
34.	B³ ūlah (बेउला) : व्योलो-व्योली = वर -वधू	107
35.	B³dōlah (हिब्रू); Bdellion (ग्रीक)	107
36.	Professor (प्रोफेसर) = परा फिस्सोर/-पिस्सोर	108

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यह ताम्र अभिलेख चम्पावत के चन्द्रवंशीय राजा अभयचन्द्र ने हमारें पूर्वज भट्ट रामचन्द्र को शाके 1297 (ई. सन् 1375, चौदहवीं सदी) में दिया था। लिउणाघर ग्राम, अब लिऊनघर, तहसील चम्पावत, जिला चम्पावत, उत्तराखण्ड के नाम से जाना जाता है। भाषाविद्, इतिहासविद अपने-अपने ढंग से इसका अध्ययन कर सकते हैं। - लेखक हरि दत्त शर्मा

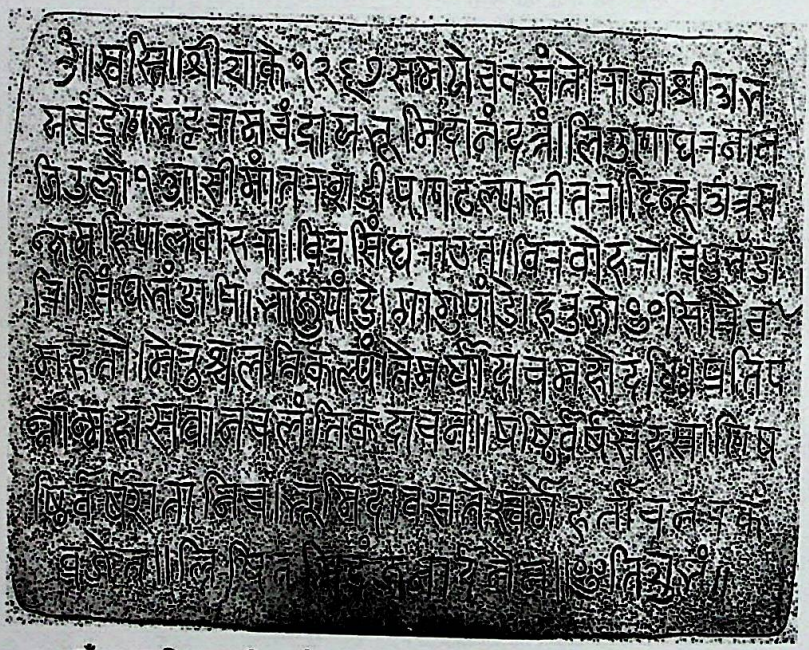

ऊँ।। स्वस्ति।। श्री शाके 1297 समये च बसंते। राजा श्री अभय चन्द्रेण भट्ट राम चन्द्राय भूमिदानं दत्तं। लिउणाघर नाम जिउलो 1 आसीमांतर वाडी पणढल्या भीतर। न्दिहू। अत्र सक्ष महिपाल वोहरा। विर सिंघ राउत। विर वोहरो। चेपु भंडारि। सिंघ भंडारि। भोजु पांडे। गागु पांडे। हरु जोइसि। रैच महतो। मेरुश्चलतिकल्पांते मर्यादा च महोदधिः। प्रति पन्ना न्महासत्वान चलंति कदाचन। षष्ठिर्वर्ष सहस्राणि षष्ठिर्वर्षशतानि च। भूमिदा वसते स्वर्गे हर्ता नरकं व्रजेत।। लिखितमिदं जनार्दनेन ।।इति शुभं।।

अभिलेख वाचन- प्रोफेसर डॉ. सीताराम दुबे
प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1. शब्द मीमांसा

शब्द का अर्थ ध्वनि या आवाज है। भौतिक जगत में दो वस्तुओं की टकराहट से उत्पन्न ध्वनि को शब्द कहते हैं। यथार्थ में पंच महाभूतों में स्वयं और एक दूसरे से परस्पर संघर्षण अथवा सम्मिलन से उत्पन्न ध्वनि तरंगों को 'शब्द' कहते हैं। प्राचीन भारतीय शास्त्रों में शब्द को आकाश का गुण कहा जाता है। प्राणियों में इस गुण (शब्द) को ग्रहण करने की यांत्रिकी या टेक्नालाजी को कान, कर्ण या ear कहते हैं। यदि मनुष्य के पास शब्द सुनने की यांत्रिकी न होती तो भौतिक जगत में उत्पन्न शब्द का उसके लिये कोई उपयोग नहीं होता।

1.1 आधुनिक भाषा विज्ञान

वर्तमान भाषा विज्ञानी शब्द के एक ही रूप पर निर्भर रहते हैं। कान द्वारा सुने गये शब्दों पर ही उनका सारा अर्थ खड़ा है। यही अर्थ उन्हें अनर्थ के जाल में बांध देता है और उनका भाषा-विज्ञान रेत के महल की तरह धराशायी हो जाता है।

उन्नीसवीं-बीसवी सदी में यूरोप में भाषा विज्ञान ने एक नई दिशा दी। यूरोपीय भाषा शास्त्रियों ने विश्व की भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन कर भाषा शास्त्र के क्षेत्र में हलचल मचा दी। विश्व के सभी देशों के विद्वान इस ओर खिंचे चले आये।

संस्कृत भाषा के तुलनात्मक अध्ययन से यूरोपीय भाषा विज्ञानियों ने विश्व की सभ्यता के रहस्य को संस्कृत के माध्यम से जान लेने की संम्भावना जताई। वेद जो विश्व के सबसे प्राचीन लिखित ग्रन्थ हैं उनका रहस्य खोल लेने की कल्पना कर ली गई। यह आशा पूरी नहीं हो सकी।

भारत के भाषा शास्त्रियों और तुलनात्मक भाषा शास्त्रियों में भी संस्कृत भाषा की व्यापकता और महत्त्व ने एक नये उत्साह को जगा दिया। भारतीय भाषा विज्ञानियों ने तुलनात्मक भाषा विज्ञान के उन्हीं तर्कों को स्वीकार किया जो तर्क यूरोपीय विद्वान देते रहे हैं। बहुत से भाषा विज्ञानी तो इतनी ऊंची छलांग लगा देते थे कि वे यास्क के 'निरुक्त' में दिये गये शब्द निर्वचन को भी मिथ्या असंगत और मूर्खतापूर्ण कह देने में किसी तरह का संकोच महसूस नहीं करते थे।[1]

---

1. यास्क के शब्द निर्वचन का उत्साह पागलपन की सीमा तक पहुँच जाता था– इटीमोलाजी आफ यास्क, डॉ. सिद्धेश्वर वर्मा, भूमिका-पृष्ठ 3 ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारत के पांडिचेरी (अब पुडुचेरी) द्वीप में फ्रांसीसी शासन के अधीन रह कर श्री अरविन्द ने भी तुलनात्मक भाषा शास्त्र को पहले एक आशा भरी दृष्टि से देखा। इसमें उन्हें वेदों के रहस्य जान लेने की कुँजी दिखाई दी। अन्त में जब यूरोप में ही तुलनात्मक भाषा विज्ञान लड़खड़ा गया। तो श्री अरविन्द को, वेदों के रहस्य को खोलने की कुंजी मिलने वाली आशा, निराशा में बदल गयी।[1]

1.2 भाषाविदों की जिज्ञासायें-

'वेद-रहस्य' के पांचवें अध्याय "वेद की भाषा वैज्ञानिक पद्धति" (पृ 87-88) में श्री अरविन्द के प्रश्नों -- भाषा वैज्ञानिकी का आधार, वेद के काल्पनिक अर्थों पर विश्वास, शब्द का अर्थ करने का आधार, एक ही शब्द के बहुत से अर्थ प्राचीन वैयाकरणों द्वारा किये जाने का आधार आदि -- का समाधान इस पुस्तक में दिया गया है।

श्री अरविन्द के द्वारा उठाये गये प्रश्न भाषा वैज्ञानिकों के लिये बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इन सभी प्रश्नों का कोई भी वैज्ञानिक आधार आधुनिक भाषाविद् अथवा भौतिकविद् नहीं दे सके हैं। मैंने अपने सभी लेखनों में शब्द या भाषा का अर्थ किस प्रकार व्युत्पन्न होता है उसका विस्तार से वर्णन किया है। आधुनिक विद्वत्ता है कि वह यूरोपीय भाषाविदों के अवैज्ञानिक भाषा चक्रव्यूहों की परिक्रमा करने में स्वयं को धन्य समझ रही है। इससे किसी भी प्रकार का प्रकाश भाषा विज्ञान को मिलेगा, इसकी किंचित की आशा हमें नहीं करनी चाहिये।

यहाँ पर यह कहना गौरव की बात है कि भारत के प्राचीन मनीषियों, व्याकरणाचार्यों तथा यास्क जैसे निरुक्तकारों ने भाषा के वैज्ञानिक आधार को ढूँढ लिया था उसी आधार पर समस्त ग्रन्थों की रचना की गई है। अब उन्हीं के आविष्कार या ज्ञान के रहस्य को मैं सबके समक्ष प्रकाशित कर रहा हूँ। यही मेरे अनुसंधान की देन है। भाषा के वैज्ञानिक सत्य को धारण करने वाली सत्ता स्वयं हमारा "शरीर-ब्रह्माण्ड" है। अर्थात् भाषा के विज्ञान का प्रमाण (आधार) हमारा शरीर ब्रह्माण्ड ही है। निश्चयात्मक आधार से सम्बन्धित भाषा वैज्ञानिकों के संदेह निवारण का यह प्रथम समाधान है।

---

1. तुलनात्मक भाषा विज्ञान सचमुच हमारी कुछ सहायता कर सकता है, परन्तु वर्तमान अवस्था में वह भी बहुत थोड़ी निश्चयात्मकता के साथ हमारी सहायता कर सकता है। सच तो यह है कि भाषा विज्ञान से जो परिणाम निकले हैं, उनमें अभी तक कोई निश्चयात्मकता नहीं है....। वेद-रहस्य-पूर्वार्ध, श्री अरविन्द, अरविन्द आश्रम ट्रस्ट 1971 (पृष्ठ 65-66)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1.3 भारतीय मेधा का तोता स्वरूप–

भारतीय मेधा (पांडित्य) का एक घेरे में रह कर विद्वत्ता को ग्रहण करने का स्वभाव रहा है। इस घेरे का नाम शिक्षा पद्धति है, रटन्त ही तोते के गुण को धारण कर लेता है। दीर्घ काल से आज तक इसी पद्धति का आश्रय भारतीय विद्वत्ता ने ले रखा है। अंग्रेजी शासन में अंग्रेज और अंग्रेजी भाषा, भारतीय भाषा शास्त्रियों के 'गुरु' हो गये। यदि भारतीय भाषा विज्ञान के आधुनिक भारतीय विद्वानों द्वारा लिखी पुस्तकों को देखें तो उनमें यूरोपीय गुरुओं के कहे गये शब्दों के अतिरिक्त नया कुछ भी नहीं मिलता है।

"तुलनात्मक भाषाविदों की एक विशेषता है कि वे 'स्रोत' से ही चलते हैं। जैसा यूरोपीय विद्वानों ने लिख दिया वही 'ब्रह्मवाक्य' है, वही उनका स्रोत है। यूरोपीय विद्वानों को उद्धृत करते हुए डॉ0 चाटुर्ज्या ने लिखा है कि 'हित्ती में एक ध्वनि ख् जो ह् लिखी गई है, मिलती है, वहीं भारत यूरोपीय भाषाओं में इसके स्थान पर कोई ध्वनि नहीं है, जैसे हित्ती खस्ताइ 'हड्डियां' = सं0 अस्थि, ग्री0 ओस्तेऑन, लै0 ओस।' पाश्चात्य विद्वानों तथा डॉ0 चाटुर्ज्या का सन्दर्भ देते हुए डॉ0 देवीदत्त शर्मा ने भी उपर्युक्त को यथावत दुहराया है। खस्ताइ और अस्थि आदि शब्दों में शाब्दिक अन्तर के आधार पर उपर्युक्त निष्कर्ष निकाल लेना यह बताता है कि भाषाविद् शब्द और अर्थ की थोड़ी बहुत समानता के आधार पर ही शब्दों में समानता की घोषणा करते हैं, परन्तु शब्द की समानता और अर्थ की भिन्नता होने पर अन्तर के कारणों को खोजने का कोई प्रयास नहीं करते हैं। कुमाऊँनी में ख और ह से व्युत्पन्न दोनों प्रकार के शब्द पाए जाते हैं। 'खस्ता' शब्द कुमांऊँनी, भोजपुरी, अवधी, हिन्दी आदि अनेक भाषाओं में व्यापक रूप में प्रचलित है। 'खस्ता' का अर्थ 'कड़ा' कठोर या ठोस है। हित्तियों ने इस अर्थ को 'हड्डी' के लिए 'रूढ़' बना लिया और भारतीयों ने 'पकवानों' के लिए। ग्रीक 'ओस्तेओन' को ओस् तइ (तुषार, ओस की तरह ठोस) + ओन (होना) से व्युत्पन्न है तथा लैटिन 'ओस्' शुद्ध रूप से भारतीय ओस (तुषार) के स्वरूप (ठोस) का द्योतक है।"[1]

1.4 शब्द शास्त्र का भारतीय आधार

भारत का प्राचीन शब्द विज्ञान पंच महाभूतों के भौतिक और अध्यात्म दर्शन

---

1. शब्द विज्ञान (विश्व भाषाओं की कुमाऊँनी आधारित व्युत्पत्ति), प्रथम खण्ड, हरिदत्त शर्मा, सन् 2002, पृष्ठ 13 ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर आधारित है। इस दर्शन के अनुसार परम सत्ता (आप जो भी नाम दें) ने प्रकृति को पांच भागों में उनके गुणों के अनुसार निर्मित किया है। आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी ये पांच तत्त्व हैं। इन तत्त्वों सहित इनके गुणों को पंच महाभूत कहते हैं, क्योंकि इनके गुण इन्हीं तत्त्वों में समाये रहते हैं।

आकाश का गुण शब्द है। वायु का गुण स्पर्श, अग्नि का गुण प्रकाश है, जल का गुण रस कहा गया है तथा पृथ्वी का गुण गंध है।

विज्ञानी पूछेंगे कि इसमें नई बात क्या है। ये सभी द्रव्य हैं द्रव्य का अपना-अपना गुण (प्रापर्टी) होती ही है, इसका विज्ञान से क्या सम्बन्ध है? वैज्ञानिकों ने अभी तक तत्त्वों (elements) की संख्या 118 बतायी है। उनके प्रयोगों से ये तत्त्व कभी कम हो जाते हैं और कभी अधिक हो जाते हैं। इससे स्पष्ट हैं कि वर्तमान वैज्ञानिकों को तत्त्वों की संख्या का सत्य, अनुमान पर आधारित है और अनिश्चित है।

भारतीय पद्धति में सभी तत्त्वों को पाँच वर्गों में विभाजित कर दिया गया है। ब्रह्माण्ड अनन्त है। यह फैलता जा रहा है। मानव की क्षमता सीमित है। जब भी कभी नवीन तत्त्व (पदार्थ) का ज्ञान होगा। हम उसे इन्हीं पाँच वर्गों में से किसी एक में समायोजित कर लेते हैं। इस प्रकार विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन भारतीय तत्त्व वर्गीकरण की पद्धति अधिक विश्वसनीय एवं वैज्ञानिक है। इसी कारण पुराणों ने ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम 'अज्ञात' अथवा अविज्ञातगति रखा है (महाभा. आ. प., 66 : 25)।

ईश्वर की सृष्टि रचना का विज्ञान विस्मयकारी है। पाँच महाभूतों के गुणों के अनुरूप ही प्राणी (मनुष्य) शरीर में पाँच स्थूल यांत्रिकियों का निर्माण सर्वोच्च सत्ता ने किया है। ये यांत्रिकी हैं– कर्ण जो आकाश के शब्द गुण का प्रतिनिधित्व करता है। इसे दूसरी तरह भी कहा जा सकता है कि आकाश ने प्राणियों को शब्द सुनने के लिये स्वयं के अदृष्य स्वरूप को स्थूल कर्ण यांत्रिकी के रूप में विकसित किया है या स्वयं को कर्ण (कान) के रूप में अवतरित किया है।

वायु ने अपनी स्पर्श शक्ति (गुण) से प्राणी को लाभान्वित करने के लिये स्वयं को त्वचा के रूप में विकसित कर रखा है। त्वचा स्पर्श शक्ति का स्थूल रूप है।

अग्नि ने प्राणियों में चक्षु प्रणाली के रूप में अवतार ले रखा है।

जल ने अपने रस गुण को जिह्वा यांत्रिकी के रूप में स्थापित कर रखा है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तथा पृथ्वी (गन्ध गुण) ने स्वंय को प्राणियों के स्थूल ढांचे में नासिका (नाक) के रूप में अवतरित (स्थापित) कर रखा है।

वैज्ञानिक देखें- मनुष्य शरीर में पांच यांत्रिकी ही सबसे अधिक प्रभावी रहती हैं। आधुनिक विज्ञान अभी तक खोजे गये अपने 118 (कम या अधिक) तत्त्वों से शरीर के किन किन अंगों या स्थूल यांत्रिकी (शरीर के अंगों) का निर्माण हुआ है, इसे नहीं बता सकता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा रहा है कि आज का वैज्ञानिक निश्चित रूप में यह नहीं बता पा रहा है कि उनके द्वारा खोजे गये तत्त्वों ने प्राणी शरीर के किन-किन यांत्रिकियों (अंग प्रणालियों) के रूप में स्वयं को स्थापित कर रखा है? अर्थात् आधुनिक विज्ञान का तत्त्व वर्गीकरण अवैज्ञानिक है। क्योंकि वे यह नहीं बता सकते हैं कि प्रकृति का कौन सा तत्त्व (पदार्थ/सत्त्व) प्राणी के किस अंग प्रणाली का प्रतिनिधित्व करता है।[1]

1.5 शब्द की व्यापकता

पांच तत्त्व समूहों में प्रत्येक में एक दूसरे का गुण अल्प मात्रा में होता है। पृथ्वी में पाँचों तत्त्वों के गुण होते हैं। यह संक्षेप है। शब्द की उत्पत्ति इन पांचों महाभूतों के गुणों से होती है। इन पाँचों तत्त्वों को पुनः आयुर्वेद ने तीन तत्त्वों वात, पित्त, कफ में संक्षेप कर शब्द और उसका अर्थ निर्धारण करने के तीन आधार निश्चित कर दिये हैं आयुर्वेद में इसी को नाड़ी-विज्ञान कहा गया है। पांच तत्वों को तीन में संक्षिप्त कर देने का अपना अलग विज्ञान है।

शब्द की व्यापकता मापने अथवा प्रमाणित करने के लिये हम पुनः शरीर ब्रह्माण्ड - प्रयोगशाला में पहुँचते हैं। शरीर के किसी भी अंग (बाहर अथवा भीतर) में चुभन, चोट, कन्यो (खुजली), जलन, असामान्य स्थिति (बेचैनी) आदि से उत्पन्न शब्दों को सम्पूर्ण शरीर सुन लेता है। यही व्याप्ति गुण कहा जाता है। मध्यकाल के भक्त कवि सूरदास ने इसी व्याप्ति गुण को "बिनु पद चलै सुनै बिनु काना" के रूप में व्यक्त किया है। नाड़ी विज्ञान के अनुसार हम अपनी अंगुलियों की त्वचा के माध्यम से शब्द और उसके अर्थ को जान लेते हैं। यह भी शब्द की व्यापकता को प्रमाणित कर देता है।

---

1. इससे स्पष्ट होता है कि आधुनिक विज्ञान का अपना कोई दर्शनाधार और उद्देश्य नहीं है। विश्व व्यवस्था के लिये यह चिंता का कारण है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1.6 शब्द के शास्त्रीय अर्थ का आधार

जो शब्द लोक में बोले जाते हैं, उनका शास्त्रों या ग्रन्थों में अर्थ किस सिद्धान्त के आधार पर बदल जाता है ? पहले इसी प्रश्न पर चर्चा करेंगे।

महर्षि पतंजलि ने अपने ग्रन्थ महाभाष्य में लिखा है वैयाकरण शब्दों का न तो स्वयं निर्माण करते हैं और न इन्हें लोहार के यहां ढलवाते हैं अर्थात् शब्द किसी कारखाने या टक्साल में नहीं ढाले जाते हैं।

जब शब्दों का निर्माण भाषा के विद्वानों (वैयाकरणों) द्वारा नहीं किया जाता है तो ग्रन्थों में जो हजारों लाखों शब्द हैं वे कहाँ से आते हैं ?

शब्दों के बारे में संस्कृत के विद्वानों का कथन है कि भगवान शिव के डमरु के बजने से ही चौदह सूत्र निकलते हैं, इन्ही सूत्रों से शब्दों को अलग कर लिया गया है। इसका तात्पर्य है कि शिव जी के डमरू बजने से ही शब्दों की उत्पत्ति होती है।

इस कल्पना पर अनेक प्रश्न उठते हैं। शिव जी ने कहाँ बैठ कर डमरू बजाया था ? क्या शिव के डमरू बजाने के पहले शब्द नहीं थे ? डमरू बनाकर शिव को किसने दिया ? तथा डमरू के बनाने की प्रक्रिया में शब्द उत्पन्न नहीं हुए थे ? यदि उत्पन्न हुए थे तो तब के उत्पन्न शब्द कहाँ गये हैं? आज उनका ज्ञान किसी को क्यों नहीं है ?

शिव के डमरू की कथा से स्पष्ट होता है कि डमरू बजाने के पूर्व शब्द थे ही नहीं। क्या? यह वही स्थिति नहीं थी जिसे ऋग्वेद के नासदीय सूक्त (ऋ.वे. 10:129: 1-3) में कहा गया है-

नासदीय सूक्त की इन ऋचाओं का सार इस प्रकार है -उस प्रलय काल में सत् (पंचभूत) और असत् (अभाव) दोनों का अस्तित्व नहीं था। मृत्यु और अमरता, दिन-रात कुछ भी नहीं था। सभी कुछ 'अव्यक्त' था। सब एक ही प्रवाह (ब्रह्म रूप) में गुथा हुआ था। इस कथन का तात्पर्य है कि पहले ध्वनि (गूंज) तो थी, परन्तु शब्द अर्थात् द्रव्यों (पदार्थों) का स्वरूप अव्यक्त था। अतः किस द्रव्य को किस शब्द (नाम) से पुकारा जाय, यह स्थिति उत्पन्न नहीं हुई थी। इसका भाव है कि उस काल में शब्द का अलगाव (अलग-अलग रूप) नहीं हुआ था अर्थात् तब शब्दों की उत्पत्ति भी नहीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हुई थी। विज्ञान की भाषा में कहें तो तब शब्द 'नीहारिका' (nebula) में ही विलीन थे।[1]

ऐसी स्थिति में संस्कृत भाषा के शब्द भी कहीं नहीं थे। "भगवान शिव ने डमरू बजाया तभी शब्दों की उत्पत्ति हुई" इस कथन से यह स्पष्ट नहीं हो पाता है कि डमरू बजने के पूर्व बजाने वाले के लिए "शिव" और बजने वाले के लिए "डमरू" शब्द कहाँ से उत्पन्न हो चुके थे। इन तथा पूर्व प्रश्नों के कोई उत्तर संस्कृत के आचार्यों एवं यूरोपीय पंडित्य के पास नहीं हैं। यही कह दिया जाता है कि संस्कृत देव भाषा है। इस पर भी प्रश्न उठता है कि जब संस्कृत देव भाषा (देवताओं की वाणी) है तो उसे मनुष्य क्यों बोलते हैं ? जो मनुष्य इस भाषा को बोलते हैं तो उन्हें देवता ही हो जाना चाहिये था। लोक में हम देखते हैं कि संस्कृत बोलने वालों में भी उसी तरह की माया, मोह, क्रोध, झगड़ालू प्रवृत्ति एवं व्यवहार दिखाई देते हैं , जो लोक भाषा बोलने वालों में होते हैं। इस अवस्था में यह कैसे कहा जा सकता है कि संस्कृत देव भाषा ही है ?

हम लोग इन प्रश्नों से उत्पन्न समस्याओं पर हजारों वर्षों से किसी प्रकार की अनुसंधानत्मक गवेषणा किये जाने से बचते रहे हैं। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि हम संस्कृत भाषा की महानता एवं श्रेष्ठता की वैज्ञानिकी को नहीं जानते हैं परन्तु यूरोपीय पंडितों की प्रशंसा से उत्साहित होकर केवल संस्कृत के श्रेष्ठ भाषा होने का ढोल बजाते रहते हैं। इस ढोल बजाने से किसको लाभ मिलता है? इसे भी हम स्पष्ट नहीं कर पाते हैं। आज हमारी स्थिति ऐसी है कि हम वेद पुराणों में वर्णित 'शय्या' शब्द के अध्यात्म पक्ष के विज्ञान स्वरूप की व्याख्या भी नहीं कर सकते हैं। संस्कृत 'शय्या' शब्द के लिये हमें कुमाऊँनी शब्दों की सहायता लेनी पड़ती है। इसका प्रमाण आगे मिल जायेगा।

उपर्युक्त प्रश्नों का उत्तर हम शरीर ब्रह्माण्ड के गहन अध्ययन के साथ प्राप्त कर सकते हैं। अभी हम प्रो० हरिदत्त शर्मा की पुस्तकों में कहे गये शब्दों के साथ इस प्रकरण को बंद करते हैं। देखें-

"जहाँ तक भाषाओं के सैद्धान्तिक अथवा दार्शनिक पक्ष की बात है संस्कृत ही एक ऐसी भाषा है जिसका निर्माण या विकास ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति और विकास के आधार पर हुआ है। यह भारत की ही नहीं वरन् विश्व की सभी भाषाओं की 'संस्कारित'

---

1. ऋग्वेद के नासदीय सूक्त (10 : 129) को विज्ञान की दृष्टि से देखें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भाषा है। अन्य सभी भाषाएं प्राकृत एवं लोक भाषाएं हैं, वे केवल दैनिक उपभोग की आवश्यकताओं की पूर्ति की साधन मात्र है। विश्व की एक मात्र भाषा संस्कृत है जिसका अपना एक दर्शन है, जो 'एकोऽहम्' से 'बहुस्याम्' (विकास) तथा 'वृत्ति निरोधः' (पुनः उस एक में मिल जाना) के दर्शन पर आधारित है। लोक भाषाओं को प्राकृत इसलिये भी कहा जाता है क्योंकि इनके उच्चारण स्पष्ट न होकर मिश्रित होते हैं। यहाँ पर मिश्रित से तात्पर्य है कि उनके उच्चारण में जल, पृथ्वी, वायु अथवा अग्नि तत्वों में से किसी एक की अथवा एक से अधिक तत्वों की प्रधानता रहती है। इसके विपरीत संस्कृत भाषा का अपना दर्शन होने के कारण उसका आधार नितान्त वैज्ञानिक है।

"संस्कृत को सम्पूर्ण रूप से समझने के लिए लोक भाषाओं का ज्ञान भी आवश्यक है। अतः प्राकृत या लोक भाषाएँ संस्कृत की विरोधी नहीं वरन् उसकी पूरक अथवा आधार हैं। इन्हीं आधारभूत भाषाओं को संस्कारित कर संस्कृत का विकास या जन्म हुआ है। यथार्थ में संस्कृत सिर के बल खड़ी भाषा है जबकि विश्व की अन्य सभी लोक भाषाएँ पैरों के बल पर खड़ी हैं। इसका आशय यह है कि संस्कृत अमूर्त, अध्यात्म अथवा भाव जगत की भाषा है। जबकि लौकिक भाषाएँ धीरे-धीरे विकसित भाषाएँ हैं। दूसरे शब्दों में लौकिक भाषाएँ आवश्यकता, क्रिया, निर्माण और विकास क्रम पर आधारित हैं। तथा संस्कृत इस विकास क्रिया के पूर्व जन्म ले चुकी अमूर्त जगत 'अस्ति' की भाषा या शब्द हैं। इसका अर्थ है कि पृथ्वी पर विकास क्रम प्रारंभ किस रूप में हो इसकी रुपरेखा विराट् ब्रह्माण्ड के भाव जगत में पहले बन जाती है। यही 'अस्ति' भौतिक जगत में क्रमशः विकसित होती है, इसी को लोक भाषा कहते हैं जो 'अस्ति' भाषा की तरह परिष्कृत नहीं होती है। यही कारण है कि संस्कृत व्याकरण के ज्ञाता पाणिनी के सूत्रों से ही जब शब्द का सिद्ध हो जाना प्रमाणित करते हैं तो उनकी शैली ऐसी होती है मानो आकाश से ही शब्द को ग्रहण कर प्रस्तुत कर रहे हों। यह बात स्वयं में अद्भुत है, क्योंकि शब्द आकाश का गुण है।[1] यही गुण संस्कृत को

---

1. आकाश तत्त्व का अर्थ है शब्द को शुष्क तरंग की ध्वनि से सुनाई देना चाहिये। लोक भाषाओं में जैसे अंग्रेजी, फ्रेंच के शब्दों को जिह्वा के लार में (जलाशय) से भिगाकर बोलना ही प्राकृत उच्चारण कहा जाता है। या शब्द में वायु प्रधानता तब आ जाती है जब कोई नाक के साथ शब्दतरंग को जोड़ देता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अद्वितीय बना देता है। इस विवेचन से यह तथ्य हमारे समक्ष स्पष्ट हो जाता है कि इतिहास की दृष्टि से सर्वप्रथम लोक भाषाओं का जन्म होता है, तभी उनको संस्कारित कर संस्कृत का जन्म होता है अन्यथा वस्तु के अभाव में उसका संस्कारित स्वरूप बनाना सम्भव नहीं है। यहाँ पर पुनः यह महत्वपूर्ण है कि लोक भाषाओं को संस्कारित कर जो संस्कृत भाषा बनी वह 'अस्ति' स्तर की भाषा की बराबरी करती है। यह कैसे सम्भव हुआ आज इसे समझना कठिन है। हाँ 'योग' की समाधि भाषा को भी 'अस्ति' की भाषा कहा जाता है।

"पं. किशोरीदास वाजपेयी ने बहुत पहले इस बात को कहा था कि संस्कृत से हिन्दी का विकास नहीं वरन 'आदि हिन्दी' अर्थात् प्राकृत अथवा लोक भाषा से संस्कृत का विकास हुआ है।[1] वाजपेयी जी स्वयं संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे।"[2]

2. महाभारत और पुराण

पुराण और महाभारत आदि ग्रन्थों में शब्द विज्ञान का विशद वर्णन है। महाभारत में स्पष्ट कहा गया है कि यह ग्रन्थ, निरुक्त के शब्द विज्ञान के आधार पर लिखा गया है।[3] इस में जिस तरह की ग्रन्थियाँ (गाँठ) लगाई गई हैं उन्हें खोलना सहज नहीं है यही कारण है कि भारत का पांडित्य महाभारत के श्लोकों में लगी रहस्यमय गांठों को खोल न पाने के कारण ग्रन्थों के वैज्ञानिक स्वरूप को देख नहीं पा रहा है। इस अन्धत्व के कारण भारत का प्रत्येक व्यक्ति, विद्वान, प्रोफेसर, डाक्टर, इन्जीनियर, टेक्नोलाजिस्ट, अर्थविज्ञानी, प्रबन्ध विज्ञानी, राजनीतिज्ञ, मंत्री, नेता, प्रधान मंत्री, मुख्य मंत्री, न्यायाधीश, वकील, व्यापारी, आचार्य, गुरु, संत, ऋषि, योगी, बाबा आदि सभी वर्ग के अधिकांश सामान्य और अग्रगामी, विकासशील लोग पाश्चात्य विज्ञान के उत्पादों को देख कर भूखे भेड़ियों की तरह टूट पड़ते हैं। छीना छपटी में एक दूसरे को लहूलुहान कर सभी एक दूसरे पर गुर्राते हुए भारत के प्राचीन आश्चर्यमय ज्ञान विज्ञान को हेय बताते हुए स्वयं की श्रेष्ठता गिनाने में निमग्न हो जाते हैं। नीचे से लेकर ऊपर तक सभी एक सी लूट में निमग्न हैं। इन्हें मानवीयता, विद्वत्ता, ज्ञान, दर्शन आदि से कोई लगाव नहीं है।

---

1. हिन्दी शब्दानुशासन - किशोरीदास वाजपेयी, पृष्ठ 1-4 ।
2. शब्द - विज्ञान (विश्व भाषाओं की कुमाऊँनी आधारित व्युत्पत्ति) - हरिदत्त शर्मा, पृष्ठ 26-28।
3. महाभारत, आदि पर्व, 1:62; 1:80, 81, 82।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सभी घूस, लूट और भ्रष्टाचार की वैतरणी से सत्ता पा जाते हैं तो स्वयं को भारत का भाग्य विधाता होने की घोषणा करने लग जाते हैं। भारत का दुर्भाग्य है कि टी.वी. रेडियो, समाचार पत्र सब समानधर्मा शासकों के गुण गान में निमग्न हो जाते हैं। अथवा यह कहा जाय कि भारत में संचार तंत्र भेड़िया दर्शन से ओत-प्रोत शासकों की विरुदावली गाने में स्वयं को रंगे सियार बना लेते हैं।

2.1 महाभारत का सच

महाभारत में महर्षि व्यास ने कहा है जिन श्लोकों (गूढ़ रहस्यों) में वे गांठ लगा रहे हैं, उसके विज्ञान स्वरूप को मैं जानता हूँ, शुकदेव जानते हैं यह सत्य है, परन्तु संजय जानते हैं या नहीं यह अनिश्चित है।[1]

इस कथन की एक गांठ यहाँ पर खोल दी जाती है। गणेश महाभारत के लेखक थे। लेखक का अर्थ होता है, सिद्धान्तों और विचारों (मन/इच्छा) को मूर्त रूप देना है। महर्षि व्यास (विस्तार प्रवृत्ति) मन या विचार, सिद्धान्त और दर्शन का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस तरह शुकदेव और व्यास दोनों का ज्ञान स्वयं के कर्म का आधारित था। विद्वान ध्यान करें तो उन्हें यहाँ पर गणेश (लेखक) का 'शुकदेव' में परिवर्तन हो जाने की ग्रन्थि खुल कर दिखाई दे जाएगी। यह शरीर टेक्नालॉजी से सम्बन्धित है। व्यास रासायनिक क्रिया से उत्पन्न मन है। गणेश मूलाधार चक्र में हाथी (हस्ति) के गुण को धारण करते हैं। जब रेचक प्राणायाम की क्रिया (टेक्नालॉजी) में परितर्वन होता है तो गणेश हाथी की सूड़ (सं. शुण्ड) से ऊपर को द्रव्यों की फुहार छोड़ते हैं। शरीर ब्रह्माण्ड में ऊपर का अर्थ आकाश होता है। आकाश में पक्षी उड़ते हैं। अथवा यह फुहार सम्पूर्ण शरीर ब्रह्माण्ड में आकाश की तरह फैल (व्याप्त) हो जाती है तथा सबका पोषण करती है। इस पोषण से उत्पन्न मिठास का नाम शुक या शुकदेव है।[2] इस प्रकार महर्षि व्यास द्वारा लगाई

---

1. महाभा0 आदि पर्व 1 : 62 तथा आ. प. 62 : 40 में महाभारत को 'निरूक्तमस्य' (निरुक्त स्वरूप) कहा गया है।

2. यह बहुत संक्षिप्त विवरण है। इसमें कमी रह गयी हो तो विद्वान केवल आलोचना करने की अपेक्षा अर्थात् गलती निकालने की अपेक्षा इन पंक्तियों की विस्तृत व्याख्या में अपना समय लगायेंगे तो, सभी जिज्ञासुओं का भला होगा। महाभा. आ. प. 1 : 73 से 79 तक गणेश और उनके अन्य नाम आये हैं। श्लोक 81 में एकाएक शुक (शुकदेव) का नाम आ गया है। ऐसा क्यों हुआ है? इसी की इसमें व्याख्या की गयी है। यूरोपवासी गले में टाई (Tie) बांधते है, भारत में कंठी। दोनों व्यास ग्रन्थि की प्रतिनिधि हैं।-लेखक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गई एक ग्रन्थि (गाँठ, बंधन, tie, complexity) को खोल कर विज्ञान के स्वरूप को स्पष्ट कर दिया गया है। शेष गाँठों को भी इसी पद्धति से खोला जाना चाहिये।

अब संजय के ज्ञान पर चर्चा करते हैं। संजय अन्धे राजा धृतराष्ट्र के सहायक हैं। अन्धों का मन (विचार, दर्शन) अन्धी इच्छा पर आधारित होता है। उन्हें इच्छा या मन किस प्रकार वैज्ञानिक नियमों के अनुरूप स्थूल रूप में लाया जाता है, उसका व्यावहारिक ज्ञान नहीं होता है। इसके अतिरिक्त संजय का ज्ञान (संज्ञा) स्वयं के श्रम से उत्पन्न न होकर दूसरे (कृष्ण) द्वारा दी गयी ज्ञान दृष्टि थी। कृष्ण जितना दिखाना चाहेंगे उतना ही संजय देख सकते हैं। शब्दों के विज्ञान पक्ष को वे पूर्णतः जानने में समर्थ नहीं थे। इसी कारण व्यास जी ने संजय के महाभारत की ग्रन्थियों को खोल लेने के ज्ञान को संदिग्ध स्थिति में रखा है। संजय तो वही वर्णन कर देते हैं जो कृष्ण के वर की दिव्य दृष्टि से उन्हें दिखाई देता है।

2.2 आज के संजय

आज के संजय भी अन्धी आकांक्षाओं वाली जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं। आज के संजयों के भिन्न-भिन्न नाम हैं। इनके नाम ऊपर बता दिये गये हैं, इन संजयों की दिव्य दृष्टि एक ही वस्तु धन को देखती है उसी से चालित होती है और उसी को अपने स्वाभिमान, मान, सम्मान, विद्वत्ता, प्रसिद्धि का आधार देखती है। यह धन घूस, भ्रष्टाचार, ठगी, झूठे आश्वासन, झूठे विधानों, झूठे शिलान्यासों, झूठे प्रशासन, झूठे न्याय से जिस किसी तरह मिले, आज के संजयों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इन संजयों के गुरु को आज 'नेताजी' कहा जाता है। ये नेता प्रत्येक क्षेत्र में पनपते हैं। ये अपनी अधूरी, उधार की दृष्टि (शिक्षा, विशेषज्ञता) से कभी सच बोलते दिखाई देते हैं तो कभी सम्पूर्ण व्यवस्था को नष्ट होते देखकर संजय की तरह अपने नेता का गुणगान करते हुए नाचने-गाने लगते हैं। अर्थात् आज के संजयों की दूर दृष्टि वहीं तक के रहस्य खोल सकती है जहाँ से उन्हें सत्ता से लूट, हत्या, बलात्कार की माफी पहले से प्राप्त होती है। इसी स्थिति का नाम माफिया राज, माफिया दृष्टि कहते हैं। वर्तमान युग में यही संजय दृष्टि है। जिसे राज सत्ता द्वारा विनाशक कार्यों को करने पर माफी मिलने की गारंटी पहले से मिली होती है वही माफिया (माफी+आ = माफी+या) कहलाता है।[1] आज

1. विस्तार के लिये देखें सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को लिखे पत्र दिनांक 3.9.2011 का फुटनोट-अध्यात्म विज्ञान राज योग = स्वराज - संलग्नक 2, हरिदत्त शर्मा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वत्र माफिया राज है या नहीं आप इसे देख सकते हैं। हमारे संविधान निर्माता संजयों ने सत्ता को चलाने वाले 'माफियाओं' का कोई उत्तरदायित्व निर्धारित नहीं किया है।

संक्षेप

आज के 'संजयों' (प्रत्येक क्षेत्र के इलीटस) की दिव्य दृष्टि इतनी मलिन हो चुकी है कि वे महाभारत को लौकिक जगत की कथा इतिहास मान कर उसकी व्याख्या या अर्थ करने लगते हैं। जब लौकिक इतिहास से महाभारत की कथाओं का साम्य नहीं हो पाता है तो हताशा में इसे मिथ और झूठ की कथाएं कह कर स्वयं को शांत कर लेते हैं। महाभारत है कि हमारे पांडित्य (संजयों) एवं टेक्नोक्रेटों का पल्ला छोड़ता नहीं है।

आज के इन्हीं संजयों के बारे में व्यास जी ने कहा था कि संजय महाभारत के गूढ़ (दार्शनिक एवं वैज्ञानिक) श्लोकों में समाये शब्द ब्रह्म को समझता है या नहीं इसमें उनको स्वयं संदेह है। संजय अंधे राजा का सारथी है। राजा जनता का प्रतिनिधि होता है। जहाँ राजा अन्धा होता है तो वह अन्धत्व से ही जन रंजन करता है (जो जन रंजन करता है वही राजा कहा जाता है– यही शास्त्रीय परिभाषा है)। तात्पर्य है कि जनता भी ऐसे राज्य में अन्धकार (अज्ञान) से आवृत रहती है।

वर्तमान में लोक के "संजयों" की दिव्य दृष्टि (उधार का ज्ञान) है। जो कुछ तो परंपरा के अन्धकार से मिला है और कुछ पश्चिमी संजयों से आयातित अज्ञान है। इन दोनों प्रकार के संजयों का योग भी महाभारत के गूढ़ रहस्यों को खोल नहीं सका है।

इस स्थिति में ज्ञानी, पंडित, आचार्य, प्रोफेसर, संत, गुरु, ऋषि किसे कहा जाय??? ये सभी अन्धकार को ही प्रकाश कहकर कुएँ के मेंढकों की उछल-कूद मचा रहे हैं।

3. Nīsän' नीसान/निशान

"Nī-sän' हिब्रू भाषा का शब्द है। इस्राइलियों अथवा यहूदियों के नव वर्ष के प्रथम महीने का नाम 'नीसान'[1] है। भारत में विक्रम संवत पंचांग के अनुसार वर्ष के प्रथम महीने का नाम चैत या चैत्र है। नीसान माह मार्च-अप्रैल में पड़ता है। भारत में चैत्र माह भी मार्च-अप्रैल में पड़ता है।

1. Old testament, Nehemiah . 2 : 1

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नीसान का अर्थ प्रारंभ (begining) है। इसका एक अन्य पुराना नाम Abib (आबीब)[1] है।

ओल्ड टेस्टामेंट (बाईबल) में आये नीसान से सम्बन्धित कथा का वर्णन महाभारत, आदिपर्व, अध्याय 63, में उसी रूप में मिलता है, जैसा वर्णन ओल्डटेस्टामेन्ट की पुस्तक निर्गमन (Exodus) के अध्याय 13 और 17 में आया है।

नीसान शब्द ओल्ड टेस्टामेंट के Nehemiah (नेहेमियाह/नेहेम्या) के अध्याय दो में आया है। इस अध्याय में नहेम्या द्वारा ध्वस्त इजराइल के पुननिर्माण का वर्णन है। यदि हम अंग्रेजी/हेब्रू शब्द Nehemiah नेहेमिया की भारतीय शैली में व्युत्पत्ति करेंगे तो यह नेहे (Nehe) + मइया (mia) = माँ के प्रति लगाव/प्यार अर्थ देता है। इसका भाव है मातृभूमि के प्रति प्यार/लगाव/मोह। नेह अथवा नेहे शब्द भारत की अधिकांश भाषाओं में बोला जाता है। बाईबल के 'नेहेमियाह' अर्थात् मइया (मातृभूमि) के प्रति नेह (लगाव, आकर्षण, प्रीति) को व्यक्तिवाची बना दिया गया है। शास्त्रों में सर्वत्र यही शैली अपनाई जाती है।

3.1 नीसान, निसान (Nisan) और निशान -

हिब्रू का उच्चारण नीसान किया जाता है। भारत में हम उसी को 'निशान' कहते हैं। हमें शब्दों की उच्चारण भिन्नता से यह भ्रम हो जाता है कि दोनों शब्द भिन्न-भिन्न हैं। भारत के निशान का अर्थ चिन्ह, पताका या झण्डा होता है। नववर्ष के नवरात्र के प्रथम दिन देव मंदिरों में निशान फहराया (लगाया) जाता है। यह निशान खम्भे के ऊपरी छोर पर बांधा जाता है। अथवा वृक्ष की शाखा पर ही बांध दिया जाता है। कुछ लोग इसे लिशान या लिसान भी कहते हैं। कुमाऊँनी में ये दोनों शब्द प्रचलित हैं।

यह बात अनेक बार, अनेकों प्रसंगों में बताई गई है कि शरीर ब्रह्माण्ड को आधार बनाकर शास्त्रों की व्याख्या की जाती है। यहाँ पर भी हम शरीर-यांत्रिकी के अनुरूप ही नीसान/निशान/लिसान की स्थिति का वर्णन करते हैं। शरीर यांत्रिकी (टेक्नी) को भीतर से तीन स्तरों पर बांटा जाता है। मूलाधार चक्र को पृथ्वी, नाभि से गले तक अन्तरिक्ष और सिर स्थान को द्यु अथवा स्वर्ग कहा जाता है।[1]

1. Old Testament, Exodus. 13 : 14
1. विस्तार के लिये देखें - वेद पुराण बाईबल, कुरान का रहस्यमय संसार - हरिदत्त शर्मा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

3.2 नीसान और विज्ञान

आधार चक्र (पृथ्वी) में जब फसल कट जाती है तो वहाँ बीज, फल या दानों के रूप में नहीं, वरन् रस रूप में होते हैं। शरीर में इसे पचन क्रिया कहा जाता है। जब रस पचने की सम्पूर्ण प्रक्रिया से गुजर कर शरीर के सर्वोच्च स्थान मुख में पहुंचते हैं तो इसी को नीसान/निशान/लिसान कहते हैं। इजराइली इसे मिश्र के राजा फराउन के अत्याचारों से मुक्ति और अपने नये राज्य की स्थापना के रूप में नीसान (प्रतीक/झण्डा) के रूप में लेते हैं तथा यहीं से नये वर्ष का आरंभ मानते हैं।

भारत में इस निशान (पताका, झण्डा) को राक्षसों पर देवों की विजय तथा रामराज्य के प्रारंभ के रूप में मनाते हैं। इसी को नव वर्ष का प्रारंभ भी कहते हैं। अतः नीसान और निशान (पताका) में कोई अन्तर नहीं है। सिखों का 'निशानसाहिब' भी इसके विज्ञान स्वरूप को प्रमाणित कर देता है।

लिसान इसलिये कहा जाता है कि यह लार रूप में होता है। मुख में स्थापित होकर यह शरीर के अंग प्रत्यंगों को भी लीस देता है अर्थात् वहाँ चिपक जाता है अथवा स्थापित हो जाता है। यह शरीर वृक्ष की शाखा होती है इस कारण इसे डण्डा (rod, लाठी) कहा जाता है। संस्कृत में लाठी को यष्टि कहते हैं, इसलिये वहाँ महाभारत (आ.प. अ. 63) में यष्टि को ही नीसान/निशान/चिन्ह/प्रतीक बना कर स्थापित करने की बात कही गयी है। भारत में देवोत्सवों के साथ जिस छड़ी अथवा छड़ी मुबारक को लिया जाता है वह नीसान, "Nī-sän', लीसान अथवा निशान ही है। केवल शब्दों में भिन्नता है। प्रत्यक्ष में यह बात प्रमाणित हो जाती है।

एक महत्वपूर्ण बात महाभारत के राजा उपरिचर की कथा में बताई गई है। इस यष्टि, छड़ी अथवा नीसान (या चिन्ह) को वैजयन्ती माला और इन्द्रमाला (आ. प. 63:15, 16) भी कहा गया है। संस्कृत में इसे यष्टि इसलिये कहा जाता है कि यह यष्टि (य + अष्टि) शरीर ब्रह्माण्ड में रसों के परिपक्व हो जाने से बनती है। य = यव (यवरस) + अष्टि = जिसमें प्रकृति के आठों गुण (गीता 7 : 4 की अष्टधा प्रकृति) समाए रहते हैं। ये आठ तत्त्व हैं पंच महाभूत, अहंकार मन और बुद्धि। इस तरह संस्कृत का 'यष्टि' (लाठी, डण्डा, छड़ी, बेंत) प्रकरण के अनुरूप अपने में समाये विज्ञान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वरूप का उद्घाटन कर देता है। ऐसी क्षमता किसी अन्य भाषा में नहीं है।

बाईबल में अपनी पहली संतान को ईश्वर को समर्पित किये जाने के सम्बन्ध में जब इस्राइलियों से उनके पुत्र इस प्रथा का अर्थ जानना चाहेंगे तो उन्हें इसका अर्थ बताने की बात कहते हुए कहा गया है-

"प्रभु बल प्रदर्शन द्वारा तुमको मिश्र से निकाल लाया था यह मानो तुम्हारे हाथों में एक चिन्ह और तुम्हारे मस्तक पर एक स्मारक होगा।[1]"

निर्गमन (Ex 13 : 9 और 13 : 16) के अर्थ को हम महाभारत के माध्यम से व्याख्यायित कर सकते हैं। ऊपर बताया गया है कि यष्टि प्रकृति के आठ तत्त्वों का योग है। हाथ क्रिया (कर्म) का संचालन करता है। पांच महाभूत, अहंकार और मन के संयोग से कर्म करने का मन उत्पन्न होता है। दो भौहों (आंखों) के मध्य में बुद्धि की ग्रन्थि होती है। यह प्रकाश और बुद्धि दोनों का प्रतिनिधित्व करती है। निर्गमन (Ex 13:9) - that the LORD's law may be in your mouth (जिससे यहोवा की व्यवस्था तुम्हारे मुँह पर रहे) की व्याख्या या अर्थ है कि जब शरीर के मूलाधार चक्र (पृथ्वी) से रसादि द्रव्य लार, सोम के रूप में सर्वोच्च स्थान मुख में आ जाते हैं तो हाथों में क्रिया शक्ति उत्पन्न हो जाती है, साथ ही चक्षुओं के माध्यम से प्रकृति की वस्तुएँ स्पष्ट दिखाई देती हैं यही आंखों के चिन्ह (sign) हैं। आंखों के बीच बुद्धि हाथों को प्रेरित कर अन्न को मुख में देते हैं जिससे शरीर-जगत में व्याप्त अव्यवस्था, व्यवस्था (law) में परिवर्तित हो जाती है। तात्पर्य है कि जिस प्रकार शरीर राज्य में अन्न (व्यवस्था) उत्पन्न करता है। उसी प्रकार लोक राज्यों में मानव की मूल भूत आवश्यकताओं की पूर्ति होने से ही law and order (शांति एवं व्यवस्था) स्थापित होती है।

आज के राज्य law, विधि, नियम, कानून को पुस्तकों में लिखे गये उन शब्दों को कहते हैं जिन्हें राज्य की स्वीकृति मिली होती है। ये कानून (law) नकारात्मक एवं शब्द मात्र होते हैं। इनसे जीवों की आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं होती है। यही कारण है कि विश्व में सर्वत्र अव्यवस्था, अन्याय और लूट-पाट अपने चरम पर है। लॉ के

---

1. "It shall be a sign on your hand as frontlets between your eyes, for by strength of hand the LORD brought us out of Egypt" Exodus (निर्गमन), 13:16 The Open Bible (the New Kings Jems Version)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रत्यक्ष स्वरूप लाव् (law) अर्थात् धान का लावा, फरूई आदि है जो अन्न ब्रह्म का प्रतीक है।[1] इसी आधार पर ऋग्वेद में कहा गया है ऋचा के शब्द रूप को पढ़ने से क्या लाभ है, इसके लिये शब्द के यथार्थ स्वरूप को परमव्योम में (या लोक में) देखना चाहिये तभी ऋचाओं का लाभ मिलता है (विस्तार आगे पृष्ठ 25 में दिया गया है)।

अब नीसान/निशान की विस्तृत व्याख्या न कर यहाँ पर महाभारत के उपरिचर वसु के चरित्र और तौरेत अथवा पंचग्रन्थ के निर्गमन (Exodus) के अध्याय 13 की तुलना करते हैं। आशा है कि लोग स्वयं ही इन दोनों कथाओं में समानता ढूंढ लेंगे।

महाभारत के उपरिचर वसु की कथा है-

वृत्रासुर का नाश करने वाले इन्द्र ने राजा (उपरिचर वसु) को बाँस की एक छड़ी (यष्टि) दी जो शिष्ट पुरुषों की रक्षा करने वाली थी (आदि पर्व 63:17)। तदन्तर एक वर्ष बीतने पर भूपाल वसु ने इन्द्र की पूजा के लिये उस छड़ी को भूमि में गाड़ दिया (आ.प. 63:18)। राजन् तब से लेकर आज तक श्रेष्ठ राजाओं द्वारा छड़ी धरती में गाड़ी जाती है। वसु ने जो प्रथा चला दी, वह अब तक चली आ रही है। (महाभा. आदि पर्व 63 : 19)।

दूसरे दिन अर्थात् नये संवत्सर के प्रथम दिन प्रतिपदा को वह छड़ी वहाँ से निकालकर बहुत ऊँचे स्थान पर रखी जाती है। फिर कपड़े की पेटी, चन्दन, माला और आभूषणों से उसको सजाया जाता है। तत्पश्चात् उस छड़ी पर देवेश्वर इन्द्र का हंस रूप से पूजन किया जाता है (आ. प. 63:20-21)। इन्द्र ने महात्मा वसु के प्रेमवश स्वयं हंस का रूप धारण कर वह पूजा ग्रहण की (आ. प. 63:22)। चेदिराज वसु इन्द्र के दिये हुए स्फटिक मणिमय विमानों में रहते हुए आकाश में ही निवास करते थे... सदा ऊपर ही ऊपर चलने के कारण उनका नाम 'राजा उपरिचर' के रूप में विख्यात हो गया (आ. प. 63: 33-34)।

अब बाईबल में वर्णित आबीब और नीसान (Nisan) का विवरण देते हैं -

ईश्वर का एक नाम सत् (I am who I am) है। मूसा उसी का दूत है (Ex

---

1. लॉ (law) की विस्तृत व्युत्पत्ति के लिये देखें - भारत के लोगों का संविधान और दर्पण, हरिदत्त शर्मा, पृष्ठ 181-186।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

3 : 14)। प्रभु ने मूसा को स्मरण दिलाया कि उसके हाथ में जो डण्डा (छड़ी) है, वह सांप और डण्डा दोनों बन जाता है (Ex. 4 : 2-4) । तातर्य है कि मूसा, डण्डा, साँप सभी सत् द्रव्य के ही रूप हैं। इसी बात को आगे कहा गया है - प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी मुझे सबके पहिले बच्चों को समर्पित कर देना। इस्राइली लोगों के सब पहिलौठे बच्चे, मनुष्यों के हों या पशुओं के मेरे ही है (Ex. 13 : 1-2)। यह कथन शरीर ब्रह्माण्ड की भीतरी क्रियाओं से समझा जाता है। वहाँ सत रस रूप पंचमहाभूतों को कहा जाता है, उन्हीं के आगे की गुणात्मक उत्पत्ति या वृद्धि को पुत्र कहा जाता है।

आबीब (Abib) के दिन तुम बाहर आये थे... प्रभु ने तुम्हारे पुरखों को देने के लिये बचन दिया था, उस देश में जहाँ दूध दही और मधु की नदियाँ बहती हैं। वहाँ तुम इस महिने में यह पर्व मनाओगे (Ex. 13, 4-5) ।

प्रभु बल प्रदर्शन द्वारा तुमको मिश्र निकाल लाया, मानों तुम्हारे हाथ में एक चिन्ह और तुम्हारी आंखों के बीच एक स्मारक होगा जिससे तुम निरन्तर प्रभु की चरचा करो। (Ex.13 : 9-10)। यहाँ पर आबीब (आ बहई बह) व्युत्पत्ति के अनुसार यह उस समय की स्थिति है जब अन्न पक कर कटता है और घरों की ओर समेटते जाते हैं। शरीर राज्य में यह स्थान मूलाधार मंडल कहा जाता है। आयुर्वेद में इसी को पचनक्रिया का प्रारंभ कहा जाता है। उपरिचर वसु की कथा में इसे चेदिदेश कहा गया है। यहीं से रस जब सबसे ऊँचे स्थान (मुख, द्यु स्वर्ग) में पहुँचते हैं तो उसी को बाईबल में प्रभु का वचन-इस्राइलियों को दूध, दही, मधु का प्रदेश देना कहा गया है। उपरिचर वसु प्रकरण में जहाँ हंस रूप में पूजा करना कहा गया है उसी को बाइबल Ex 16 : 13 में बटेर (Quails) कहा गया है। दोनों पक्षी हैं। इसका अर्थ पक्षियों की तरह नभ, जल, पृथ्वी के गुणें का शरीर में उत्पन्न होना होता है। हाथ, इन्द्र अर्थात् क्रिया शक्ति और बल का प्रतीक है तथा आंखों का मध्य, बुद्धि का प्रतीक है। निर्गमन (Exodus) (13:9) में इन्द्र के स्थान पर प्रभु का बल प्रदर्शन द्वारा मिश्र से इस्राइलियों को बाहर ले आना कहा गया है। इसके लिये प्राणायाम से उत्पन्न शरीर यांत्रिकी के स्वरूप को ध्यान में रखना होता है तभी हम शास्त्रों की बातों का सही एवं विज्ञान सम्मत अर्थ लगा पाते हैं।

आबीब अर्थात् फसल काटने के समय को ही इस्राइली प्राचीन काल में वर्ष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

का प्रारंभ मानते थे। जब यह सोम, दूध, दही के देश (मुखस्थान) में पहुँचता है तो वहाँ पर चैत्र-वैशाख की वसन्त ऋतु पूर्ण रूप में प्रकट होकर नवीन रूप में सृष्टि की रचना करती है। इसी स्थिति को इस्राइली नीसान (Nisan) अर्थात् नये वर्ष का प्रथम माह कहते हैं (नेहेमियाह 2 :1)। यहाँ पर राजा Arthaxerxs (Neh 2 :1) को नेहेमियाह के द्वारा अंगूरी (शराब, सोम) दी जाती है वही राजा उपरिचर की इन्द्र पूजा का रूप है। पूजा के भारतीय स्वरूप को लोक (परमव्योम) में देखें, इसे इन्द्र पूजा (उपरिचर वसु कथा) में भी देखें, यही बात में पूजा सामग्री के बारे में कही गयी हैं।

एक विशेष बात यहाँ पर स्पष्ट करनी आवश्यक है। अंग्रेजी Arthaxerxs को हिन्दी बाईबल में अर्तज़र्कसीस (अनुवादक-बाल्द-बुल्के) तथा बाईबल सोसाइटी, आफ इण्डिया, बंगलौर में अर्तक्षत्र अनुवाद किया गया है। इसी तरह (नेहेमियाह) को बादल-बुल्के ने हिन्दी में नहेम्या तथा बाईबल सोसइटी आफ इन्डिया ने नहेम्याह अनुवाद किया है। इससे ज्ञात होता है कि बाईबल ने विद्वानों को स्वयं अपने ग्रन्थ के स्वरूप का ज्ञान नहीं है।

जब Arthaxerxs की हम व्युत्पत्ति करते हैं तो यह अर + ताक्से (तागसे) + कसे = अर को तागना और कसना (नाथना) या व्यस्थित करना है। जब नयी सृष्टि प्रारंभ होती है तो शरीर राज्य में पुरानी सृष्टि जल प्रलय के कारण नष्ट हो कर अव्यवस्थित हो गयी होती है। इसी को पुनः व्यवस्थित करने, तागने, नाथने आदि क्रिया को ही व्यक्ति वाची बना कर उसे अर ताक्से रकसे नाम दे दिया गया है। 'अर' का अर्थ धुरा होता है जिस पर शरीर रथ चलता है। राजा इसलिये कहा गया है कि व्यवस्था का उत्तरदायित्व संभालने वालें को राजा कहा जाता है।

इसी तरह हम Nehemiah की व्युत्पत्ति करते हैं तो Nehe(नेहे) + miah (मइया) = मातृभूमि के प्रति लगाव (नेह) को ही नेहेमियाह या नेहे मईयाह अर्थात् माता या मातृभूमि के प्रति प्यार, लगाव के भाव को व्यक्त करने वाली यांत्रिकी को नेहेमइयाह कहा गया है। यह व्युत्पत्ति नेहेमियाह द्वारा इस्राइल के पुनर्निमाण के प्रति मोह (लगाव, नेह, अपनत्व) से प्रमाणित हो जाती है। भारत में इसे पितृ ऋण चुकाना कहा जाता है।

इस व्युत्पत्ति के द्वारा यह बात कही जा रही है कि बाईबल की व्याख्या

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महाभारत तथा भारतीय लोक भाषाओं के माध्यम से ही की जा सकती है। दूसरे शब्दों में कहा जा रहा है कि यूरोपीय भाषाओं का मूल (इब्रानी सहित) भारत में है।

इस प्रकरण में कुछ बातें अभी पूरी होनी हैं उन्हें भी स्पष्ट कर देना उचित है। उपरिचर वसु प्रकरण में कहा गया है कि छड़ी को दूसरे दिन बहुत ऊँचे स्थान में रखा गया (आ.प. 63: 20-21)। यही बात बाईबल में कही गई है (तब मूसा ने कहा) कल मैं हाथ में एक डण्डा (rod) लिये पहाड़ी की चोटी पर खड़ा रहूँगा (Ex. 17 :19)। 'तब मूसा ने एक वेदी बनाई और उसका नाम रखा प्रभु (LORD) ही मेरी पताका (banner) है'(Ex. 17:15)। इससे स्पष्ट है कि मूलाधार चक्र स्थित स्थूल द्रव्य से सूक्ष्म द्रव्यों (आत्माओं) का द्यु (स्वर्ग) में स्थापित हो जाना ही निशान, नीसान, पताका अथवा नये वर्ष के प्रारंभ का माह (समय) है।

भारत में नववर्ष के प्रारंभ में फसल काट कर नये अन्न से देवार्चन किया जाता है। यही बात बाईबल (Lev. 23 : 9-10) एवं Ex. 35 : 1 - 29) में पूजा सामग्री के सम्बन्ध में कही गयी है। हम लोक (परमव्योम -ऋ.वे. 1:64:39) में देखते हैं। नव वर्ष की पूजा में पताका, निसान, नीसान अथवा निशान नववर्ष के प्रतीक के रूप में फहराते हैं। इसके द्वारा यह सूचना दी जाती है कि आज से नववर्ष प्रारंभ हो गया है।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि इस्राइली 'नीसान' और भारत का निशान (पताका, झण्डा) एक ही हैं।

4. Much , More, Most का रहस्य

क्या आप जानते हैं?

विश्व के भाषा शास्त्री यह बात बता नहीं पाये हैं कि अंग्रेजी भाषा में Much (मच), More (मोर), Most (मोस्ट) के स्थान पर मच (Much) मच (Mucher) और मचेस्ट (Muchest) क्यों नहीं कहते हैं। प्रो० मैक्समूलर ने अपनी 'भाषा विज्ञान पुस्तक'[1] में इस तरह के प्रश्न उठाये हैं। वे तथा विश्व के अन्य भाषा विज्ञानी इसका समाधान नहीं पा सके।

4.1 एक महान खोज

अब सर्वप्रथम यहाँ पर कुमाऊँनी भाषा सहित भारत की अन्य भाषाओं

1. Lecturer on the Science of Language. (लेखन का भावार्थ लिया गया है -लेखक)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(लोक भाषा) एवं शास्त्रीय भाषा संस्कृत के गहन अध्ययन से अंग्रेजी much (मच) शब्द के तीनों रूपों के रहस्य को खोला जा रहा है। विश्व के सभी विद्वान अपने-अपने ज्ञान और पांडित्य के अहं से ऊपर उठ कर सुनें और शब्द-ब्रह्म के वैज्ञानिक स्वरूप पर मंथन करते हुए मनुष्य को (स्वयं के सहित) अन्धकार से प्रकाश की ओर लाने का प्रयास करने का प्रयत्न करें। यह इसलिये कहा जा रहा हैं क्योंकि हजारों वर्षों से धर्म ग्रन्थों में आये शब्दों की विवेचना (अर्थ) लौकिक पंडितों ने अपने-अपने हितों के अनुरूप कर रखी है। इस स्थिति ने विश्व को धर्मान्धता में ऐसा जकड़ रखा है कि चाहते हुए भी कोई इस अन्धकार से मुक्त नहीं हो पा रहा है। विज्ञान का भौतिक स्वरूप अकेले ही अन्धकार को दूर करने में समर्थ नहीं है। इस बात को विज्ञान की प्रगति और उसके विषैले प्रभाव ने प्रमाणित कर दिया है। इसकी घोषणा कर दी जाती है।

कुमाऊँनी सहित भारत की अनेक भाषाओं और संस्कृति में अधिकांश यूरोपीय भाषाओं के मूल शब्द विद्यमान हैं।

4.2 Much =मच/मुच

विश्व की सभी भाषाओं का आधार शरीर-ब्रह्माण्ड है। पौराणिक राजा युवनाश्व नंदन महाराज मान्धाता के पुत्र का नाम 'मुचुकुन्द' था।[1] इसे मुचकुन्द भी कहा जाता है। मुच् का अर्थ मुक्त होना, बहना या निकल भागना है (जैसे-कुमाउँनी में गोरु मुचि गो छ = गाय मुक्त हो गयी है)।

4.3 More (मोर)

अब हम शरीर के आधार चक्र की टेक्नालाजी पर ध्यान दें। वहाँ पर जिसे वेद और पुराण' 'हिरण्य अण्ड' कहते हैं वह उत्पन्न होता है। जब उसके दो खण्ड होते हैं तो उसी से रसों का प्रवाह होता है, वही मुच, मुचना (मुक्त होना, बहना, या बाहर आना) है। अब अंग्रेजी देखें – वहाँ much (मच) है। यथार्थ में इसका उच्चारण 'मुच' mu + ch (मु+च) है परन्तु इसका उच्चारण अंग्रेजी विद्वान 'मच' करते हैं, मूल उच्चारण 'मुच' है।

जब अण्ड में से द्रव मुच (बह) जाता है तो उसमें स्कन्दन (खमीर) उठता है, इससे रंग-बिरंगे स्फुलिंग बनते हैं, यही पंख कहे जाते हैं, यह गुण 'मोर' नामक पक्षी के हैं। स्कन्दन से द्रव में स्वतः गुण और मात्रा में पहले के मुक्त/मुचे द्रव्य में बढ़ाव आ जाता है, इसी को मोर या पहले से अधिक मात्रा या गुण वाला द्रव्य

1. श्रीमद्भागवत् दशम स्कन्ध, 51:14, 32 ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहा जाता है। अब 'मोर' का अर्थ अंग्रेजी में मूल द्रव्य की अपेक्षा और अधिक गुण और मात्रा ऐसा अर्थ ले लिया गया है। संस्कृत में इसे "मयूराण्ड न्याय" के रूप में जाना जाता है। तमिल, तेलगू में 'मुरुगन' इसी सत्ता का नाम है। मोर और मुर्गा (कुक्कुट ही कार्तिकेय के वाहन कहे गये हैं। इससे मच्/मुच (much) का अगला स्वरूप कैसे होता है? यह बात पुराण एवं वैज्ञानिक तत्वों से स्पष्ट हो जाती है। यह बात भी प्रमाणित हो जाती है कि भाषा जैविक विकास के आधार पर विकसित होती है।

पूर्व के अंग्रेजी आचार्यों ने रहस्यों को गुप्त रखा है। आज हम उसे खोल कर यह बताने की स्थिति में हैं कि अंग्रेजी का मच और मोर (more) कुमाऊँनी, हिन्दी एवं अन्य भारतीय लोक भाषाओं से विकसित हुए हैं।

"हिन्दी का 'मोर' और अंग्रेजी का more (मोर) एक ही शब्द है, परन्तु लोक प्रयोजन में इनके भिन्न-भिन्न अर्थ बना दिये गये हैं।.....हिन्दी मोर का अर्थ एक पक्षी विशेष है और अंग्रेजी 'मोर' का अर्थ अधिक (मात्रात्मक भाव) है।"[1]

अब स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय भाषाओं के मुच (मुक्त) या उत्पन्न द्रव्य को अंग्रेजी में भाववाची या विशेषण (तुलनात्मक भाव) के रूप में लिया है। इसी आधार पर प्राचीनों ने much के (उ/u) को अनुच्चरित रहने दिया है, जिससे भविष्य में इस शब्द और अंग्रेजी आदि यूरोपीय भाषाओं के मूल को जाना जा सके।

अंग्रेजी भाषा और अन्य यूरोपीय भाषाओं के मूल और उनसे किस प्रकार अर्थ प्रकट होता है, इसके अनुसंधान का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है, इसके लिये मैं उच्च सत्ता जो सर्वत्र व्याप्त है, को नमन करता हूँ उसी ने मुझे राह दिखाई है। विश्व के भाषाविदों और श्री अरविन्द की जिज्ञासा - कि भाषाशास्त्र का एक आधार होना चाहिये- उस आधार की खोज कर ली गई है। भाषा के आधार और प्रयोग एवं परीक्षण की यांत्रिकी हमारा अपना शरीर ब्रह्माण्ड है। आशा है कि अब इसी सूत्र को पकड़ कर भारतीय एवं विश्व के भाषाविद् शब्द ब्रह्म के माध्यम से हजारों वर्षों के अंधकार को प्रकाश में परिवर्तित करने में सक्षम होंगे। मेरा तात्पर्य

1. संस्कृत साहित्य में मारे के लिये 'मयूर' शब्द है। इसका प्रयोग 'मयूराण्ड न्याय' के रूप में प्रचलित है। जब मोर के अण्डे में रसों और ऊष्मा के सम्मिश्रण से 'स्कन्दन' (खमीर) होने लगता है तो इस स्थिति को अधिक कहते हैं। मूल शब्द 'मोर' (पक्षी) है अतः उसी 'मोर' के अण्डे को ध्यान में रख कर मोर में ही अण्डे को समाहित कर लिया गया है। अतः अंग्रेजी में more (मोर) का अर्थ 'अधिक' हो गया है।- 'भारत के लोगों का संविधान और दर्पण'-हरिदत्त शर्मा, राजनीतिक अकादमी, वाराणसी, सन् 2000, पृष्ठ 96.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है- प्राचीन ग्रन्थों की विज्ञान सम्मत व्याख्या कर हमें अपने पूर्वाग्रहों एवं अन्धविश्वासों (धार्मिक एवं परंपरागत) से बाहर ले जायेंगे।

Much और Good के तीन स्तरों का विकास किस प्रकार हुआ है, यूरोपीय भाषाविदों की जिज्ञासा का समाधान मैंने वर्षों पहले कर लिया था। सन् 2014 में much से सम्बन्धित सामग्री छपाने हेतु टाइप भी कर ली थी, परन्तु लेखन के प्रकरण (तारतम्य) से अलग होने के कारण उसे हटा दिया गया। अब सही प्रकरण के साथ इसे दिया जा रहा है। आगे good के तीनों रूपों का समाधान भी दे दिया गया है। भाषा विज्ञान के क्षेत्र में यह भी एक महान खोज है।

4.4 Most (मोस्ट)/म्वस्ट-

मच (much) का तीसरा रूप (form) मोस्ट (most) है।

यह शब्द बहुत रहस्यमय है, इसका उद्गम खोजना भी सहज नहीं है। इस शब्द की व्युत्पत्ति आदि ढूढ़ने में भी वर्षों लग गये। किताबें पढ़ने से इसकी उत्पत्ति और सम्पूर्ण विवरण की कथा विश्व के भाषा विज्ञानियों को अविश्वसनीय लग सकती है। मेरा अंतिम निष्कर्ष यही है। विद्वान इस शब्द most (मोस्ट) की जन्मपत्री खोजें तो उन्हें भी इस व्याख्या के अतिरिक्त अन्य कोई नई बात नहीं मिल सकती है।

कुमाऊँ में बाँस की चटाई बनती रही हैं। इन्हें मोस्ट, मोस्टा, म्वस्ट या म्वस्टा कहा जाता है, ये भिन्न-भिन्न लम्बाई चौड़ाई की होती है। अब इनका प्रचलन लगभग समाप्त हो गया है। ये चटाई (मोस्ट) बिछाने, अनाज सुखाने या छाजन (बारिष या धूप में) के काम में या छाया करने के काम में लाई जाती हैं। इनका इतिहास भी वेद-पुराणों के काल से चला आ रहा है।

मोस्ट्/मोस्ट/मोस्टा/म्वस्ट का यह भौतिक (लौकिक) विवरण है। अब हम शरीर ब्रह्माण्ड में 'मोस्ट' की स्थिति का विवरण देते हैं। भाषाविद्, विकासविद, टेक्नालाजिस्ट आदि लोग ध्यान से सुनने का मन बनाने का कष्ट करें तभी यहाँ पर कही गयी बातों को वे समझ सकेंगे।

मोस्ट्/मोस्ट/म्वस्ट बाँस का बनता है। निगाला (बाँस की एक जाति) से भी बनता है। बाँस के ही बर्तन भी बनते हैं– सूप, टोकरी, छलनी, दौरी, डलिया, पिटारा (बक्सा), कुरंग (अनाज रखने हेतु) आदि। वनस्पति जगत एवं लोक में प्रसिद्ध है बाँस एक ही बार उत्पन्न होता है।

पहले बताया गया है कि शरीर ब्रह्माण्ड में मोर (more) अर्थ द्रव (रस रूप/रसायन रूप) है। उसी में स्कन्दन होता है और उसके गुण और मात्रा में वृद्धि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होती जाती है। यह स्थित मुच/मच के बाद की है। भारतीय लोक भाषाओं के इसी मोर को अंग्रेजी में मुच (मच) का दूसरा स्तर (मच से अधिक) वाला अर्थ लिया है। स्कन्दन होने से ही मुचे (मुक्त/उत्पन्न) द्रव्य की मात्रा और गुणों में वृद्धि हो जाती है। प्रकृति में 'मोर' में सबसे अधिक यह गुण होता है। तात्पर्य है कि अंग्रेजी में 'मोर' को भाव वाची विशेषण, (adjecive) के रूप में लिया गया है।

तीसरी स्थिति शरीर में चटाई, अर्थात् चादर, बर्तन आदि बनाने से सम्बन्धित है। रक्त का सम्बन्ध इसी 'मोर' शब्द से है। प्राणायाम की सहायता से इस 'मोर' से पुन; रसों का उत्पादन होता है, जिसे हम लार, सोम, थूक कहते हैं। यह रस ही बाँस का रस या प्रतिनिधि है। बाँस में कैलशियम अधिक होता है। आयुर्वेद में इसे वंशलोचन कहा गया है। जब यह लार सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त हो जाता है, अर्थात् मोस्टा की तरह फैल (बिछ) जाता है तो एक निश्चित 'मान' (समय) पर इसमें नवीन सृष्टि करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है। यही बांस के मोस्ट/म्वस्ट/मोस्टा की सर्वोच्च स्थिति है। इसी मोस्ट के गुणात्मक स्वरूप को अंग्रेजी के विद्वानों ने मच (मुच) का तीसरा सर्वोच्च रूप कहा है। इसके बाद मोस्टा में कोई विकास नहीं होता है।

4.5 मोस्टमान देवता का मंदिर

इस कथन के ऐतिहासिक प्रमाण भी हैं। हमारा मूल स्थान लिऊनघर (चौमेल) है। बचपन में हम देखते थे प्रायः प्रत्येक घर में मोस्टा (बांस की चटाई) होती थी। लोग बताते थे कि मोस्टमान के मेले से ये मोस्टा लाये गये हैं।

मोस्टमान देवता का मंदिर पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड जिला में है। इसे मोस्टमानू देवता भी कहते हैं। उत्तराखण्ड में लिऊनघर ग्राम पहले चम्पावत तहसील जिला अल्मोड़ा और अब चम्पावत जिले में है। मोस्टमान मंदिर में साल में एक बार मेला लगता है। दूर-दूर से लोग वहाँ जाते हैं। लिऊनघर (चौमेल व चमलकोट स्थित ऐबटमाउन्ट) से पिथौरागढ़ स्थित मोस्टमानू/मोस्टमान और थल की पर्वतश्रेणी दिखाई देती है। पुनः भाषाविदों के लिये स्पष्ट किया जा रहा है– विकास क्रमानुसार लार ही मोस्ट (most) है। इसका प्रमुख स्थान मुख होता है। मुख में यही लार मोस्टा, बर्तन[1], चटाई, चादर बन जाती है। तभी इसमें अन्न-ग्रास रखा जाता है।

---

1. कुमाऊँनी खाद्य व्यंजन उतिल (util) - या उत्यौल खाने पर मुख में लार का रूप लेता है। यही लार यूरोप में बर्तन अर्थात् (utensile कही जाती है। - शब्द विज्ञान (विश्वभाषाओं की कुमाऊँनी आधारित व्युत्पत्ति), हरिदत्त शर्मा, पृष्ठ 3–9

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यदि यह चटाई, बर्तन न हो तो मुख में हम और भाषा विज्ञानी कोई वस्तु नहीं रख सकते हैं और न इस चटाई में बैठकर स्वर्ग (मुख) से गले रूपी आकाश से तैर कर पृथ्वी (पेट) में कोई वस्तु या मनुष्य (मन) आ सकता है। इसी मोस्टा/मोस्ट् (भौतिक रूप) में स्थित गुणों को अंग्रेजी भाषा में सर्वोच्च भाव की अभिव्यक्ति के रूप में ले लिया गया है। काशी में कबीर दास जिस चदरियों को बीनने की बात करते हैं वह यही लार है, इसी से सब कुछ निर्मित हो जाता है, यही 'एकोऽहम् बहुस्याम' है। महाभारत में इसी को द्रोण कहा गया है। बाईबल में इसे LORD (लार्ड/प्रभु) या Banner (पताका) कहा गया है (Ex. 17 : 15)।

इससे भी यह बात स्पष्ट/ प्रमाणित हो जाती है कि अंग्रेजी सहित यूरोपीय भाषाओं की व्युत्पत्ति और व्याख्या भारत की मूल भाषाओं के बिना नहीं की जा सकती है। दूसरे शब्दों में कहा जा रहा है कि कुमाऊँनी सहित भारत की अन्य भाषाओं के बिना हम अंग्रेजी भाषा और शब्दों की व्युत्पत्ति नहीं कर सकते हैं। अतः कुमाऊँनी, गढ़वाली तथा भारत की अन्य लोक भाषाओं को मिटा देने की भूल आधुनिक विकासवादियों को नहीं करनी चाहिये। इसके महत्त्व को समझें तथा सरकारों को इस प्रकार के अनुसंधानों को प्रोत्साहन देना चाहिये। इससे यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि हिमालय विश्व की भाषाओं का उत्पत्ति स्थल और संरक्षक है।

5. व्याडि

अब हमें मोस्ट/म्वस्ट (most) शब्द के भौतिक अर्थात् विज्ञान स्वरूप का ज्ञान हो गया है तो इससे हम अब अनेक शब्दों की व्युत्पत्ति कर सकते हैं। तथा उनके मूल स्वरूप को जान कर लोक हित में उनका प्रयोग कर सकते हैं। भाषा शास्त्र या विज्ञान का यही उद्देश्य है।

इस एक शब्द मोस्ट से अब हम कुछ अन्य शब्दों के रहस्य (अर्थ एवं भौतिक स्वरूप) का वर्णन करते हैं। 'एकहि साधे सब सधे सब साधे सब जाय' की उक्ति भी इससे स्वयं को प्रमाणित कर लेती है।

म्वस्ट या मोस्टा (अं. most) का निर्माण बांस से होता है। इसे विछावन या चटाई भी कहते हैं। मोस्ट, सूप, डलिया, कुरंग आदि का निर्माण करने वाले शिल्पी को कुमाऊँ में 'व्याड़ि' कहा जाता है।

शरीर ब्रह्माण्ड में चटाई, मोस्टा, चादर, धोती, साड़ी आदि की बिनाई इसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वंश (बांस) के द्रव रूप से होती है। यह कहा जा चुका है कि इस द्रव को लार, थूक, सोम – भी कहते हैं। तथा अन्य पदार्थों के साथ इस द्रव में कैलशियम (वंशलोचन) का आधिक्य होता है।

कुमाऊँनी का व्याड़ि ही वेद में व्याडि हो गया है। 'व्याडि' एक प्रसिद्ध वैयाकरण हैं। शरीर में भिन्न-भिन्न रसों के रासायनिक क्रिया से उत्पन्न शब्दों को जानने वाले व्यक्ति को 'व्याडि' कहते हैं। अथवा रसायनीकरण की क्रिया से लार निर्माण करने वाला भी व्याडि है।

अतः व्याडि शरीर में रसायन वेत्ता कहे जाते हैं, जब लोक शिक्षा के लिये रसायनों से उत्पन्न शब्दों के समीकरण स्पष्ट करते हैं तो यही रसायनवेत्ता व्याडि वैयाकरण (व्याकरणाचार्य) कहे जाते हैं। लोक में हम इन्हें 'व्याड़ि' कहते हैं। इससे स्पष्ट हो जाता हैं कि हमारे वैदिक विज्ञान की निरंतरता को हम कुमाऊँनी संस्कृति में स्पष्ट देख सकते हैं। अंधकार में पले-बढ़े विद्वानों के अहं द्वारा इस विज्ञान स्वरूप को न देखना ही ज्ञान कह दिया जाता है तो सामान्य व्यक्ति क्या कर सकता है? आज परिणाम हमारे समक्ष है।

इस प्रकार व्याडि या व्याड़ि एक रसायन विज्ञानी, शिल्पशास्त्री, टेक्नालाजिस्ट, भाषाविज्ञानी एवं व्याकरणाचार्य आदि सभी ज्ञानों का योग है। वर्तमान भाषा विज्ञानी केवल 'ध्वनि' के उच्चारण को ही भाषा विज्ञान कहते हैं। यही कारण है कि वे भाषा के रहस्य को खोल पाने में असमर्थ रहे हैं। वेद में शब्द को पकड़ कर उच्चारण (बार-बार दुहराते रहने से) किसी को कोई लाभ नहीं मिलता है। इसी बात को वेद में कहा गया है–

ऋचो अक्षरे परमेव्योमन् यस्मिन्देवा अधि विश्वेनिषेदुः।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते।।
– ऋ. वे. 1:164:39।।

ऋचा का भावार्थ है– अविनाशी जीवनदायी देवों से युक्त ऋचाएँ परमव्योम (प्रकृति प्रदत्त) आकाश में स्थित हैं। जो इस सत्य को नहीं जानता है वह (शब्द रूपी) ऋचाओं का उच्चारण करते रह कर कौन सा लाभ प्राप्त कर लेता है? इसका भाव है कि मूल द्रव्य प्रकृति में ही उत्पन्न होते हैं। वेद की ऋचाएँ तो शब्द मात्र हैं। विद्वानों को इन शब्दों के माध्यम से परमव्योम (शरीर ब्रह्माण्ड के बाहर का व्योम) में स्थित जीवनीय द्रव्यों को जान लेने पर ही वेदों की ऋचाओं के अध्ययन का लाभ मिलता है, अन्यथा नहीं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यहाँ पर इस ऋचा के अर्थ को "मोस्ट" या मोस्ट मान" शब्द के द्वारा समझ लिया जाना चाहिये यदि हम मोस्ट-मोस्ट शब्द लगातार कहते रहें और मोस्ट् किन द्रव्यों और टेक्नालाजी से बनता है इसे जानने का प्रयास न करें तो मोस्ट, चटाई, वस्त्र, बर्तन अथवा उपकरण के लाभ हम कैसे प्राप्त कर सकते हैं अर्थात् वेद कहता है, अदृश्य शब्द के स्वरूप (स्थूल रूप) को परमव्योम अर्थात् प्रकृति के व्यापक आकाश में देखो जैसे हमने 'मोस्ट' शब्द को जिह्वा से अलग कर उसके प्राकृत, भौतिक स्वरूप को लोक में प्रयुक्त मोस्ट /म्वस्ट (चटाई) और उसके उपयोग एवं लाभों का ज्ञान प्राप्त किया, उसके विज्ञान पक्ष को जान लिया। उसी प्रकार लोगों को वेद की ऋचाओं के शब्दों के ज्ञान-विज्ञान को व्यापक आकाश में ढूढ़ लेना चाहिए। यही शब्द ब्रह्म (वेद) के ज्ञान का उपयोग है। इसका अर्थ है लोगों को वैदिक टेक्नोलाजी और उद्देश्य को जान कर उसका उपयोग लोकहित में किया जाना ही वेद की ऋचाओं का लाभ है। अन्यथा रटन्त विद्या (ऋचाओं को बार-बार कहते रहना) किस काम की है। यहाँ पर शरीर के भीतर रहने वाले जीवों की सापेक्षता में स्वर्ग (द्यु/आकाश) से दिखाई देने वाला आकाश ही 'परम व्योम' है। अर्थात् शब्द, स्पर्श, तेज, रस और गंध को उत्पन्न करने वाले आकाश को परम व्योम कहा गया है। यहाँ पर दो व्योम जानने चाहिये एक शरीर ब्रह्माण्ड का व्योम है और दूसरा बाहरी प्राकृत ब्रह्माण्ड का 'परम व्योम'।

6. शय्या (Bed)

भाषा विज्ञानी संस्कृत शब्द शय्या का अर्थ शयन (सोने, लेटने, नींद लेने) के प्रयोग में आने वाले गद्दों, पलंग, चारपाई या तख्त करते हैं। ये लोग शय्या शब्द के वैज्ञानिक अर्थ को नहीं जानते हैं, यह बात पूर्व में (पृष्ठ 7) कही गई है।

ऐसी स्थिति में भाषा विज्ञान के आचार्य, प्रोफेसर, व्याकरणाचार्य, वेद, बाईबल, कुरान, आदि धर्म ग्रन्थों के गूढ़ अर्थ/व्याख्या को किस प्रकार जान सकते हैं।? ये लोग शब्द शय्या का अर्थ लोक में प्रयुक्त तख्त, चारपाई, गद्दे, के आधार पर अर्थ कर स्वयं को ग्रन्थों के आचार्य, व्याख्याकार, मर्मज्ञ, धर्मज्ञ आदि घोषित कर देते हैं। इनसे भी अधिक अज्ञानी वह विद्वत मंडल होता है जो इनके अज्ञान को ही ज्ञान समझ कर इनके लिये ताली बजा कर इन्हें धरती से आकाश में उठा लेता है। दोनों पक्षों के इस अन्धकार ने आज समाज को घोर अन्धकार में डाल दिया है। इन व्याख्याकारों ने ग्रन्थों के लौकिक अर्थ कर समाज में क्रूरता भर दी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है। इसी को वे 'धर्म' कहते हैं। ऐसे भाष्यकारों, व्याख्याकारों और व्याकरणाचार्यों, प्रोफेसरों, संतों को शास्त्रों में विज्ञान क्यों दिखाई नहीं देता है? इसलिये कि उन्हें ज्ञान और अज्ञान का भेद ज्ञात नहीं है।

अब हम वेद, पुराण, उपनिषद महाभारत तथा अन्य ग्रन्थों में 'शय्या' के विज्ञान पक्ष को बताते हैं। हिन्दी में शय्या को खाट्, चारपाई, तख्त तथा अंग्रेजी में Bed (बेड या ब्यड) कहते हैं।

6.1 शय्या का वैज्ञानिक और अध्यात्मिक स्वरूप

अब पहले कहे गये वचनों के अनुरूप यहाँ पर 'शय्या' शब्द के भौतिक और अध्यात्मिक दोनों अर्थों की व्याख्या करते हैं। इससे जिज्ञासुओं को स्वतः ही लौकिक और शास्त्रीय (वेद पुराण आदि) शब्दों के अर्थ में आकाश-पाताल का अन्तर स्पष्ट हो जायेगा। इस विवेचन से यह भी प्रमाणित हो जायेगा कि संस्कृतज्ञों ने शास्त्रीय ग्रन्थों में लोक भाषा के शब्दों का उपयोग किया है। यहाँ पर कुमाऊँनी भाषा के शब्द सय्य/शय्या/सई को उदाहरण के रूप में लिया गया है। भोजपुरी में इसे 'सया' कहा जाता है।

इस विवेचन से सम्पूर्ण विश्व को यह सन्देश भी जायेगा कि अभी तक जिस तरह विश्व भर का पांडित्य अपने-अपने ग्रन्थों का अर्थ करता रहा है, वह उनके अन्धकारावृत्त (मलिन) अहंकार, चित्त, मन और बुद्धि की उपज है। इस पद्धति के द्वारा सभी लोग अपने-अपने धर्म ग्रन्थों की व्याख्या (अर्थ) सैद्धान्तिक/वैज्ञानिक तथ्यों के अनुरूप कर सकते हैं। इससे विश्व एकता परस्पर सौहार्द, प्रेम एवं एक दूसरे की सहायता करने की भावना को बल मिलेगा तथा एक निश्चित व्यवस्था का पालन करते हुए सभी शांति एवं सुख पूर्वक इस पृथ्वी में रह सकते हैं।

हम सभी कामना तो अच्छे की करते हैं, परन्तु निकट भविष्य में हमारे स्वप्न पूरे होने वाले नहीं हैं, क्योंकि वर्तमान में आचार्य (इलीटस), प्रोफेसर, संत, धर्मज्ञ, वैज्ञानिक सभी घोर पाशविक ज्ञान से मोहित होकर पशु संसार अर्थात् प्राकृत अवस्था (State of Nature) के ज्ञान-विज्ञान के काल में चले गये हैं। अपने ज्ञान-विज्ञान के अहंकार में आज के 'इलीटस' मेरी इन शोधों को गंभीरता से नहीं लेंगे। ये दम्मी इन बातों को पढ़ना भी अपने उच्चस्तर से नीचे गिरना समझेंगे। पशुत्व को ही ये लोग सर्वोच्च स्तर समझ बैठे हैं। अतः निकट भविष्य में अध्यात्म और विज्ञान में समन्वय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होने के कोई लक्षण नहीं दिखाई देते हैं। हम सबके 'मन' मलिन हो चुके हैं।[1] उपनिषदों, गीता और पुराणों में 'मलिन मन' आदि के सम्बन्ध में विस्तार से कहा गया है। हम हैं कि अपनी विद्वत्ता के मलिन अहंकार को व्यवसाय बना कर स्वयं को महान बनाने की लालसा में विश्व को ठगने और नरक में रहने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं करते हैं। कम से कम अब हमें एक साथ मिल कर मानव की मानवीय आकांक्षाओं के अनुरूप शास्त्रों की व्याख्या करना सीख लेना चाहिये।

संस्कृत का 'शय्या' शब्द लोक से लिया गया है। इसका प्रमाण स्वयं हमारे प्राचीन व्याकरण के आचार्य पतंजलि दे देते हैं। महर्षि पतंजलि का कथन है कि हम शब्दों का चयन लोक भाषा (बोली, व्यवहार में बोली जाने वाली भाषा) से करते हैं। इन शब्दों का वैज्ञानिक अर्थ भाषा शास्त्री अथवा व्याकरण के आचार्यों द्वारा किया जाता है। आयुर्वेद में इन्हें 'रसशास्त्री' कहा जाता है। आज की वैज्ञानिक शब्दावली में इसे कैमिस्ट्री (Chemistry) या रसायन शास्त्र कहा जाता है। भौतिक शास्त्र और अन्य विज्ञान इसी के अंग मान लिये जाते हैं।

6.2 शय्या का भौतिक स्वरूप -

अधिक विवरण में न जाकर हम सीधे लोक प्रचलित शब्द सय्या/शय्या/सईया/सैया/सई/सय्य का ध्यान करते हैं। ये शब्द कुमाऊँनी एवं अन्य भाषाओं के शब्द हैं। इनका अर्थ एक ही है परन्तु उच्चारण भेद (बोलने के ढंग) से ये अलग-अलग दिखाई देते हैं। लोक भाषाओं में यह भिन्नता शब्दों का मानकीकरण नहीं होने के कारण ही शब्दों के उच्चारण में भिन्नता होती है। जब हम इनके भौतिक स्वरूप को देखते हैं तो हमें ज्ञान हो जाता है कि इन सभी शब्दों में एक ही सत्य है- एकं सत विप्रा बहुधा वदन्ति।

इस सईया या शय्या निर्माण या उत्पत्ति की टेक्नोलाजी को स्पष्ट करना उचित होगा। इससे प्राचीन काल से चली आ रही परंपरा-विज्ञान एवं अध्यात्म का विवेचन

---

1. विस्तार के लिये देखें - 'अध्यात्म और कलियुग' (हाई टेक्नॉलाजी), हरिदत्त शर्मा। हाई टेक्नालॉजी का अर्थ 'कलियुग' होता है और कलियुग में ही हाईटेक्नॉलाजी का विकास होता है। यहाँ पर कहे गये लक्षण कलियुग के ही हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भी साथ-साथ होता जायेगा। मलिन मन वाले विद्वानों को उद्वेग पर नियंत्रण कर सइया के रहस्य पूर्ण विज्ञान को प्रारम्भ से अन्त तक समझने का प्रयास करना होगा। इसी को शास्त्रों ने मन को एकाग्र करने का तप कहा है।

यदि विद्वान सोचेंगे कि मैं अमुक विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. प्राप्त, अमुक-अमुक पुरस्कारों से सुसज्जित, अमुक विश्वविद्यालय के अमुक विभाग/संकाय/संस्थान का प्रोफेसर या विभाग प्रमुख/संकाय प्रमुख (डीन)/डाइरेक्टर हूँ। मैंने अमरीका, ब्रिटेन या जर्मनी के अमुक-अमुक विश्वविद्यालयों में अनेकों रिसर्च कार्यों में सहयोग किया है तो ऐसे महा अहंकाराचार्य, प्रोफेसर या अध्येता कभी भी यहां पर दिये गये विवेचन को समझ नहीं सकते हैं। अतः निवेदन है कि अपनी प्रतिभा के अन्धकाराकृत ज्ञान को थोड़ी देर के लिये भुला कर वस्तु स्थित पर ही स्वयं को एकाग्र कर लेने के 'तप'/ ध्यान का अभ्यास करने कर कष्ट करेंगे। दूसरे शब्दों में कहा जा रहा है कि आधुनिक वैज्ञानिकों और आचार्यों को शब्द-ब्रह्म के माध्यम से भारतीय संस्कृति, विज्ञान और अध्यात्म का गहन अध्ययन यहीं पर दिखाई दे जायेगा, स्वयं को एकाग्र चित्त बना लें। उन्हें शब्द का लौकिक अर्थ और शास्त्रीय या अध्यात्मिक अर्थ में अन्तर एवं दोनों के प्रभाव का ज्ञान अवश्य हो जायेगा। इसके अनन्तर फिर भी यदि कोई "मुझसे बड़ा कौन?" की भावना से स्वयं को अलग कर लेने की 'चित्तवृत्ति निरोध विद्या' से अनभिज्ञ है तो उसे बृहस्पति भी ज्ञानी नहीं बना सकते हैं। यह कथन किसी की आलोचना नहीं है। यह विज्ञान, अध्यात्म और संस्कृति के रहस्यों को सीखने की पद्धति है। अपने-अपने व्यवहार से चाहे-अनचाहे अथवा देखा-देखी हम सभी किसी न किसी मात्रा में ऐसा ही करते हैं। हमें ऐसा व्यवहार किये जाने की अनुभूति भी नहीं हो पाती है इसलिए दिव्य दृष्टि प्राप्त करने के लिये सर्व प्रथम स्वयं का ही "संस्कार" (शुद्धिकरण) करना पड़ता है।

एक महत्वपूर्ण बात और है। किसी भी भाषा और उसके उच्चारण शैली का उपहास नहीं किया जाना चाहिये तथा उसे हेय दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिये। आयुर्वेद में चरक और सुश्रुत की शिक्षा हमें याद रखनी चाहिये। इन आचार्यो ने अपने शिष्यों से कहा तुम लोग विश्व भर में भ्रमण कर कोई एक चीज ले आओ जो औषधि के काम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नहीं आ सकती है। सभी शिष्य ऐसे द्रव्य को खोजने गये। जब सभी बताये गये समय पर लौट कर अपने आश्रम में आये तो सभी खाली हाथ थे। सभी शिष्यों ने कहा इस पृथ्वी पर हमें कोई भी ऐसी वस्तु नहीं मिली जो औषधि के काम में नहीं लायी जा सकती है। यही स्थिति शब्द या भाषा के सम्बन्ध में भी जाननी चाहिये। इसका तात्पर्य यह है कि किसी भी भाषा में कोई भी ऐसा शब्द नहीं होता है जिसका कोई अर्थ नहीं हो। यहां पर अर्थ का तात्पर्य द्रव्य विशेष (निरुक्त के अनुसार) से है। इसी भावना के साथ अब आगे लोक भाषा के शब्द सय्या, सई, शय्या का विवेचन करते हैं।

6.3 कुमाऊँनी में सय्य शय्य/सय्या -

यहाँ पर हम पूरी प्रक्रिया का वर्णन भी करेंगे। इससे इसकी सम्पूर्ण टेक्नालाजी या यांत्रिकी का ज्ञान भी हो जायेगा तब उस यांत्रिकी और प्रक्रिया की तुलनात्मक स्थापना शरीर ब्रह्माण्ड की टेक्नालाजी से करेंगे। 'यत् ब्रह्माण्डे तत् पिण्डे' का सिद्धान्त भी स्वतः प्रमाणित हो जायेगा तथा भौतिक और अध्यात्म के सूक्ष्म ज्ञान की जानकारी भी प्राप्त होती जायेगी।

खेत में गेहूँ और धान आदि बोते हैं। इसकी सम्पूर्ण यांत्रिकी और प्रक्रिया हम लोक में देख लेते हैं। जब गेहूँ की बालें परिपक्व हो जाती हैं तो उन्हें काटने के पहले खेत में जाकर देवता की पूजा की जाती है। खेत में ही चूल्हा बनाकर पूरी/पूड़ी बनाई जाती है। पूरी बनाकर कुछ आटा छोड़ दिया जाता है, उस आटे में गुड़ और पानी मिला कर पतला कर कड़ाही में बचे तेल या घी में डाल कर पतली लपसी का पाक बना लिया जाता है। इसी पतली लपसी को कुमाऊँ में सईया, सई या शय्या कहा जाता है। पूरी और सय्य/सइया/शय्या का भोग स्थानीय देवता को लगा कर। तब लोग उस पूरी/पूड़ी-सय्या को स्वयं ग्रहण करते हैं और पास-पड़ोस में भी बांटते हैं।

बाह्य ब्रह्माण्ड की यही प्रक्रिया शरीर के भीतर की टेक्नालाजी में स्थापित कर दोनों की तुलना करते हैं तो - रोटी खाना ही शरीर क्षेत्र (खेत) में गेहूँ बोना कहा जाता है। भोजन प्रणाली से एक निश्चित समय में जब यह गेहूँ पुष्टि कारक हो जाता है तो शरीर के मूलाधार चक्र (बड़ी आंत) में इसे काट लिया जाता है। यहाँ यह गेहूँ द्रव रूप में होता है। यह द्रव जब मुख में जाकर सोम या लार/थूक का रूप ग्रहण करता है तो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यही लौकिक सय्य/सय्या/शय्या का प्रतिनिधि या उसके गुणों को धारण करने के कारण शय्या कहा जाता है। इसका सामान्य नाम सोम, लार या लालारस है। परन्तु जब इसका प्रयोग शयन (सोना) के रूप में किया जाता है तो "गुण कर्म और विभाग" गीता 3 : 28; 4: 13 के आधार पर उसे शय्या (पलंग) कहा जाता है।

लोगों सहित विश्व के विद्वानों को आश्चर्य होगा कि शय्या (पलंग, चारपाई, खाट, तखत) से मुख के लार/थूक से की जाने वाली यह कैसी तुलना है? कहीं कोई लपसी, सय्या या पतले हलुआ में सोता है? ऐसा लोक में कहीं नहीं होता है। अतः यह कोरी कल्पना है। वेद के पंडित देखें वहाँ पर ऋषियों को कवि भी कहा गया है। कल्पना विहीन व्यक्ति कवि कैसे बन सकता है? इसे हम लोक में देख सकते हैं। ठीक यही बात शरीर ब्रह्माण्ड के भीतर के ऋषि और कवि इस भौतिक द्रव्य सय्या/शय्या (लपसी) को पलंग के रूप में देखते हैं। पुराणों में इसी शय्या को क्षीर (खीर) भी कहा है। ऋषि दुर्वासा ने कृष्ण से इसे खाने की इच्छा व्यक्त की थी।[1]

खीर खाते-खाते ऋषि ने कृष्ण से उस जूठी खीर को अपने शरीर में पोत लेने को कहा, कृष्ण ने ऐसा ही किया। शरीर ब्रह्माण्ड में इसी को कवच अथवा वज्र लेप कहते हैं। इस प्रकार शय्य, शय्या, सईया स्वयं को अनेक रूपों में परिवर्तित कर लेता है। धोती, साड़ी में भी यह स्वयं को परिवर्तित कर लेता है। यह भी एकोऊहम् बहुस्याम् है।

6.4 शय्य/शय्या /लार (लपसी) का अर्थ पलंग कैसे?

यह ऊपर स्पष्ट कर दिया गया है जिसे हम लोक-ब्रह्माण्ड में शय्या (bed) कहते हैं उसी का रूप शरीर ब्रह्माण्ड में लार/थूक कहा जाता है। शरीर क्षेत्र में लार ही गेहूँ की फसल से सय्य या शय्या का रूप ग्रहण कर लेती है। इस शय्या में सूक्ष्म जीवाणु सोते हैं, आराम करते हैं, इसी पर बैठते भी हैं। परम लोक से जो अतिथि/देवता (अन्न ब्रह्म) जब शरीर ब्रह्माण्ड के द्वार, मुख में प्रविष्ट होते हैं तो इसी शय्या (लपसी) में बैठते हैं, उस पर विश्राम करते हैं और सोते (शयन) करते हैं। इसी कारण कुमाऊँनी का शय्य/शय्या (लपसी) शब्द का अध्यात्मिक अर्थ शय्या (शयन करने का सामान,

---

1. यह लौकिक खीर (क्षीर) नहीं है, लार के श्वेत रंग और गुण के कारण उसे ही खीर कहा गया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपकरण) को गया है। इसी शय्य, शय्या को अपने चारों लपेट कर विष्णु (पोषक तत्त्व) का शयन होता है, विष्णु की इस शय्या को शेषनाग की शय्या कहा जाता है। यह बताया जा चुका है कि शरीर ब्रह्माण्ड में पालन-पोषण के बाद जो शेष तत्व बचता है, उसी को 'शेष' कहा गया है। 'नाग' का अर्थ है नागों (सृष्टि के मूल अण, नग) का द्रव (मालीक्यूल) स्वरुप है। पहले 'वेद पुराण बाईबल कुरान का रहस्य संसार' (पूर्वखण्ड) में बताया गया है कि सोम ही चन्द्रमा का स्वरूप भी है। यह सोम-लार द्रव-ब्रह्म (मालीक्यूलर) स्वरूप होता है। यह 'मॉलीक्यूलर' या मॉलीक्यूल वेदों-पुराणों में 'चन्द्रमौली' (शिवजी का एक नाम) है। वर्तमान मौलीक्यूलर बायोलाजी के रहस्यों को हम शिव के इस स्वरूप में अनुसंधान से ज्ञात कर सकते हैं।[1]

6.5 शय्या और Bed का एकं सत्

इसी शय्य या शय्या के भौतिक स्वरूप लपसी/लार/थूक/सोम से अंग्रेजी का Bed (बेड) शब्द व्युत्पन्न हुआ है। इस शय्य को देवता (अन्नब्रह्म) और जीव (सूक्ष्म जीवाणु), 'बेड़' (लपेट) लेते हैं। कुमाऊँनी, हिन्दी आदि अनेक भारतीय भाषाओं में 'बेड़' धातु से बेड़ना (लपेटना, घेरना) शब्द बनता है। लोक जगत में जब हम शयन करते हैं तो स्वयं के ऊपर चादर या कंबल ओढ़ कर पूरा लपेट या 'बेड़' लेते हैं और बेड़ (घर) में सुरक्षित होकर शयन करते रहते हैं। अतः अंग्रेजी का शब्द 'Bed' (बिस्तर, चौकी आदि) भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त बेड़/बेड़ने का रूप है। कुमाऊँ में अंजीर वर्ग के एक पेड़ को 'बेडू' कहते हैं। उसे बेडू इसलिए कहा कहते हैं क्योंकि उनके फलों में जीवाणु स्वयं 'बेड़े'/घेरे के भीतर ही उत्पन्न हो जाते हैं और सोते हैं। इससे स्पष्ट हो जाता है बेड़ धातु से व्युत्पन्न 'बेडू' (अंजीर, तिमल पीपल, बड़) का वैज्ञानिक स्वरूप व्याप्त एवं शाश्वत है। इसी बेड़ धातु (पदार्थ की एक मूल प्रवृत्ति) से बेल (लता) वृक्ष को बेड़ देती है, 'जहाजों का बेड़ा' बन जाता है। काशी में पान का बीड़ा बन जाता है। पकवानों में उदद की दाल की पिष्टी (पेस्ट) को आटे में बेड़ कर कुमाऊँ में बेडु पुआ (हिन्दी कचौड़ी) बन जाता है।

---

1. कुमाऊ में विना सींग (छोटी व लचीली सींग वाली गाय को 'मौलि गोरू' (गाय) कहते हैं। इससे हम मौलीक्यूलर विज्ञान के सम्पूर्ण विज्ञान को जान सकते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

7. साड़ी और धोती

महिलाओं का परिधान साड़ी भी इसी सइया या लार से व्युत्पन्न है। साड़ी का मूल रूप (धातु) सर/सार है। लार/सोम सम्पूर्ण पोषक तत्त्व का सार है। सार + ई = सारी > साड़ी। ई अन्न के सूक्ष्म तत्त्व को कहा जाता है। इसी सय्य /लार/सोम को धोते-धोते (धौति) से सफेद धोती (वस्त्र) बन जाती है। लार चावल (अन्न) का धोवन है जो शरीर में लार कहलाता है, अन्न ब्रह्म इसी को लपेट लेता है इसी धोवन के गाढ़े रूप से धोती बन जाती है। शरीर ब्रह्माण्ड में इसी धोती को पहन कर ब्राह्मण यज्ञ सम्पन्न करते हैं अतः यह लार, शय्य, शय्या अग्नि (ताप) को भी धारण करती है। जब ताप की बात आती है तो इसी को तवा कहा जाता है। कुमाऊँनी में 'से जा' का अर्थ सो जाना अथवा सो जाओ होता है। यहाँ 'से' (सोना) सई/सय्य = में जा = जाना अर्थ है। शरीर ब्रह्माण्ड में सय्य के पास जाना ही उसमें बैठना या सोना अर्थ भी होता है। इसी 'से' ज या जा से 'सेज' (पलंग), विस्तर अर्थ वाला शब्द भी बन जाता है।

जब सय (से) की प्रधानता हो जाती है तो इसी सय्या से कोतवाल वाले सैंय्या की उत्पत्ति हो जाती है। सेज का द्रव रूप लपसी है, वह सबको अपने में लपेट कर व्यवस्था बना लेती है। इसी कारण उसे नियंत्रक या कोतवाल नाम दिया गया है।

8. शंकर के डमरू का विज्ञान स्वरूप

पूर्व में शंकर के डमरू से शब्दों के चौदह सूत्रों (समूह) की उत्पत्ति होने की बात कही थी। अब उसके विज्ञान स्वरूप का यहाँ पर वर्णन किया जाता है।

यहाँ पर मैं भगवान शंकर को नमन करते हुए विश्व पांडित्य के समक्ष उस डमरू के स्वरूप का वर्णन करता हूँ, जिसको बजाने पर भाषा के चौदह सूत्रों की उत्पत्ति हुई थीं और अब भी होती है। ये शब्द अनादि काल से उत्पन्न होते आये हैं।

यदि आज का विज्ञान और पांडित्य इन शब्दों या सूत्रों के काल को खोज कर उसकी काल गणना करता है तो इसे दिशाहीन पांडित्य की संज्ञा ही दी जा सकती है।

जब शिशु उत्पन्न होता है तो भगवान रुद्र (या वायुदेव) उसके भीतर प्रवेश कर 'शं' ध्वनि के साथ शरीर ब्रह्माण्ड में नृत्य (गति देना, नाचना) के रूप में अवतार ले लेते हैं। इस नृत्य की प्रेरक क्रिया का नाम श्वास लेना और श्वास छोड़ना है। सांस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लेने और छोड़ने की लगातार क्रिया का सूक्ष्म ध्यान करें तो शरीर डमरू की तरह सांस लेता है, नृत्य करता है और बजता है, पुनः सांस छोड़ने पर बजता है अर्थात् शब्द उत्पन्न होते हैं। नाभि इसका केन्द्र है। नाभि स्थिति स्नायुतंत्र ही शिव (शंकर) के हाथ हैं, जिसके नृत्य (हाथ को दायें-बायें नचाना) से वायु की डोरी से बंधे (पांचों महाभूतों के) कंकडों से शरीर ब्रह्माण्ड का डमरू, शब्दों को प्रकट करता रहता है। इस क्रिया में सम्पूर्ण शरीर ब्रह्माण्ड डमरू की तरह ही दो भागों में बँट कर नृत्य (थिरकना) करता है। इसी को शंकर का नृत्य कहते हैं। वेद के कवियों (ऋषियों) की ऐसी ही कल्पना होती है। यही विज्ञान भी है नृत्य (थिरकन) क्रिया के बिना शब्द की उत्पत्ति कैसे हो सकती है? यहाँ पर यह ध्यान देना चाहिये कि नृत्य के अनेक रूप होते हैं।

अब प्रत्येक भाषा के पंडितों को यह कहना छोड़ देना चाहिये कि हमारे ऋषियों (मानव शरीरधारी पूर्वजों) ने ही भाषा का अविष्कार किया था। शंकर का यह डमरू शाश्वत, व्याप्त और सब प्राणियों का प्राण है। ऋषि रस स्वरूप होते हैं। "रसौ वै विष्णु" के अनुसार ही वेदों में शिव और विष्णु को भी 'ऋषि' कहा गया है।

9. बाण और Ban (बैन = रोक)

कुमाऊँनी भाषा में 'बाण' के दो अर्थ प्रचलित हैं। एक अर्थ 'तीर' 'बान' या 'रार' के अर्थ में प्रयुक्त होता है और दूसरा अर्थ बांटना, विभाजन करने, देने, संप्रसारित करने के अर्थ में प्रयुक्त होता है। एक शब्द के इतने अर्थ किस आधार पर हो जाते हैं? इस प्रश्न का उत्तर 'बाण' की व्याख्या से ही मिल जायेगा।

'बाण' जब लक्ष्य को तोड़ कर खण्ड-खण्ड कर देता है तो इसका अर्थ बांटना हो जाता है। बाण का ण जब 'न' बनकर बान हो जाता है तो वह बाण की गति या प्रवाह का अर्थ देता है। ये सभी अर्थ विज्ञान (ईश्वर) द्वारा निर्मित यांत्रिकी या टेक्नोलाजी से व्युत्पन्न हो जाते हैं। प्राणायाम इसकी चालक सत्ता कही जाती है। सांस लेते हैं - पूरक - उसे कुछ देर तक रोकें। इसे (कुंभक) कहते हैं। धनुष की डोरी (त्वचा -शरीर में व्याप्त लार) में तनाव आ जाता है अब रेचक क्रिया करें इससे वायु की वहन शक्ति के टकराव से मूलाधार चक्र पर तीव्र प्रहार होता है। तब जल रूपी बाण की धाराएं सम्पूर्ण आन्तरिक त्वचा का भेदन कर द्रव को सारे शरीर में फैला देती हैं। बाण से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यह क्रिया सम्पन्न होती है इसलिये बाण्/बाण का अर्थ बांटना, देना, फैलाना आदि हो जाता है। पुराणों में युद्ध काल में बाणों के प्रहार से शरीरों का दूर जा गिरना, अर्जुन के बाणों से जयद्रथ के सिर का बहुत दूर तक जाना और रक्त प्रवाह का फैल जाना बाण (=विभाजन, बांटना) ही है। एक पिण्ड को बाण् से टुकड़ों में विभाजित करना ही कुमाऊँनी बाण्, बाणना है। विश्व के भाषा विज्ञानी, वैज्ञानिक बतायें की 'बाण' की क्रिया से 'बाणने' का अर्थ क्यों नहीं हो सकता है?

कुमाऊँनी के इस बाण शब्द के उच्चारण और अर्थ इस प्रकार हें -बाण (=तीर), बाण (=देना, बांटना, विस्तार करना, फैलाना, पहुंचाना), बाणनु (=बांटने, देने की क्रिया)। बाण का व्यावहारिक रूप देखें बाण लिआ (=तीर ले आओ), बाण् दे (=बांट दो), गूड़ (गुड़) बाण्नु छ (= गुड़ बांटना है), एकले न खा, सबौ बाण् तब खा (=अकेले न खाओ सबको बांटो (दो) तब खाओ।

<u>अंग्रेजी का ban (बैन)</u> और देवनागरी के 'बाण' में उच्चारण के अतिरिक्त कोई भिन्नता नहीं है। देवनागरी को रोमनलिपि में लिखते हैं तो उसे ban ही लिखते हैं। इसे हम बान या बाण पढ़ते हैं परन्तु रोमन लिपि वाले इसे ऐ बना देते हैं। बैन उच्चारण से किस आधार पर रोकना, प्रतिवंधित करना या घेरना अर्थ व्युत्पन्न होता है इसे यूरोपीय अथवा भारतीय अंग्रेजी के विद्वान नहीं बता पाते हैं। हम इसकी ग्रन्थि खोल देते हैं।

महाभारत के युद्ध क्षेत्र में भीष्म, द्रोण, अर्जुन आदि योद्धाओं की बाण वर्षा से प्रतिपक्षी दलों के बढ़ाव को रोकने या प्रतिबंधित कर देने के अनेक प्रसंगों का वर्णन है। लोक में भी हम देखते हैं कि बाण वर्षा से विपक्षी की गति ban (बैन) = रोक दी जाती है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि मूल शब्द बाण है जो संज्ञा है। अंग्रेजी ban को भी कोषकारों ने संज्ञा बताया है। अंग्रेज विद्वानों ने सहजता से बाण (बान) का बैन बना कर इसे भारतीय भाषाओं से भिन्न रूप दे दिया है। परन्तु अब इसकी ग्रन्थि (tie) को खोल दिया गया है। चारपाई के 'बान' को भी इसी अर्थों में बान कहते हैं क्योंकि वह सोने वाले को पृथ्वी पर गिरने से रोकता है। इसी सिद्धान्त से भीष्म पितामह की शय्या को शर शय्या (बाण/बान/शर की चारपाई) कहा जाता है।

इस व्युत्पत्ति से यह बात प्रमाणित हो जाती है कि एक-सम्पूर्ण महाभारत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

व्युत्पत्ति शास्त्र ही है (आदिपर्व 62 : 40)। दो-जो महाभारत में है वही सर्वत्र है जो इसमें नहीं है वह अन्यत्र भी नहीं है (महाभारत महात्म्य)।

10. Many (मैनी) More (मोर) Most (मोस्ट)

पहले ऊपर मच, मोर, मोस्ट के विज्ञान स्वरूप का विवेचन कर दिया गया है। अंग्रेजी शब्द मैनी (many) = कई, अनेक,एक से अधिक अर्थ है। इसके भाववाची तीन रूपों में भी प्रथम रूप को छोड़कर शेष दो रूपों में मच (much) के ही अगले दो रूपों मोर और मोस्ट का प्रयोग किया गया है। ऐसा क्यों है? इसका उत्तर अंग्रेजी, हिन्दी अथवा संस्कृत के विद्वानों के पास भी नहीं है।

सम्पूर्ण विश्व का ज्ञान उन शब्दों पर निर्भर है जिनके आधार की कोई वैज्ञानिक जानकारी हमें नहीं है। यह बात वर्तमान अति बुद्धिवाद के जनकों और समर्थकों के लिये सच है। प्राचीन काल के विद्वान शब्द के आधार को जानते थे,इसलिये शास्त्रों के कथनों का 'साधु' अर्थ सहजता से स्वीकार कर लेते थे। अब यह स्थिति नहीं रह गयी है। जब तक शब्दों के आधार के विज्ञान को हम नहीं जान लेंगे तब तक विश्व की स्वयंभू बौद्धिकता एक दूसरे पर इसी तरह प्रहार करती रहेगी। कभी-कभी लगता है बन्दर को बया की सीख देने से क्या लाभ होगा? फिर एक प्रकाश अन्दर से आता है, प्रयास करते रहो, समय सबको इस ओर स्वयं प्रेरित करेगा। अतः आधार की व्याख्या कर देना चाहिये। भविष्य की प्रज्ञा के समक्ष थोड़ा सा भी आधार होगा तो वह उसी आधार को पकड़ कर सम्पूर्ण शब्दों के विज्ञान को सबके समक्ष प्रत्यक्ष कर देगी।

अतः many (मैनी) शब्द के विज्ञान स्वरूप की चर्चा करते हैं। अंग्रेजी शब्द भारत के किस शब्द का प्रतिनिधित्व करता है इसकी खोज सरल नहीं हैं। जो विद्वान दूसरे की खोजों (अनुसंधानों) को हल्के में लेकर इसकी हंसी उड़ाते हुए स्वयं के ज्ञान को पृथ्वी से भी भारी मान लेते हैं, उन्हीं की संगति से सम्पूर्ण विश्व का बौद्धिक जगत उन्मत्त और भ्रमित हो रहा है। आज का बौद्धिक वर्ग पशु -तर्कना से ही अपने दार्शनिक सिद्धान्तों का निरूपण करता है। इसी कारण आज का मानव मानवीय गुणों के च्युत हो गया है। ज्ञानी बुरा न मानें, बुद्धिमान स्वयं की बुद्धि को गति का कारण न मानें।

अब अंग्रेजी शब्द मैनी (many) के विज्ञान और उसकी भारतीय लोक भाषा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से उत्पत्ति होने के रहस्य को खोल दिया जाता है। भारत की प्रायः सभी लोक भाषाओं में 'माँड़' शब्द मिलता है। चावल से जब 'माँड़' निकलता है तो वह फैल कर अपने रूप को बढ़ा लेता है, इस प्रकार वह चावल के एक पिण्ड की अपेक्षा अनेक पिण्डों में लिपट कर अनेक या कई में विभाजित हो जाता है। देखने में भी चावल में एक ही तत्त्व (पृथ्वी) होती है, जबकि माँड़ में चावल (पृथ्वी), जल, अग्नि, वायु, आकाश के अनेक गुण मिल कर उसे अनेकों का योग बना देते हैं।

कुमाऊँनी, हिन्दी, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, राजस्थानी, गुजराती, गढ़वाली, हिमाचली, नेपाली, बंगला, आदि भाषाओं का 'माड़ी' (many) शब्द ही अंग्रेजी में मैनी (many) बन गया है। भारतीय शब्द 'मांड़ी' द्रव्य वाची है तो अंग्रेजी ने इसे भाववाची बना लिया है। विश्व के भाषा शास्त्री चुनौती देते हैं तो दें, विज्ञान के नियमों को वे कैसे उलट देंगे?

माड़ > मानी (अहंकार) >many यह माँड़ से मैनी बनने की वैज्ञानिक प्रक्रिया है। 'माड़ी' का 'मानी' इसलिये अर्थ हो जाता है क्योंकि उफनते माड़ में अपने मान (गुणों) का अभिमान आ जाता है। एक होने पर भी अनेकों (झाग, बुलबुलों) में विभक्त हो जाता है। अतः 'मा' के 'आ' को अनेक शाखा के 'ऐ' में बदल दिया है। एक के अनेक शाखाओं में विभक्त होने के कारण उसका अर्थ अनेक हो जाता है। फिर अहंकार के दस शिर (many) होते ही हैं। माँड़ बन जाता है तो उसमें भी स्कन्दन (खमीर, खट्टापन) आ जाता है। शरीर ब्रह्माण्ड में यह अनेकों रूपों में विभाजित भी हो जाता है, अनेकों गुणों से युक्त भी हो जाता है। Many (मैनी, माड़ी) के अगले दो रूप (form) more (मोर) और most (मोस्ट) की तरह ही हैं। इनके विज्ञान स्वरूप को मच, मोर, मोस्ट शीर्षक में देखें।

11. True (ट्रू) = सत्य = तरु/तरू

'भारत that is India' अथवा 'India that is भारत' के विद्वानों ने भारत के संविधान को अंग्रेजी भाषा में लिखा, छपाया और उसकी व्याख्या या अर्थ करने के लिये जजों वकीलों, विधिज्ञों, शासकों और प्रशासकों को थमा दिया। इन महानुभावों ने संविधान को पढ़ा हो ऐसा कहीं भी दिखाई नहीं देता है। पढ़कर उसे गुना (मनन) हो ऐसा भी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहीं से परिलक्षित नहीं होता है। संविधान के कोमा में चले जाने से यह प्रमाणित हो जाता है। भारत के इन महानुभावों ने संविधान को प्रथम पूज्य गणेश जी का स्थान देकर उसे 'ऊँ श्री संविधानाय नमः' 'ऊँ श्री कान्स्टीट्यूशनाय नमः' करने के अतिरिक्त कुछ नहीं किया है। राष्ट्र के लिये, व्यक्तियों (नागरिकों) के लिये कुछ अच्छा करते भी कैसे? इन्हें न तो अंग्रेजी शब्दों के मूल भाव ज्ञात थे और नहीं संस्कृत अथवा हिन्दी सहित अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों का ज्ञान था, आज भी इनके ज्ञान की वही स्थिति है।

स्वयं को विद्वान, दार्शनिक और अपनी महान परंपरा के गौरव को दर्शाने के लिये भारत के शासकों ने सारनाथ स्थित अशोक के धर्मचक्र में स्थित चार सिंहों की मूर्तियों को राजचिन्ह के रूप में स्वीकार किया। इसके नीचे देवनागरी लिपि में मुण्डक उपनिषद के वाक्य 'सत्यमेव जयते' को भी लिखा गया है।

26 जनवरी सन 1950 को संविधान लागू हुआ उसी के साथ भारत सरकार /राज्य का यह राज चिन्ह - भी अस्तित्व में आया। भारत की राजमुद्रा अशोक स्तम्भ के धर्मचक्र और चार सिंह भारतीयों को यह संदेश देने के लिये रखी गई थी कि भारत का संविधान मानव धर्म के शाश्वत मूल्यों के अनुरूप प्रत्येक नागरिक के योगक्षेम की तथा सत्य की सदा रक्षा करेगा आदि-आदि।

यहाँ पर शब्द व्युत्पत्ति प्रकरण है। उसी के अनुरूप भारत की राजकीय मुद्रा में अंकित 'सत्यमेव' में जुड़े 'सत्य' शब्द की व्युत्पत्ति या व्याख्या करते हैं।

सत्य को अंग्रेजी में ट्रू (True) कहते हैं, यह विशेषण है। इसका संज्ञा रूप Truth (ट्रूथ) है। अंग्रेज भारत में आये शासन कर चले गये। वे भी अंग्रेजी शब्द True (ट्रू) की खोज भारत में नहीं कर पाये। मैकाले-पुत्रों को सत्ता की लूट के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं दिखाई देता है। यहाँ पर सत्ता की लूट का अर्थ राज्य के प्रत्येक क्षेत्र को अपने अधीन कर लेने से है। शिक्षा, अर्थ, व्यापार, सरकारी विभाग, भूमि, रेल यातायात, बैंक आदि अनेकानेक क्षेत्र हैं। इसके विपरीत मैकाले के कटु आलोचक भारत की दुर्गति का घड़ा मैकाले और उसकी शिक्षा नीति के सिर पर फोड़ते हैं।

हम अपने भीतर के अंधकार को देखते नहीं हैं, दोष दूसरे को देते हैं। भारतीय ज्ञान शास्त्रियों की यह परंपरा बन गई है। हजारों वर्षों से हम शास्त्रों की गहन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बातें जान लेने का दावा करते रहे हैं। विगत तीन सौ वर्षों से हम अंग्रेजी भाषा के संपर्क में रहे हैं। तब भी हम 'सत्य' के स्वरूप को नहीं जान पाये हैं। भारत ही नहीं वरन सम्पूर्ण विश्व सत्य को जानने के लिये व्याकुल है।

उपनिषदों के अनुसार ऋषियों के पास सभी मनुष्य देव, दानव, मानव - सत्य को जानने के लिये जाते थे। उपनिषदों का देश होते हुए भी आज का भारत स्वयं सत्य (सत) को नहीं जान पा रहा है। जबकि 'सत्यमेव जयते' को जानने का दावा हमारी राज्य सत्ता करती है। हमारा पांडित्य इसकी बड़ी-बड़ी दार्शनिक व्याख्यायें करता है परन्तु ये शब्द आकाश में विलीन हो जाते हैं, धरती में अवतरित नहीं हो पाते हैं।

सत्य वह है जो प्राणी को जीवन देता है और जीवन को बनाये रखने के लिये उनका पालन पोषण करता रहता है। (ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् ....)

ब्रह्माण्ड में सत्य का यह रूप हमें कहाँ दिखाई देता है? भारत में, विश्व में भी सन्तों ने इस सत्य को देखा है। उन्होंने अनेक प्रकार के संकेतों में इस सत्य की विशद व्याख्या भी की है। हम हैं कि अपने ज्ञान का ढोल पीटते रहे हैं। इसका परिणाम हमारे समक्ष रोज-रोज की जघन्य, अमानवीय और कुत्सित घटनाओं के माध्यम से प्रकट हो रहा है।

महर्षि व्यास भाषा विज्ञान के प्रकाण्ड विद्वान थे। उन्होंने सम्पूर्ण महाभारत को निरुक्त शास्त्र कहा है यह बात पहले भी लिख चुके हैं। शब्द तो एक सा होता है उन्हीं को योजित कर व्यास श्लोकों का निर्माण करते रहे। लेखक गणेश जी को बनाया गया था। महर्षि व्यास शब्दों में भी ग्रन्थि (tie) इस प्रकार लगा देते थे कि गणेश जी को भी उनके अर्थ को समझने के लिये कुछ क्षण ठहरना पड़ता था। पुराण बताते हैं कि गणेश जी, गणों के पति होने के कारण गणपति कहे जाते हैं। यह शब्द स्वयं अनेकानेक ग्रन्थियों से ग्रन्थित होने के कारण इसकी सही व्युत्पत्ति करना कठिन है। यदि कठिन न होता तो अभी तक गणेश का रहस्य खुल गया होता।

गणेश हस्ति (हाथी) और मानव यांत्रिकी का योग है, परन्तु इनका वाहन मूषक है। यहाँ पर एक ही ग्रन्थि को खोला जाता है। गणपति अथवा गणेश का अर्थ अनेकानेक गणों (यांत्रिकी) का योग है। इस यांत्रिकी या टेक्नालॉजी का स्वरूप और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उसकी क्रिया शरीर ब्रह्माण्ड के भीतर से दिखाई देती है।

'लिपि' शब्द की उत्पत्ति लिप/लीप (लीपना) से हुई है। शरीर ब्रह्माण्ड में इसी तरह की लिपि बनती है। यूरोप और भारत के उच्च कुर्सीधारी विद्वानों ने कभी आंगन, पूजा स्थल, रसोई स्थल, चूल्हा लीपा नहीं है। उनके लिये ये कार्य हेय हैं, मर्यादा के विपरीत हैं। जब किसी कार्य के प्रति उनका भाव ऐसा हो तो उन्हें 'लिपि' शब्द की निरुक्ति कहाँ से प्राप्त होगी। प्राचीन भारत में चूल्हा, चौका, यज्ञ कुण्ड लीपने की एक पद्धति होती थी। लीपने से भूमि पर जो रेखाएँ खिंच जाती हैं। वही शब्द समूह या वाक्य का प्रतिनिधित्व करती हैं? गणेश जी का स्वरूप बहुत जटिल एवं विस्तार युक्त होता है यह गणों (अनेकानेक यन्त्रों) का संघ होने के कारण प्राणायाम के प्रश्वास से रसों की लिपाई करते रहते हैं। भिन्न-भिन्न गणों (इकाई गणों) को शब्द की तरंगें भिन्न-भिन्न रूप और त्वरा के साथ प्राप्त होती है। उसी त्वरा के आधार पर लीपने की रेखायें बन जाती हैं।

एक शब्द का उदाहरण देते हैं। व्यास जी ने ग्रन्थि लगा कर एक शब्द 'तरु' कहा। गणेश जी के गणों को स्वर तरंग की गति के अनुरूप किसी ने तरु सुना, जहाँ तरंग दैर्ध्य में कंपन अधिक होता है, उन्होंने उस 'तरु' को 'टू' बना लिया, जिन्होंने ध्वनि दैर्ध्य को सरलगति से सुना उन्होंने इसे 'तरु' ही रहने दिया। इस तरह एक ही शब्द के भिन्न-भिन्न रूप हो जाते हैं।

विद्वानों को यह ज्ञान होना चाहिये कि शरीर ब्रह्माण्ड के इस लेखन को ब्रह्मा का लेख अथवा ब्रह्मा द्वारा बनाई गई जन्म पत्री भी कहा जाता है। शब्दों के इस समुच्चय (रेखांकन) को आज की भाषा में रिकार्ड (ग्रामोफोन का) या टेप कहा जाता है। इस रिकार्ड या जन्म पत्री में अन्न रस जिस गति से चलते हैं उसी प्रकार के शब्दों का उत्सर्जन होता है और मानव काया में उसी के अनुरूप 'मन' की उत्पत्ति होती जाती है। हाथी के शरीर में रेखाओं का योग बाहर से ही दिखाई देता है, जिन्हें लोक में झुर्रियाँ कहते हैं। यही रेखाएं भीतर से लिपि कही जाती हैं। यही कारण है कि गणेश को ब्रह्मा ने महाभारत के लेखक के रूप में चुना था। वैज्ञानिकों को इसे कहानी मान कर इसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। इसमें सृष्टि उत्पत्ति के अनेकानेक रहस्य छिपे हैं। अतः हाथी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(हस्ति) के शरीर की संरचना और लेखन कला की उत्पत्ति का इतिहास इससे जाना जा सकता है।

अब हम 'तरु' का अर्थ और निरुक्ति करते हैं। 'तरु' शब्द संस्कृत, हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में मिलता है। इसका अर्थ वृक्ष है। अध्यात्म में वृक्ष का अर्थ सम्पूर्ण वनस्पति जगत से होता है। तर + उ = तरु। 'तर' का अर्थ तरल, जल अथवा तृप्ति दायक होता है। 'उ' का अर्थ ऊष्मा या पोषक तत्त्व होता है। इन दोनों शब्दों का योग कर देने पर इसका अर्थ होता है, जो प्राणी को तृप्ति देता है और उनका पोषण करता है वह 'तरु' या 'तरू' है। सम्पूर्ण पृथ्वी पर देख लें वनस्पति जगत ही प्राणियों की जीवनदाता है। जब हम वनस्पति के मूल को खोजते हैं तो हम करोड़ों वर्ष पूर्ण उत्पन्न शैवाल तक पहुँचते हैं। महाभारत हरिवंश पुराण के इन्हें हर्यश्व नाम दिया गया है।

हरि के वंश में ही 'राम' का अवतार हुआ है। 'राम' वह तत्त्व है जिसमें सभी जीव 'रम' जाते हैं। राम सूर्यवंशी हैं। वनस्पति जगत सूर्यवंश (सूर्यकिरणों) से पालित पोषित होता है, अतः 'तरू' ही राम का स्वरूप है। इस प्रकार राम और 'तरू' में कोई भेद नहीं है। यह 'तरू' अन्त में पंचतत्त्व में मिल जाता है। परन्तु इसका वंश चलता रहता है। इस प्रकार तरु (अन्न) ही ब्रह्म या राम का रूप हो जाता है। यही सत्य है। अंग्रेजी ट्रू (true) का अर्थ सत्य या सत है। राम नाम भी सत्य कहा गया है। इस प्रकार ट्रू और तरु/तरू दोनों का अर्थ सत्य होता है। अर्थात् वृक्ष, लता, अन्न, वनस्पति ही ट्रू, तरू या truth है।

कुमाऊँ में वनस्पति जगत के लिये डाल, ड़ालो (वृक्ष), बोट (पौधा), ब्वट, रुख (पेड़) तरुड़, तरु, दार, द्यार आदि शब्द प्रयुक्त होते हैं। तरुड़ एक बेल के रूप में उगता है। जड़ में कन्द होता है तथा बेल में फल लगते हैं। आयुर्वेद में अष्टवर्ग के भीतर इसकी गणना की गई है। बोट के तारतम्य में यह बात भी स्पष्ट कर दें कि कुमाऊँनी 'बोट' से ही अंग्रेजी का 'Botany' शब्द व्युत्पन्न है। इसी से अंग्रेजी का boat (बोट =नाव) व्युत्पन्न है। कुमाऊँनी बोट शब्द वनस्पति संसार का प्रतीक है, अथवा वनस्पति का एक नाम है। उसी को जानने के ज्ञान को अंग्रेजी में Botany (= बोटानी वनस्पति विज्ञान) का नाम दे दिया गया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंग्रेजी शब्द कोशों के अनुसार बोटेनी/बोटानी/बोटनी शब्द फ्रेंच botanique (बोटानिक) विशेषण तथा इसका संज्ञा रूप ग्रीक botanikos (बोटानिकोस) से लिया गया है। इन दोनों शब्दों का अर्थ वनस्पति है।

फ्रेंच botanique (बोटनिक) की कुमाऊँनी ढंग से व्युत्पत्ति करें तो हमें अनेक नये शब्दों का ज्ञान हो जाता है। bot (बोट) + niq (निक) + ue (उए) = बोट के अच्छे बढ़ाव के लिये खाद पानी देना या गुड़ाई करना। कुमाऊँनी में निक,निको, निक्को का अर्थ अच्छा भला, स्वस्थ, मिलनसार आदि होता है। रहीम ने भी अपनी हिन्दी कविताओं में 'जब नीके दिन आई हैं' में नीके का अर्थ अच्छे (शुभ दिन) किया है। बोटनीकुई का भावार्थ होता है बोट (वनस्पति) ही प्राणियों का मित्र या ईश्वर (पोषक) स्वरूप है। कोई पंडित यह बताये कि 'नीक' शब्द भारत से फ्रांस गया है या फ्रांस से भारत आया है मेरा कहना है कि यह शब्द भारत से ही यूरोप और फ्रांस गया है। इस शब्द का रहस्य काशी में ही खुला है, अतः इसका मूल जन्म स्थान भारत है।

यदि हम ग्रीक botaniqos (बोटानिकोस) की कुमाउंनी भाषा के अनुरूप व्युत्पत्ति करते हैं तो bota (बोट) + nikos (निकोछ) के अनुरूप इसका अर्थ होता है बोट (वनस्पति) ही सबकी प्रिय (निको+छ/स = निकोस) है। यही सत्य है। इस व्युत्पत्ति को तरु/True/Truth के तारतम्य में भी देखें।

विशेष - व्युत्पत्ति विज्ञान के अन्तर्गत मैंने शब्दों को अनेक ढंग से उच्चारण करने के लिये ही बोट/बोटा अथवा निक/निको/निक्को/निक्कोई/ nique या (निक्वे) लिखा है। विद्वानों सहित सामान्य व्यक्तियों को इससे भ्रमित नहीं होना चाहिये। इस तकनीक के द्वारा हमें एक शब्द (लिखित) के अनेक रूप मिल जाते हैं। जिन्हें हम लोक में सुनते हैं, बोलते हैं और उनका भाव (अर्थ) समझ जाते हैं। लिखित में इन शब्दों का केवल मानकीकरण कर देते हैं। इसका अर्थ होता है लिखने में हम शब्द के एक ही उच्चारण का मानवीकरण कर लेते हैं। जिससे सार्वभौम रूप से सभी इसे सहजता से बोल सकें और उसका अर्थ समझ सकें।

यह संक्षिप्त व्याख्या है। इसे किस प्रकार लोक और राज्यों में लगाया जाय कि सत्य से हमारा सदा साक्षात्कार होता रहे? सत्य का अनन्य भक्त घोषित कर देने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के बाद भी भारत के शासक सत्यमेव जयते के सत्य से परिचित नहीं है। यदि इन्हें सत्य का ज्ञान होता तो सत्य की पूजा करने वाले किसानों की दुर्गति न करते। वृक्षों (तरुओं/Truths) को मिटाकर उन ईंट पत्थरों के नीरस खम्भों वाले मकानों से शहरों और धरती को पाटते नहीं। सत्य (True) को न जानने के कारण शहरों को तरु (सत्य/Truth) विहीन बना कर हमारे विद्वान प्रोफेसर, इन्जीनियर, राजनेता एवं प्रशासक (जजों सहित) किस प्रकार के विकास को सत्य (true/truth) कह कर उसका महिमामंडन कर रहे हैं? क्या ये इलीटस यमराज के अग्रगामी गणों के रूप में विकास के नाम पर मृत्यु के पेड़ लगा रहे हैं?

दिल्ली इसका प्रमाण है। तरु /True/Truth/सत्य अथवा सूर्यवंशी राम के बिना दिल्ली एवं आस पास के क्षेत्रों के निवासियों को अपने प्राण बचाने कठिन हो रहे हैं। इसका निष्कर्ष है कि भारत सरकार उन अज्ञानियों की सरकार है जिन्हें 'सत्य' (Truth) का कोई ज्ञान नहीं है। सत्य की रक्षा का कोई उपाय राज्य नहीं कर रहा है। यही कारण है, कि बहु मंजिले भवनों के दुर्योधनों का बल, प्रबल हो कर सत्य को ढक दिया है। दुर्योधन वे हैं जो दुरभि संधि से सत्ता और धन संपत्ति प्राप्त कर लेते हैं। कोई भी आज के दुर्योधनों की दुरभि संधि को चुनाव काल में और सत्ता प्राप्ति के पश्चात् की जा रही लूट-पाट वाली दुरभिसंधियों के स्वरूपों में देख सकता है। अतः भारत सरकार को 'सत्यमेव जयते' के सत्य की रक्षा करनी ही चाहिये तभी 'परम व्योम' (ऋ. वें. 1: 164:39) के सत्य की रक्षा हो सकेगी।

आज के वेदाचार्यों एवं वैदिक अनुसंधान संस्थानों को उसी तरह दुर्योधनों के अर्थ चक्रव्यूह के अंग बन जाने की सुखानुभूति एवं गौरवानुभूति होती है जैसे महाभारत के वेदाचार्यों भीष्म, आचार्य द्रोण, कृपाचार्य एवं शल्य को तब के दुर्योधन के चक्रव्यूह के अंग बन जाने पर गौरवानुभूति होती थी। उसका परिणाम सबने महाभारत के रूप में देखा था। वेदाचार्य का अर्थ यहाँ पर ज्ञान और तकनीक के पुरोधाओं से है। क्या? अब भी हमारे आचार्यगण, प्रोफेसर- संगठन भारत को उसी महाभारत की ओर तो नहीं ले जा रहे हैं? इस पर हम सबको विचार करना चाहिए। शब्द की निरुक्ति का यही लाभ होता है कि शब्द क्या करने और क्या न करने की बात करता है उसे हमें जानना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चाहिये तथा उसी के अनुरूप व्यक्ति, समाज और राज्य के चलने से सबका हित होता है। निर्वचन पर पुस्तकों के अम्बार लगा देने का कोई लाभ नहीं होता है।

अंग्रेजी True (ट्रू) की व्युत्पत्ति संस्कृत हिन्दी, कुमाऊँनी के तरु की तरह है। Tr (तर) + Ue (उई/उए) अंग्रेजी का यह शब्द विशेषण (adjective) है। एडजक्टिव की व्युत्पत्ति है- ad (एड = अद्) + jecti (जग्ति = जगना, प्रकाशित होना, दिखना + ve (भ = भई/भऐ (होना)। इसका अर्थ है अद् अर्थात् द्रव्य विशेष की प्राप्ति का भाव जब किसी के मन में अथवा द्रव्य में उठता है, जगता है या प्रकाशित होता है वही एडजक्टिव (भ) कहा जाता है। इसी को सत या सत्य कहते हैं। यह अमूर्त रूप कहा जाता है।

जब 'तर उए' या 'तर उ' अर्थात् परिपक्व फल, पत्तियाँ, फली आदि जो प्राणी की तृषा (भूख, प्यास, थकान) को मिटाने के लिये स्थूल रूप में प्राणी को प्राप्त होती हैं तो उसी स्थूल रूप को, नाम या संज्ञा (तरू या Truth)कहते हैं।

यह स्थूल रूप है। प्राणी के मन में उत्पन्न भाव (इच्छा, मन) का भौतिक रूप में विकसित होने को अवतरित होना भी कहा जाता है। सभी तरु या अन्न (पोषक तत्त्व) तर, जल या रस रूप ग्रहण कर लेते हैं। जब वे धरती में सूर्य और अन्य तत्त्वों की रासायनिक अग्नि से उष्मित हो कर तर (तृप्तिदायक) हो जाते हैं। तो उन्हीं को तरु अथवा ट्रूथ (truth) कहा जाता है। अंग्रेजी का ट्रूथ, 'ट्रू' का ही स्थूल सत्य है, जिसे हम देख सकते हैं, छू सकते हैं, उसकी गंध को जान सकते हैं। Truth का th = थ - थापन, स्थापन या थापने का अर्थ देता है। थापने का तात्पर्य हम शरीर ब्रह्माण्ड और परम व्योम के सम्बन्धों के माध्यम से देख सकते हैं। परम व्योम में उत्पन्न 'तरु' के फल को मुख में थापित (रखते) जाते हैं तो वह पेट भर जाने पर शरीर ब्रह्माण्ड में अवतरित या th= थापित tru = Truth (ट्रूथ) 'तरु' कहा जाता है। इसी में शरीर के सभी जीव रम जाते हैं अतः इसी तरु को राम कहते हैं। वही 'सत्यमेव जयते' का सत्य है।

12. Calcium (कैलशियम) = काल शिऊँ = सोया हुआ काल

चूने को अंग्रेजी में कैलशियम कहते हैं। इसे एक 'तत्व' कहा जाता है। इस शब्द के स्थूल और अध्यात्मिक अर्थ को इस विवेचन में स्पष्ट देख सकते हैं। कुमाऊँनी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में सिऊँ और सिन, सोने (शयन) के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। बच्चा जब कभी माँ से सुलाने के लिए कहता है- 'इजा मी सेवाइ दे' और ऊं-ऊं के साथ रोने भी लगता है। माँ जब उसे सुलाने का प्रयास करती है तो वह नहीं सोता है ऐसे में यह क्रिया बार-बार उत्पन्न होने पर माँ कह देती है सिऊँ-सिऊँ (सोऊं-सोऊं) (कौंछ) कहता है पर "सिनै नै रयो" (पर सो नहीं रहा है) इससे स्पष्ट होता है 'सिऊं' शब्द का प्रयोग भी निद्रा या सोने के अर्थ में प्रयोग होता है। काल (Cal) शब्द का कुमाऊँ में भी संस्कृत /हिन्दी और अन्य भाषाओं की तरह मृत्यु और समय दोनों के लिए प्रयोग किया जाता है।

जब हम भाषाओं की तुलना करते हैं तो दोनों भाषाओं में दोनों शब्दों के उच्चारण और अर्थ में सम्यता देखने का प्रयास करते हैं। कुमाऊँनी में दो शब्दों के योग (कैल+शियम्) से बना अंग्रेजी का कैलशियम शब्द नहीं मिलता है। इससे हम यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि अंग्रेजी और कुमाऊँनी भाषाएं अलग-अलग हैं। आधुनिक भाषा विज्ञानियों का निष्कर्ष इसी प्रकार का होता है। कुमाऊँ में 'कैलबकरिया' एक देवता का नाम है। कैल भूरे रंग के लिए भी प्रयोग होता है। कैलशियम को चूना कहते हैं अतः कैलशियम और चूना एक ही द्रव्य के दो नाम हैं। अतः कैलशियम् कैल (रक्त के भूरे रंग, या काल) और शिऊँ (समाधिस्थ, स्थिर, भौतिकरूप) का अर्थ देने वाले कुमाऊँनी के दो शब्दों का योग है।

अब कैलशियम (Calcium) की अध्यात्मिक व्युत्पत्ति देखें - Cal कैल = काल + cium सिऊँ अर्थात् 'सोया हुआ काल' या 'समाधिस्थ काल' दूसरे शब्दों में चूना या कैलशियम काल (मृत्यु) का ही रूप है यह केवल भौतिक पदार्थ मात्र नहीं है, यह अर्थ कैसे निकलता है?

आप चूने (सोये हुए काल) में पानी मिला दें तत्काल क्रोध के साथ सोया हुआ काल जाग जाता है और पानी एवं पानी के स्रोत दोनों से भस्म कर देता है। लोक में बैठे या सोये क्रोधी हिंसक पशु या मनुष्य के लिए कहते हैं "तै बट/ तरफ कालो कुत्त से /सेई रौछ, तै जन उठाये" तहाँ पर काला कुत्ता हो रहा है उसको मत जगाना। इसका भावार्थ होता है, वहाँ पर काले कुत्ते के रूप में मानों काल ही सो रहा है उसे छेड़ना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मत अन्यथा वह लहू-लुहान कर देगा। इस तरह कुमाऊँनी में काल और उसके सोये शांत या समाधि रूप का उल्लेख हो जाता है। इसे हम काल का सिऊं (शिउ = शिव) अर्थ भी कर लेते हैं क्योंकि शिव का एक रूप (नाम) काल या महाकाल (उज्जैन में) भी है। अथवा काल का शिऊँ /शिव रूप (cium समाधिस्थ शिव) भी इसे कहते हैं।

मृत्यु और काल का अर्थ समय कैसे हो जाता है? कैलशियम (कालशिऊं) के उदाहरण से हम प्रत्यक्ष रूप में भौतिक और अध्यात्मिक जगत के अन्तर को समझ सकते हैं।

कैलशियम या चूना एक भौतिक तत्त्व या द्रव्य है। जब इसमें अन्य द्रव्यों से निर्मित जल का मिश्रण होता है तो परस्पर मिश्रण या टकराहट में कल-कल ध्वनि उत्पन्न होती है अन्त में यह विस्फोट से ऊष्मा, भाप और अग्नि का उत्सर्जन कर उस बाह्य द्रव्य को नष्ट कर देता है। यही मृत्यु या काल कहा जाता है। इस क्रिया में 'क' शब्द दीर्घ 'का' में परिवर्तित होकर शांत हो जाता है। शरीर ब्रह्माण्ड में एक निश्चित समय (अन्तराल) पर यह विस्फोट होता है। इसीलिये काल की सामान्य प्रविष्टि और विस्फोट के अन्तराल को भी 'काल' कहते हैं। तब इस अन्तराल को 'समय' कहा जाता है।

काल या महाकाल को शिव, ईश्वर या देवता कहा जाता है।इसके दोनों भौतिक और अध्यात्मिक स्वरूप और उनके प्रभाव को ऊपर बता दिया है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि एक ही तत्त्व (यहाँ पर कैलशियम/चूना) के दो रूप हैं एक स्थूल (भौतिक) और दूसरा निराकार (अभौतिक)। जब हम शिव (चूना पत्थर /या पत्थर) की ईश्वर रूप में पूजा करते हैं तो उसमें एक साथ दोनों रूपों की कल्पना कर उनका ध्यान करते हैं। कैल्शियम जैसा अन्य कोई भौतिक तत्त्व ब्रह्माण्ड में नहीं है। अतः वह स्वयं में सर्वोच्च, सर्व शक्तिमान और व्याप्त कहा जाता है। यही बात उससे उत्सर्जित अदृश्य तरंगों/ रश्मियों के सम्बन्ध में सही है। यही बात ब्रह्माण्ड में स्थित अन्य तत्त्वों (elements) के बारे में सही है। 'पुराणों' इन्हीं देव स्वरूपों के विज्ञान का वर्णन है।

यह एक उदाहरण है। इसी का एक अन्य अन्न रूप में लेते हैं, उसमें अन्य तत्त्वों के साथ उसमें कैलशियम भी होता है। इसके स्थूल रूप से ही सबकी भूख मिटती है। यदि इस अन्न के भौतिक रूप को कुछ ही व्यक्ति अपने पास जमा कर लेंगे तो अन्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोगों को ईश्वर (अन्न) के दर्शन (लाभ) कैसे मिलेंगे?

पुराण इस स्थिति को राक्षसों द्वारा देवताओं को अपनी अधीनता में ले लेना कहते हैं। इसका सार निकलता है- राज्य को ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि सभी मनुष्यों का देव शक्तियों (अन्न एवं अन्य पदार्थों) से साक्षात्कार होता रहे। यदि ऐसा नहीं होता है तो कोरी पूजा पाठ और ईश्वर-ईश्वर चिल्लाने से विश्व का कोई कल्याण नहीं होता है। इतिहास इसका प्रमाण है। अतः पूजा-पाठ अथवा मूर्तिपूजा का महत्त्व तभी है जब हम उसके विज्ञान स्वरूप और उसकी सर्वव्यापकता को समझें और तदनुरूप समाज और राज्य का संचालन करें।

इस विवेचना से स्पष्ट है कि सभी को ईश्वर दर्शन का समान अधिकार है। समाज में किसी को इसके दर्शन से वंचित नहीं किया जा सकता है। यहाँ पर 'दर्शन' का अर्थ है ईश्वर, अल्लाह या ईसा के भौतिक स्वरूप (मूल में God Particle या ब्रह्म के अन्य स्वरूप) और उसके अध्यात्मिक स्वरूप (निराकार) के साक्षात्कार (भौतिक स्वरूप के उपभोग से प्राप्त संतुष्टि, शांति, उत्साह, पोषण, बल की अनुभूति) का अधिकार प्रत्येक मनुष्य को है। इसकी सम्यक व्यवस्था करना राज्य का कर्तव्य या धर्म है।

12.1 काम देव का भस्म होना

भारतीय पुराणों में काम देव को भगवान शिव द्वारा भस्म कर दिये जाने की कथा प्रसिद्ध है। हम लोग अभी तक इसके विज्ञान पक्ष को खोल पाने में समर्थ नहीं हो सके हैं। कथा को पढ़ कर शिव की अलौकिक शक्तियों पर आश्चर्य तो करते हैं परन्तु अपनी जिज्ञासाओं का कोई समाधान नहीं ढूढ़ पाते हैं। सम्पूर्ण विश्व के लोग इस कथा के अलौकिक रहस्य को युगों-युगों से जानना चाहते हैं। यहाँ पर इस कथा में विज्ञान पक्ष का रहस्य खोला जाता है। सभी लोग एकाग्र होकर सुनें।

शरीर के मूलाधार चक्र के हिमालय क्षेत्र में, सती के यज्ञ कुण्ड में भस्म हो जाने के पश्चात् भगवान शिव समाधि लगा कर बैठ गये। इससे सृष्टि के नये कार्य रुक गये। तब सप्तर्षियों सहित ब्रह्मा और इन्द्र ने कामदेव को बुला कर उन्हें, शिव को काम में प्रवृत्त होने के लिये जगाने का प्रयास करने को कहा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कामदेव जानते थे कि भगवान शिव को जगाने से उनका क्रोध फूट पड़ेगा और उनका भस्म होना निश्चित है। फिर भी वे इन्द्र की आज्ञा मानते हुए अपने पुष्प बाणों को भगवान शिव पर छोड़ते रहे। इन पुष्प बाणों के कारण अन्त में शिव की समाधि टूट गयी और उनके क्रोध की दृष्टि पड़ते ही कामदेव भस्म हो गये।

12.2 कामदेव का विज्ञान पक्ष

यहाँ इन्द्र रक्त तंत्र है। रक्त तंत्र की इच्छाओं/आवश्यकताओं का प्रतिनिधित्व करने वाले मन को ही 'कामदेव' कहते हैं। प्राणायाम की पूरक क्रिया से रक्त में अग्नि तत्त्व में वृद्धि होकर वह पुष्पित (खिलना) हो जाता है। प्राणायाम का रेचक पक्ष ही 'कामदेव' के धनुष की डोर है तथा रक्त तंत्र में पुष्पित (खिला द्रव्य आक्सीकृत द्रव्य oxidised matter) ही कामदेव के पुष्प बाण हैं। बार-बार के इस पुष्प बाण से भगवान शिव की समाधि (सोया हुआ काल = काल शिउं या कैलशियम) रक्त तंत्र के बाण प्रहार (रस रसायनों के प्रहार) से क्रोध करते हुए, उफान मारते हुए जग जाते हैं। यह उफान (अग्नि) शिव का क्रोध कहा जाता है। रसायनिक क्रिया से जलने वाला स्थूल द्रव्य (उफान) ही कामदेव का भस्म होता शरीर है। जैसे चूने में पानी या कोई द्रव डालते हैं, वह अपनी स्थिर या समाधि अवस्था से जाग कर जल व द्रव्य को जला देता है। उसी प्रकार शरीर के भीतर भी द्रव के स्थूल रूप (रसायनों) को भस्म कर उसे केवल सूक्ष्म विद्युत तरंगों या विद्युत चुम्बक एवं अन्य अदृश्य रश्मियों में परिवर्तित कर देता है। कोई भी प्राणायाम की क्रिया से कामदेव के भस्म होने के विज्ञान को स्वयं के भीतर देख सकता है।

12.3 भाषा के तुलनात्मक अध्ययन का महत्त्व

1.अंग्रेजी भाषा के शब्द कैलशियम, कुमाऊँनी काल शिऊं/ सिऊँ (= शिव का समाधि रूप) तथा संस्कृत भाषा के शिव और काल तथा कुमाऊँनी कालसन और कैलबकरिया की तुलना करने से हमें हजारों वर्षों से चली आ रही शिव और कामदेव की कथा का साक्षात्कार हो सका है।

2.इस तुलना से शास्त्रों का यह कथन भी प्रमाणित हो गया है कि जो काल (कैल/मृत्यु) है वही शिव (सत्य और सुन्दर) भी है। इससे तैत्तरीय उपनिषद का यह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कथन भी प्रमाणित हो जाता हैं कि मैं अन्न हूँ जो मेरा भक्षण कर पुष्ट होता है अन्त में मैं उसे भी स्वयं में समा लेता हूँ अर्थात् उसका मैं स्वयं भक्षण कर लेता हूँ या मृत्यु के द्वारा मैं उसे स्वयं में मिला लेता हूँ ।

3. जो एक है वही अनेक रूपों में स्वयं को विभक्त कर लेता है तथा गुण, कर्म और विभाग के आधार पर उसी एक शब्द के अनेक अर्थ हो जाते हैं। Cal को हम 'चाल' भी कहते हैं। 'चाल' का अर्थ तरंग, गति, क्रिया, चलना है। इस अर्थ में चाल सिऊँ का अर्थ सोई (समाधिस्थ) तरंग, क्रिया या गति भी होता है। शेष विद्वान स्वयं जान लें।

4. स्थूल (भौतिक) और अभौतिक (सूक्ष्म/निराकार) एक ही तत्त्व के दो भिन्न-भिन्न रूप हैं।

5. एक ही तत्त्व के इन दोनों रूपों के योग से सृष्टि का निर्माण और विनाश होता रहता है। विश्व में कोई भी भाषा (शब्द) उपेक्षित नहीं है। उसका अपना महत्त्व है। भले ही हम इसे न समझें परन्तु उनकी उपेक्षा न करें। कभी न कभी वह अपने रहस्य को खोल कर विश्व के विद्वानों और अध्यात्म को जानने की लालसा लिये मनुष्यों को चमत्कृत कर देता है।

6. चूना या कैलशियम एक पत्थर है। तीव्र अग्नि में भस्म होकर वह काल (महादेव) स्वरूप ग्रहण कंर लेता है। इसके ध्यान से उत्सर्जित होने वाली सूक्ष्म रश्मियों को मानसिक रूप से धारण (ग्रहण) करने से प्राणी को अपार शांति प्राप्त होती है। यह निष्कर्ष भी इस विवेचन से निकलता है।

7. चूना/कैलशियम या अन्य किसी भी द्रव्य [मूल रूप में उसके सत्त्व (element)] से जो अदृश्य सूक्ष्म रश्मियाँ उत्सर्जित होती रहती हैं वह ब्रह्म स्वरूप हैं (god particles)। मन में उन्हें धारण करने की उत्कंठा होती है, तो वे मनुष्य के मानसिक आकर्षण (ध्यान) से मन में प्रविष्ट होती हैं अन्यथा ये ब्रह्म स्वरूप अण (परमाणु से भी सूक्ष्म) ब्रह्माण्ड में तैरते रहते हैं। इस आधार पर कहा गया है। मानो तो ईश्वर न मानो तो पत्थर।

यहाँ पर अन्य बहुत से लाभों की गिनती नहीं की जा रही है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

12.4 अशरीरी कामदेव का सृष्टि रचना में सहयोग

हम सभी, जब कामदेव की पौराणिक कथा पढ़ते हैं या पढ़ते थे तो इस कथा को जानने की, कामदेव के अदृश्य शरीर की एक झलक देख लेने की तीव्र उत्कंठा होती थी और होती है। यह एक अविश्वसनीय बात लगती है कि प्रत्येक व्यक्ति को और संसार को कामदेव अपने अदृश्य पुष्प बाणों (काम बाण) से वेध देता है। अब बहुत प्रयत्न करने और भाषाओं के तुलनात्मक ज्ञान से कामदेव के अदृश्य शरीर और उसके बाणों का ज्ञान हुआ है - लोभ, मोह, क्रोध, आलस्य, लालसा, इच्छा आदि ये सभी कामदेव के रूप हैं। जो काम देव वे पुष्प वाणों से उत्पन्न होते हैं।

इसे समझने के लिये मैंने दो भाषाओं के शब्दों को लिया है - संस्कृत सहित भारत की अनेकों भाषाओं में 'लोभ' शब्द तथा अंग्रेजी के love (लव = प्रेम, प्यार) शब्दों को लिया। इन्हीं दोनों की कुमाऊँनी भाषा के आधार पर विवेचना की तो कामदेव के अदृश्य शरीर और उसके बेधक पुष्प बाणों का विज्ञान स्पष्ट होता गया। अब यह निश्चित हो गया है कि हमारे भीतर जो भी लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध आदि हैं, वे सभी संसार की प्राकृत शक्तियों की क्रियाएँ हैं, आत्म तत्व इन सबसे भिन्न है, वही ब्रह्म है जो किसी की पकड़ में नहीं आता है। यदि कोई उसे जानना चाहता है तो उसे ब्रह्म स्वरूप ही बनना पड़ता है। तब सब कुछ ब्रह्म ही ब्रह्म है, द्वैत होता ही नहीं है।

12.5 कामदेव और लोभ(lov)-लव (love) का विज्ञान

हम लोग हजारों वर्षों से यह सुनते आये हैं कि लोभ-मोह के कारण मनुष्य पाप करता है समाज में अव्यवस्था होती है, इसलिये व्यक्तियों को लोभ-मोह पर नियंत्रण रखना चाहिये। तभी व्यक्ति और समाज सुखी रह सकता है। इसके (लोभ-मोह, काम, क्रोध) आदि के नियंत्रण हेतु ही मनीषियों ने यम नियमों को बनाया तथा ओल्डटेस्टामेंन्ट (बाईबल) में दस आदेशों को बनाया गया है।

सभी अध्यात्मवादी लोभ मोह की चर्चा अवश्य करते हैं। यह लोभ-मोह उत्पन्न कौन करता है? कहाँ से इसकी उत्पत्ति होती है? इसे कोई भी आचार्य स्पष्ट नहीं कर पाया है। परिणामतः व्यक्ति और समाज आज भी वैसी ही स्थिति में है, जैसा युगों पहले था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब लोभ और लव शब्दों के अर्थ और उनके प्रयोग का उदाहरण दिया जाता है- लोभ भारत की अनेक भाषाओं में प्रयुक्त होता है तथा लव (love) अंग्रेजी भाषा का शब्द है। भारत सहित विश्व के भाषाविद् इन दोनों शब्दों की तुलनात्मक विधा को देखते हुए स्वयं इस पद्धति से भषाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने की ओर प्रवृत्त हों तो निश्चयही उनको भाषा विज्ञान में नवीन रहस्य मिलते जायेंगे।

इस पद्धति में शब्द बनने की सम्पूर्ण पद्धति में अनेकों अर्थ तथा शब्द और उसके अर्थों का निश्चय करने के लिये ईश्वरीय प्रयोगशाला (शरीर यांत्रिकी) में हम स्वयं ही शब्द को परख लेते हैं।

अब कामदेव के विज्ञान स्वरूप का साक्षात्कार करते हैं -

"अंग्रेजी में love (लव) का अर्थ प्यार, प्रेम होता है। संस्कृत आदि भारतीय भाषाओं में 'लोभ' शब्द है। इसको अंग्रेजी में लिखेंगे तो यह lov (लोभ) या love (लोभे/लूभए) होता है। श्रुति के अनुरूप lo को हम लू भी उच्चारण कर सकते हैं। कुमाऊँनी में 'लू' का अर्थ लोहा तथा 'ल्वे' का अर्थ रक्त होता है। शरीर में रक्त लोहा युक्त होता है। जब इसमें शरीस्थ विद्युत प्रवाहित होती है तो स्वतः धनात्मक एवं ऋणात्मक चुम्बकीय ध्रुव बन जाते हैं। चुम्बक आकर्षण विकर्षण का प्राकृतिक साधन है। जब पुरुष-स्त्री परस्पर आकर्षित होते हैं तो उसे love (लव = प्यार) कहा जाता है। इसे लू भए (lo+ve) या लोभे भी कह सकते हैं। भारत में इसी को लोभ अर्थात् चाह या इच्छा कहा गया है। अंग्रेजी love में o का उच्चारण न करना बताता है कि यह शब्द भारत से लिया गया है।[1] क्रिया के स्तर पर दोनों स्थितियों में कोई अंतर नहीं है। इस प्रकार प्यार लोभ है और लोभ प्यार है। ऋषियों ने इसे सूक्ष्म दृष्टि से देखा और निष्कर्ष निकाला कि लोभ, प्यार, ईर्ष्या, द्वेष आदि प्रकृति की माया हैं यह यथार्थ नहीं है। वर्तमान में इन नियमों को भौतिक -रसायन विज्ञान के नियम कहते हैं। इस उदाहरण के द्वारा यहाँ पर यह कहा जा रहा है कि भौतिक नियमों द्वारा चालित व्यक्ति को जिस प्रकार नैतिक नियमों द्वारा संस्कारित कर द्विज (संस्कारवान) बनाया जाता है, उसी प्रकार

---

1. Lo (लू) शब्द कुमाऊँनी है इसका अर्थ लोहा है, यह रक्त में अधिक होता है, इसी से आकर्षण (बल) उत्पन्न होकर शरीर ब्रह्माण्ड में प्रकृति और पुरुष का मिलन होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राज्य के संदर्भ में भी उसे संस्कारवान बनाये जाने पर राज्य का स्वरूप द्विजात्मक (संस्कारित) हो जाता है। नैतिक बंधन के बिना राज्य प्राकृत/भौतिक नियमों से संचालित होता है, जिन्हें आवेग, संवेग आदि कहा जाता है। ऐसी स्थिति में विधि की व्याख्या प्राकृत या भौतिक नियमों के अनुरूप कर व्यक्ति, समाज और राज्य को अराजक स्थिति में डाल दिया जाता है। वर्तमान राज्य प्राकृत स्वरूप के ज्वलन्त प्रमाण हैं।"[1]

12.6 लोभ और लव की माया

"पुनः लोभ एवं लव पर आते हैं। इन दोनों शब्दों का सामान्य भाव किसी वस्तु या प्राणी को पाने या उसकी अभिलाषा का नाम है। शरीर यांत्रिकी में योग की क्रियाओं पर सूक्ष्म दृष्टि रखें। रक्त कणों में लौह तत्व होता है। रक्त भ्रमण से जब रक्त कणों में विद्युत चुम्बकीय बल उत्पन्न होता है तो उसी से निःश्वास (रेचक) की क्रिया संपन्न होती है। इसी स्थिति में प्रकृति और पुरुष (शास्त्रीय अर्थ में) का मिलन संपन्न हो जाता है। मिलन की यह आकांक्षा (आकर्षण बल) ही लोभ है। इसी को अंग्रेजी में लव love (प्रिय से मिलन) कहा गया है। पुनः कुछ ही क्षणों में जब रक्त कणों में विद्युत चुम्बकीय बल का क्षरण हो जाता है तो विकर्षण के कारण यह मिलन (लोभ या लव) भी समाप्त हो जाता है, इसी का नाम बिछोह है, यह क्रिया श्वास (पूरक) से संपन्न होती है। इन दोनों क्रियाओं का नाम योग है जो इन दोनों क्रियाओं को संपन्न करता है, जो इसे जानता है वह योगी है। इसी कारण शास्त्रों में योग और योगी का महत्व है। शास्त्रों का जो योगी है वही विज्ञान संपन्न चैतन्य यांत्रिकी है जो इस क्रिया को संपन्न करती है। अध्यात्म में इसी को योगी कहा गया है। जो प्राणों की क्रमबद्धता को जोड़ता (युज) है, वह योगी है।

"यहाँ पर वैज्ञानिक देखें कि किसी प्रकार शरीर यांत्रिकी के सभी कार्य, इच्छा और प्रवृत्तियाँ, विज्ञान (प्रकृति) की इसी क्रिया से उत्पन्न एवं सम्पन्न होती हैं तथा उनका तिरोधान (क्षरण, मृत्यु, नष्ट होना) होता है, शास्त्रों में इसका विशद वर्णन है। यह मिलन और बिछोह शरीर में एक चक्र के रूप में प्रतिक्षण होता रहता है। यह सब

---

1. हिन्द स्वराज के सौ वर्ष (एक वाद अध्ययन), हरिदत्त शर्मा, राजनीतिक अकादमी, वाराणसी, पृष्ठ 80 ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्षणिक या क्षरणशील है। इससे जीव की इच्छा कभी भी पूर्ण नहीं होती है। शरीर टेक्नालॉजी से उत्पन्न स्वयंभू लोभ और love की क्रियाओं को गीता (3 : 28) ने "गुणा गुणेषु वर्तन्ते इति मत्वा न सज्जते" अर्थात् गुण (द्रव्यों के आकर्षण-विकर्षण) स्वयं ही एक दूसरे से मिलते हैं और उनमें बिछोह होता है मैं (कृष्ण) उसका प्रत्यक्ष कर्ता नहीं हूँ। यही बात गीता (18:61) में कही गई है कि सभी प्राणी शरीर यांत्रिकी से उत्पन्न क्रियाओं के वशीभूत होकर ही भ्रमवश मान लेते हैं कि वे यह कार्य कर रहे हैं। यथार्थ में यांत्रिकी (विज्ञान) की क्रियाओं के वशीभूत होकर हम कर्म करने को बाध्य होते हैं। इसी को शास्त्रों में 'माया' कहा है। इस शाश्वत वैज्ञानिक क्रिया का निरीक्षण-परीक्षण करते रहें, हर क्षण लोभ एवं लव (मिलन) होता है और हर दूसरे क्षण विछोह का दुख सहना पड़ता है। विज्ञान द्वारा उत्पन्न यह मिलन एवं बिछोह की क्रिया शाश्वत न होकर क्षणिक है एवं मरणशील है। मन का इसके पीछे भागते रहना ही माया है और माया ही विज्ञान है। दोनों में कोई अन्तर नहीं है, केवल शब्दों में भिन्नता है। इसी को गीता (7:14) में कहा गया है "मम माया दुरत्यया" मेरी माया अर्थात् विज्ञान से पार पाना बहुत कठिन है।"[1]

श्वास-प्रश्वास की क्रिया से उत्पन्न अदृश्य विद्युत चुम्बकीय बल (आकर्षण-विकर्षण) एवं अदृश्य गुरुत्वाकर्षण (लोभ या लव का आकर्षण बल) ही अशरीरी कामदेव है। इसी को निराकार या अदृश्य कामदेव भी कहते हैं।

कुमाऊँनी, हिन्दी, नेपाली, गढ़वाली संस्कृत तथा भारत की अन्य भाषाओं में 'लोभ' शब्द प्रचलित है। इसको रोमनलिपि में (लोभ/लोभे) उच्चारण करते हैं। अंग्रेजी लव (love) के शब्द भी वही है जो लोभ के हैं। केवल o (ओ) का उच्चारण अंग्रेजी में नहीं किया गया है। यह स्थिति स्वयं कह देती है कि अंग्रेजी और यूरोपीय भाषाओं का मूल भारतीय भाषाओं में है। दूसरे शब्दों में यूरोपीय भाषाओं का मूल भारत है। अथवा सभी भाषाओं का एक ही केन्द्र शरीर-ब्रह्माण्ड है।

---

1. अध्यात्म विज्ञान राजयोग = स्वराज, हरिदत्त शर्मा, राजनीतिक अकादमी, वाराणसी, पृष्ठ 35-36 से उद्धृत।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

13. Action (क्रिया)/आग्शन/आग्सन

अंग्रेजी भाषा में भारतीय 'अ' शब्द प्रायः ए या ऐ बना लिये गये हैं। अपवाद भी हैं परन्तु बहुत कम। यह इसलिये कि जिससे लगे कि अंग्रेजी भाषा का मूल भारतीय लोक भाषाओं से भिन्न है। भाषा शास्त्रियों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया है उदाहरण के लिये अंग्रेजी का action (ऐक्शन) शब्द कुमाऊँनी या हिन्दी आग्सन है। आक् या अक् + सन/शन ही action है। आक में अग्नि (जलन) होती है। शरीर के अन्य द्रव्यों के साथ संयोग होने पर सन/शन शब्द उत्पन्न होने लगता है यही ऐक्शन/आक्सन या आग् (अग्नि) की क्रिया कही जाती है। आग् = अग्नि + सन या शन का अर्थ सनना/मिलाना/सनसनाहट है। यहाँ पर हम लौकिक अर्थ के आधार पर आग्सन /ऐक्शन की व्याख्या नहीं कर रहे हैं। शरीर के भीतर दो द्रव्यों की ऊर्जा (अग्नि) के मिलने से रासायनिक क्रिया को आग्शन कहा जाता रहा है। जैसे सोडा (क्षार) और नींबू (अम्ल) को मिलाते हैं तो यह दोनों द्रव्य परस्पर की अग्नि से एक दूसरे से सनते (मिलना, गतिशील होना, सानना) जाते हैं। अथवा उबलते हैं यही ऐक्शन की वैज्ञानिक व्युत्पत्ति या व्याख्या है। इन दो द्रव्यों की क्रिया (अग्सन) से शरीर में भी रसों या रक्त में गमन की क्रिया (अग्सन/ऐक्शन) का प्रारंभ हो जाता है। आग् / अग् लोक में अग्नि के लिये बोले जाते है।

ब्राह्मण ग्रन्थों (शतपथ ब्राह्मण, ताण्ड्य ब्राह्मण) में इसी विधि के शब्दों की व्युत्पत्ति या व्याख्या की गई है। यदि हम इस विधि से भाषाओं के शब्दों का तुलनात्मक विश्लेषण या अध्ययन नहीं करेंगे तो आगे भी विद्वता के छद्म प्रकाश युग में जीने के लिये बाध्य होंगे।

Action (ऐक्शन) का पूरा उच्चारण आग् ताइ ओं (कु0 उच्चारण) = तवा या कढ़ाई (ताई) गर्म होने से उत्पन्न शन-शन (क्रिया) से भी व्युत्पन्न हो जाता है। अंग्रेजी के विद्वानों ने tion का उच्चारण ताईओं (ओंन) क्यों नहीं किया है? इसे कोई भी भाषाविद् बताने की स्थिति में नहीं है।

शन, शान, सन, सान = संनना या सानना (मिश्रित होना, मिलना) का अर्थ और प्रत्यक्ष क्रिया का वर्णन ऊपर कर दिया है। ताईओं या ओंन उच्चारण से क्रिया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के उपकरण (यांत्रिकी) में परिवर्तन आ जाता है। सन और ताई का अर्थ (निष्कर्ष) एक सा आता है, इस कारण अंग्रेजी में ताई/ताईओं का अर्थ शन/सन कर दिया गया है। पूर्वाचार्यों को ज्ञात रहा होगा कि एक दिन अवश्य ऐसा आयेगा जब कोई न कोई action (एक्शन) के tion (सन्) उच्चारण रहस्य को खोल देगा तब अंग्रेजी की आधार भाषा का रहस्य भी विश्व के समक्ष प्रकट हो जायेगा।

कुमाऊँनी में कढ़ाई के लिये ताई, तै या कढ़ै शब्दों का प्रयोग भी होता है। विवाह के पूर्व एक संस्कार होता है जिसे "तै या ताइ लगूनु (लगाना)" कहा जाता है। इसे स्वाल पथाई (बनाना) भी कहा जाता है। यह पूरी बनाने की ही एक प्रक्रिया है। जब ताई (कढ़ाई) को अग्नि में रखकर गर्म किया जाता है तो घी या तेल में एक निश्चित सीमा में गर्म हो जाने को "ताई अै गैछ" (= पकाने के लिये आवश्यक ताप आ गया है) कहा जाता है। तवा के संदर्भ में तौ अै गौछ (तौ = ताप, ताव अर्थात् रोटी बनाने के लिये उचित ताप आ गया है।) कहा जाता है। इसी सम्पूर्ण क्रिया से कढ़ाई के तेल में डाले गये आटे में ऊष्मा सनती (मिलती) जाती है। इसी को ताई सनौ (छनौ) को शन अर्थात् पूरी/पूड़ी में अग्नि का सनना (मिलना, सन-सन या सन सनाहट) कहा गया है। इसी सन-सन को कुछ लोग छन-छन कहते हैं। इसी क्रिया को अक्शन action या अग् छन कहा गया है। तेल या घी में पूड़ी छनने पर छन-छन और सन-सन/शन-शन दोनों शब्द निकलते हैं। इनमें से किसी एक शब्द को मानक के रूप में रूढ़ बना लिया जाता है जिससे लोक में शब्द का अर्थ निश्चित हो जाता है। इससे भ्रम की स्थिति नहीं रहती है।

इस वर्णन का मन्तव्य है कि जो लोग (धर्म ग्रन्थों के पंडित) कहते हैं यह ईश्वर की भाषा है वे देखें और समझें कि शब्द किस प्रकार बनते हैं। वह कौन सा ईश्वर है,जो शब्द बोलता है? उन शब्दों का स्रोत क्या है?

13.1 ईश्वर या देवों की भाषा (Divine Language)

ऊपर कहे गये अक्/ऐक्+शन और अग् /अक् + छन पर ध्यान दें। यही सन-सन या छन-छन ईश्वरीय भाषा,अल्लाह की भाषा अथवा Divine Language (परमेश्वर की दिव्य भाषा) कही जाती है। अण, ब्रह्माणु (God Particles), परमाणु,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ईश्वर के ही स्वरूप हैं दूसरे शब्दों में यही सूक्ष्म अण (God Particles) स्वयं ईश्वर (God) हैं। हम इन्हें भिन्न-भिन्न नाम से पुकारते हैं। परन्तु सब में एक ही ब्रह्म सत्ता भिन्न-भिन्न स्वरूपों में स्थित है। इसका अर्थ या व्याख्या हम परमाणुओं के भिन्न-भिन्न स्वरूपों के द्वारा कर सकते हैं। मूल (द्रव्य या सत्ता) एक है। जब वह एक से अधिक रूपों में स्वयं को व्यक्त करने की इच्छा करता है। तो स्वयं को एक परमाणु के भीतर इलेक्ट्रान और प्रोटॉन में विभाजित कर लेता है। पुनः परमाणु के गुणों में भिन्नता उत्पन्न करनी होती है तो उनमें गुण कर्म और विभाग (मात्रा) में भी विभेद कर देता है। तब एक ही सत्ता को हम भिन्न-भिन नामों से जानते हैं। जिन्हें हम element (तत्त्व) और उनके इकाई स्वरूप को परमाणु (atom) कहते हैं।

यह विवरण बाहरी ब्रह्माण्ड (लोक) से सम्बन्धित है। अब इसी की अध्यात्म अर्थात् शरीर ब्रह्माण्ड में तुलना कर शब्दों की उत्पत्ति और उनके निश्चित अर्थों को ज्ञात कर लेते हैं। बाहरी ब्रह्माण्ड विशाल है यहाँ पर टेक्नालॉजी अर्थात् कड़ाही, तवा, तौलि आदि असीमित मात्रा में मिलते हैं। साथ ही यहाँ पर हमें असीमित क्रिया दिखाई देती है। प्रत्येक क्रिया से हमें ध्वनि का निर्धारण करने में कठिनाई होती है क्योंकि यहाँ विराट् यांत्रिकी होती है। इसके विपरीत मानव शरीर में सम्पूर्ण बाह्य ब्रह्माण्ड समाया हुआ है। दूसरे शब्दों में मानव शरीर की टेक्नालॉजी स्वयं में पूर्ण है। क्योंकि यह ईश्वर (या परम सत्ता) द्वारा निर्मित या विकसित यांत्रिकी है। अतः इसमें हजारों प्रकार की ध्वनियाँ प्रति ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं। उन शब्दों (तरंगों) से हजारों क्रियायें एक साथ सम्पन्न होती हैं। इसी से मानव शरीर को प्राचीन मनीषियों ने प्रयोगशाला की तरह प्रयोग किया है। क्योंकि एक सीमित क्षेत्र से हमें सम्पूर्ण टेक्नालॉजी एवं शब्दों का निश्चित अर्थ ज्ञात हो जाता है।

यहाँ पर यह विवरण इसलिये दिया जा रहा क्योंकि ता = ताप + ई = द्रव्य विशेष के सनने (मिश्रण) से ही क्रिया उत्पन्न होती है। यहाँ रसायनों की क्रिया से उत्पन्न ताप (ऊष्मा) को ही अग्नि कहा जाता है। यदि विद्वान भाषाविद् निरुक्त की व्युत्पत्तियों जैसे दघ्नं दहनं (दध्यते) अर्थात् अग्नि के दहन (ताप) से दधि की उत्पत्ति होती है की, हंसी कर स्वयं के अन्धकार को प्रकाश बताते रहेंगे, तो हम वेदों के रहस्यमय ज्ञान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को खोल नहीं पायेंगे। जिन विद्वानों को दूध में ऊष्मा उत्पन्न होने पर ही दही जमने के विज्ञान का ज्ञान नहीं होता है, वे इसी तरह निरुक्त की निरुक्ति के विज्ञान स्वरूप को देखते हैं। दही जमाने वाले सूक्ष्म जीवाणु (bacteria) पहले ताप उत्पन्न करते हैं तभी दूध की दही जमती है। पुनः वह दही द्रव रूप में परिवर्तन हो जाती है।

पुनः नया अर्थ देखें - कुमाऊँनी का ताई ओंन (tion) (=ऊष्मा का होना/आना) क्यों अंग्रेजी में शन/सन में परिवर्तित हो जाता है? यथार्थ में जब हम पूरी पकने की प्रक्रिया को ध्यान से देखें तो अग्निसे संयुक्त तौ/ताई में पूरी छन-छन करते हुए तेल में तैरने लगती है। कुमाऊँनी, बांगला, गुजराती, राजस्थानी, नेपाली आदि भाषाओं में इसी प्रक्रिया से छ, छे, छै का अर्थ प्रक्रिया की पूर्णता होना अर्थ किया जाता है। हिन्दी में भिन्न यांत्रिकी से उत्पन्न 'है' शब्द से क्रिया का पूर्ण होना सम्पन्न होता है इस यांत्रिकी में जल के किनारे लहरों के छलकने से 'है' या 'सै' शब्द उत्पन्न होता है। इसी आधार पर हिन्दी में 'है' का अर्थ प्रक्रिया पूरी होने का अर्थ लगाया जाता है। हरयाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 'है' के स्थान पर 'सै' को प्रक्रिया पूर्ण होने के अर्थ में बोला जाता है। क्योंकि लहरें सै-सै या है-है शब्द करते हुए पुनः लौटती हैं, यही क्रिया की पूर्णता है। इसी सिद्धान्त के आधार पर निरुक्त में कहा गया है-

एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति अर्थात् सत्य एक है परन्तु विप्र (अग्नि तरंगें) भिन्न-भिन्न शब्द (ध्वनि) बोलते हैं। अतः 'सत' (सत्य) शब्द में नहीं वरन् उसके जन्मदाता द्रव्य और क्रिया में है।

पूरी पकाने की यांत्रिकी में पूरी भी छन-छन करते हुए तेल/घी में छन कर ऊपर आ जाती है और छनने की प्रक्रिया पूर्ण हो जाती है। इसी आधार पर छन् (tion/शन्, छ, छै, छयो का अर्थ क्रिया होना या पूर्ण हो जाना लगता है।

अंग्रेजी में छन का छ श/स में परिवर्तित कर लिया गया है। संस्कृत श्लोकों में हमें छ का श में परिवर्तित होना मिल जाता है।

इतनी विवेचना का निष्कर्ष है कि अंग्रेजी का मूल भारतीय भाषायें हैं। इसी आधार पर मैंने शब्द विज्ञान (विश्व भाषाओं की कुमाऊँनी आधारित व्युत्पत्ति) पुस्तक में अंग्रेजी tion (शन) को छ या छन में अनुवादित किया है जैसे action का अग् छन/

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अक् छन।

अंग्रेजी शब्द कैलशियम एक तत्त्व है। यह भौतिक एवं रसायन शास्त्रियों द्वारा खोजे गये तत्त्वों में से एक है। इसका प्रभाव और क्रिया आज भी वैसी ही है जैसे इसकी उत्पत्ति के समय थी इसी कारण सृष्टि रचना से सम्बन्धित पौराणिक विज्ञान में पुराण को "पुरा नवं भवति" कहा गया है। यही पुराण की परिभाषा है। इसका अर्थ है जो अण (परमाणु) प्राचीन अनिश्चित काल में उत्पन्न हुए हैं वे आज भी नये हैं। उन्हीं से आज भी प्राचीन काल की सृष्टि नवीन रूप में बनती रहती है।[1] इससे स्पष्ट हो जाता है कि सृष्टि रचना के यही सब तत्त्व (elements) देवता, (ब्रह्मा आदि) कहे गये हैं।

कुमाऊँ में काल शिऊँ/काल शिवं को काल्सन और कैलबकरिया देवताओं के नाम से पूजते हैं। मूल तत्त्व 'ब्रह्म' ही स्वयं को गुण कर्म विभाग के आधार पर परमाणु (पुराण) में विभक्त कर लेता है। यही देवता कहे जाते हैं। इन्हीं की वाणी को देव वाणी कहा जाता है।

सार संक्षेप

इस पुस्तक के सम्पूर्ण विवेचन को एक साथ पढ़ें तो यही निष्कर्ष निकलता है कि देव, देवता, ईश्वर, God, अल्लाह आदि सभी का मूल 'ब्रह्म' है। 'ब्रह्म' वह सत्ता है जो सर्वत्र व्याप्त है। इलेक्ट्रान, क्वार्क, फोटान (प्रकाश कण), आयन, परमाणु ये सभी का ब्रह्म के स्थूल रूप हैं। इसी स्थूल रूप को अग्नि या ब्रह्मा कहा गया है, इसे 'मन' भी कहते हैं। जब प्राणी के शरीर में अग्नि प्रदीप्त हो जाती है तो उसको स्वयं की सत्ता बनाये रखने के लिये द्रव्य (ईधन) चाहिये। इस ईधन क लिये 'भूख' नाम के अभाव की उत्पत्ति होती है। यह भूख प्राणी में इच्छा, लोभ, मोह, क्रोध उत्पन्न करती है। जो जीवन के व्यापार को चलाये रहती है। इसका सार हमें कैलशियम के उदाहरण से मिल जाता है कि मूल द्रव्य की इच्छा (क्रिया) से ही सम्पूर्ण संसार की रचना होती है। यह संसार जीवित रहता है और अंत में उसी में विलीन हो जाता। मूल द्रव्य भी अंत में अपने ब्रह्म स्वरूप में मिल जाता है।

---

1. विस्तृत व्याख्या के लिये देखें - वेद पुराण बाइबल कुरान का रहस्यमय संसार (पूर्व खण्ड एवं उत्तर खण्ड)- हरिदत्त शर्मा, राजनीतिक अकादमी, वाराणसी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मूल ब्रह्म (मूल अण) ही विकसित रूप में अन्न बनकर प्राणियों को उत्पन्न करता है, उनका पालन-पोषण करता है और अंत में उन्हें स्वयं में लीन कर लेता है (तैत्तरीय उपनिषद् 3:10:6)। इसका तात्पर्य निकलता है कि मूलद्रव्य या पदार्थ (पुराण) ही ईश्वर,यहोवा, God या अल्लाह आदि सबका आधार पृथ्वी है। पृथ्वी ब्रह्म (सूक्ष्म, अमूर्त तत्त्व अथवा ऊर्जा) का समाधि रूप है। इसी को भौतिक स्वरूप भी कहा जाता है। पृथ्वी पांच स्थूल एवं सूक्ष्म महाभूतों आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी का योग है। शिव को 'महायोगी' इसी अर्थ में कहा गया है। सब तत्त्वों (परमाणुओं) का योग होने के कारण ही पृथ्वी के सूक्ष्म शरीर को भी महादेव कहा जाता है। इस पृथ्वी (आधार, मूल) से ही संपूर्ण संसार की उत्पत्ति होती है। इसी को शिऊँ >शिउ >शिव कहते हैं यही सबका कल्याण करता है। इसी भाव में शिव का एक अर्थ कल्याणकारी हो जाता है। शिव का समाधि रूप भौतिक एवं अध्यात्मिक (गतिमान) दोनों रूपों का योग है। इन्हीं दोनों के योग से सृष्टि की उत्पत्ति होती है। इसी से अन्त में मानव पिण्ड उत्पन्न होता है। इसका अर्थ है शिव शब्द (मूल तत्त्वों का योग) स्वयं को मानव स्वरूप और मन के रूप में उत्पन्न कर लेता है। इसी आधार पर देवताओं या सम्पूर्ण (तत्त्वों) के योग (शिव) को मानव काया के रूप में कल्पित कर लेते हैं। प्रत्येक प्राणी में अन्य तत्त्वों के साथ किसी एक तत्त्व element की प्रधानता होती है। उसी तत्त्व की प्रधानता के आधार पर उस प्राणी का नाम दे दिया जाता है। प्राणी यथार्थ (भौतिक द्रव्य) और कल्पना (सूक्ष्म = गतिमान द्रव्य) दोनों का योग है।

यहाँ पर ध्यान दिया जाना चाहिये कि कल्पना का मूल 'मन' है। मन स्वयं ही अति सूक्ष्म द्रव्य (ब्रह्म/ब्रह्मा) का रूप है। यहाँ पर कहा जा रहा है कि जिसे हम 'कल्पना' कह रहे हैं वह मूल रूप में द्रव्य में निहित कल्पना है। वही मानव शरीरों में कल्पना बन कर मनुष्यों को भी प्रेरित करता है। इसी सत्य के आधार पर प्राचीन ऋषियों ने कहा है जैसा अन्न होता है, मन भी वैसा ही हो जाता है।

14. अन्न और मन का सम्बन्ध

यह पुस्तक शब्द विज्ञान से सम्बन्धित है। यहाँ पर 'मन' और अन्न की बात आई है। अतः प्रकरणवश इसका भी विज्ञान सम्मत विश्लेषण करते हैं। शब्द व्युत्पत्ति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के प्रकरण में आने पर इसे भी व्युत्पत्ति शास्त्र ही समझना चाहिये, क्योंकि यहाँ पर हम 'जैसा अन्न वैसा मन्न (मन)'[1] वाक्य अथवा शब्द समूह की विज्ञान सम्मत व्युत्पत्ति, अर्थ अथवा व्याख्या कर रहे हैं। गीता 3 : 28 एवं 4 :13 में बताया गया है गुण, कर्म और विभाग के अनुरूप प्राणी का स्वभाव (मन) बनता है, उसी के अनुरूप उसका नामकरण किया जाता है। यह सिद्धान्त 'पुराण' (पुरा नवं भवति) अर्थात् पुराकाल में उत्पन्न अण (ब्रह्म) और परमाणु का शाश्वत सिद्धान्त है। ब्रह्म मूल रूप में इलेक्ट्रान, फोटान और क्वार्क से भी सूक्ष्म अण हैं। इन ब्रह्म अणों को किसी भी स्तर पर विभाजित नहीं किया जा सकता है। यही सृष्टि के मूल कण (ब्रह्म या basic particle) हैं। ये सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त होते हैं। अंग्रेजी में इसे Cosmic या Cosmos (कोस्मिक या कोस्मोस) कहते हैं।[2]

ब्रह्म या ब्रह्म अण[3] के बाद का स्तर परमाणु (atom) का है। इन्हें ब्रह्म अणों का अगला स्तर इसलिये कहा गया है क्योंकि इनका विभाजन किया जा सकता है।

वर्तमान में हम सभी जानते हैं कि परमाणु की संरचना प्रोट्रान एवं इलेक्ट्रान के विभाजन (विभाग एवं संख्या) पर आधारित होती है। इसी विभाग पर परमाणुओं में गुण (प्रभाव की क्षमता) एवं कर्म (क्रियाशीलता) उत्पन्न होती है। कर्म का अर्थ यहाँ पर दूसरे द्रव्य या परमाणु के साथ क्रियाशील होकर ऊर्जा और एक तीसरे द्रव्य के निर्माण कर देने की क्षमता है। गुण का अर्थ जीवों या अन्य द्रव्य पर प्रभाव है। जैसे लोहे के परमाणुओं में आकर्षण-विकर्षण का गुण है।

इस प्रकार गीता ने परमाणु सिद्धान्त के शाश्वत नियमों के अनुरूप बताया है कि एक कोश (घेरा/unit/इकाई/पिण्ड/बिन्दु/घट) की संरचना में परमाणु की संरचना के सिद्धान्त लागू होते हैं।

यहाँ पर कोश (/इकाई) का अर्थ अण से लेकर अणु तक के भिन्न-भिन्न स्तर

---

1. बाईबल और कुरान में इसी 'मन्न' को 'मन्ना' कहा गया है। इसका स्थूल रूप 'सोम' है। इसी 'क्वश/क्वष/क्वस' से संस्कृत का 'कोश' और अंग्रेजी का cosmos, cosmic का cos (कोस) व्युत्पन्न है। विस्तार यहां नहीं दिया जा रहा है।
2. कोस्मोस का मूल कुमाऊँनी क्वश (फली-मटर, सेम की) है।
3. पुराण शब्द के अनुरूप इन्हें ब्रह्मअण/ ब्रह्मण अथवा ब्रह्माण कहा गया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हैं। अन्त में उस द्रव्य का स्थूलरूप भी एक वृहद कोश (unit,घट या पिण्ड) है। जीवों में यह कोश रक्त कोशिका, मांस कोशिका और अन्त में सम्पूर्ण शरीर वृहद् कोश है। यह स्वयं में एक इकाई का रूप ले लेता है। इस प्रकार गुण,कर्म और विभाग सिद्धान्त के अनुसार 'कोश' के भी अनेक रूप और अर्थ हो जाते हैं। परमाणु स्वयं एक कोश है जिसमें ब्रह्म सत्ता (मूल द्रव्य) एक घेरे में बंद होकर गुण, कर्म, विभाग के आधार पर अपने परमाणु स्वरूपों का उत्पादन करती है।

द्रव्य के परमाणुओं से ही अन्न, शरीर और मन बनता है, अतः जिस द्रव्य के परमाणुओं की मात्रा शरीर में अधिक होती है, उसी द्रव्य के गुणों का प्रभाव मन पर भी पड़ता है। इसी आधार पर कहा गया है मनुष्य जिस प्रकार के गुण-धर्म को धारण करने वाले परमाणुओं से युक्त अन्न को खाता है उसी के गुणों के अनुरूप उसका मन (स्वभाव/गुण) हो जाता है जैसा अन्न वैसा मन्न (मन)।

15. त्वमेव माता च पिता त्वमेव

शिव नाम की मूल समाधिस्थ सत्ताको जाग्रत कर (कामदेव के प्रसंग को देखें) सम्पूर्ण संसार (सृष्टि) उत्पन्न होता है। दूसरे शब्दों में यह भौतिक और गतिशील सूक्ष्म तत्त्व ही सबके माता और पिता (उत्पत्ति कर्ता, जन्म देने वाले) हैं। इसी भाव को "त्वमेव माता च पिता त्वमेव" शब्दों में प्राचीन ऋषियों ने व्यक्त किया है। विज्ञान की दृष्टि से इसका अर्थ होता है मूल अण(पुराण) ही सबके माता और पिता दोनों हैं क्योंकि मूल कण ही माता का स्वरूप ले लेते हैं और वही पिता के स्वरूप की उत्पत्ति भी करते हैं। अतः एक ही सत्ता माता भी है, पिता भी है। आज इसी माता-पिता को god particle (सृष्टि के मूल अण) कहा जा रहा है।

इस श्लोक की विस्तार से व्याख्या विद्वानों को स्वयं कर लेनी चाहिये। इसी भाव से भूमि (पृथ्वी) को मातृभूमि या पितृ भूमि कहते हैं। भारत के व्याख्याकार पितृ भूमि (यूरोपीय भाव) कहने की आलोचना करते हुए दिखाई देते हैं। उन्हें मातृ भूमि शब्द ही सही दीखता है। यह दृष्टि अभ्यास के कारण उत्पन्न हुई है। जब हम भारत के लोग 'पितृ भूमि' शब्द की अपेक्षा मातृभूमि शब्द को उचित या तर्क पूर्ण बताने में अपनी सारी बुद्धि को लगा देते हैं तो वैदिक एवं पौराणिक दर्शन अथवा विज्ञान के सत्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हमारी बुद्धि से ओझल हो जाते हैं।

वैदिक विज्ञान के अनुसार पहले सब कुछ एक था, उसी एक से दो का अर्थात् पुरुष और स्त्री अथवा माता और पिता भाव की उत्पत्ति हुयी। जब उसी एक से सबकी उत्पत्ति हुई है तो यह किस प्रकार कहा जा सकता है कि मातृ भूमि शब्द विज्ञान सम्मत है, पितृ भूमि शब्द नहीं। इसका सार है कि दोनों ही शब्द और उनमें निहित भाव (अर्थ) विज्ञान सम्मत हैं। अतः अपने अज्ञान जनित विवाद से उत्पन्न अहंकार को त्याग कर 'सहज योग' का अभ्यास करना ही श्रेयस्कर है। यहाँ पर दोनों बातें विज्ञान सम्मत हैं। अतः जो जैसा कहता है उसमें विवाद करना व्यर्थ है, क्योंकि विवाद के कारण पराजय के भय से क्रोध उत्पन्न होता है -

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृति विभ्रमः।
स्मृति भ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।। गीता 2 : 63।।

क्रोध से संमोह (कर्तव्य-अकर्तव्य का ज्ञान न रहना) उत्पन्न होता है, मोह (यहाँ पर वाद -विवाद के जीतने की लालसा) के कारण स्मृति का लोप हो जाता है, स्मृति के विभ्रम (अच्छी बुरी बातों में अन्तर न कर पाना) से बुद्धि का नाश हो जाता है। बुद्धि का नाश होने से वह (व्यक्ति) मानवीय विवेक (प्रण) से रहित होकर नष्ट हो जाता है। अर्थात् वह मानव की स्थिति से गिर कर राक्षस, दैत्य या पिशाच के रूप में परिवर्तित हो जाता है। सत्ता एवं सत्ताच्युतों के राक्षसाचार में इसे देखा जा सकता है।

भारत में टी.वी. वाट्स ऐप, ट्वीट आदि के विज्ञान से उत्पन्न वाद-विवाद ने मनुष्यों को मानवता से गिरा कर पशु और शैतानों के धर्म में दीक्षित कर दिया है। "त्वमेव माता च पिता त्वमेव" के विवाद काल में हमारी बुद्धि क्यों भूल जाती है कि विवाद से क्रोध उत्पन्न होकर दोनों पक्षों को नष्ट कर देता है। गीता का यह सिद्धान्त व्यक्ति, समाज, राज्य सभी पर लागू होता है। अतः विवाद होने पर दोनों पक्ष मानवीय गुणों से विहीन होकर राक्षसी कृत्यों के अधीन हो जाते हैं। यह श्लोक स्वयं यह बात बता देता है कि दोनों ही बातें सत्य हैं। जो जैसा चाहे उस भाव को वह रूढ़ (मानकीकरण) कर लेता है जिससे सभी लोग उस शब्दावली के निश्चित अर्थ को सहजता से ग्रहण कर सकें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अतः हम भारतीयों को अपनी विद्या (ज्ञान) को विवादों में नष्ट नहीं करना ही श्रेयस्कर है।

16. Knowledge (नालेज/क्नोलेज)

अभी तक के भाषाविद् यह नहीं बता पाये हैं कि अंग्रेजी भाषा में 'क्नोवलेज या क्नोलेज' शब्द में 'क' और 'व' का उच्चारण क्यों नहीं किया जाता है?

Knowledge का पूरा उच्चारण कुमाऊँनी में मिलता है। लोक में इसे 'क्नाव लेज',क्नोलेज या क्न्योलेज कहा जाता है। कन्यो या कनो का अर्थ खुजली या झनझनाहट है। इसे स्पर्श गुण या स्पर्श से उत्पन्न खुजली, चुभन या चुनचुनाहट कहते हैं। इसी स्पर्श से उत्पन्न शब्द की भाषा (अर्थ) को पहचानना या समझना ज्ञान = जानना कहा जाता है। अंग्रेजी knowledge (नॉलेज) का अर्थ 'ज्ञान' होता है।[1]

शरीर ब्रह्माण्ड में स्पर्श गुण के कारण प्राकृतिक आवश्यकता (natural call) उत्पन्न होने पर टीस उठती है। भीतर उत्पन्न यही चुभन, टीस या खुजली (eaching) ही शब्द संकेत है। इस शब्द के अर्थ को पहचानना ज्ञान है तब उसी ज्ञान के आधार पर प्राणी प्रकृति द्वारा उत्पन्न आवश्यकता की पीड़ा/टीस से मुक्त होता है। इसे लोक में 'खनोलेज' अर्थात् बाहर कर देना या मुक्त कर देना कहा जाता है। 'खन्' शब्द का अर्थ खनना, खोदना या उत्सर्जन है। पुराणों में इसे भगीरथ के पूर्वजों द्वारा सारी पृथ्वी को खोद देना कहा गया है। इससे स्पष्ट निष्कर्ष निकलता है कि अंग्रेजी के knowledge का मूल शब्द कुमाऊँनी में है। कनोव (know) को कनाव = कन (कण) की चुभन या भाषा भी कहा जाता है।

इस क्नोलेज /खनोलेज में एक पेच और है, इसमें 'dge' में 'd' शब्द भी अनुच्चरित है।

अंग्रेजी knowledge (नालेज) में 'k' और 'dge' का d (ड) शब्द अनुच्चरित हैं, ये दोनों शब्द कुमाऊँनी भाषा में यथावत बोले जाते हैं। dge (डज/डजि) क्रिया के ड' को पूर्वाचार्यों ने अनुच्चरित रखा है। प्राचीन विद्वान आज की तरह केवल वर्तमान

---

1. वेद को भी ज्ञान कहा गया है, वेद वेदना भी है।। भारत के लोगों का संविधान और दर्पण, हरि दत्त शर्मा, पृष्ठ 164 ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तक ही सीमित न थे। उन्हें ज्ञात था कि एक न एक दिन 'डज' शब्द का रहस्य खुल जायेगा तब 'नॉलेज' शब्द में k और d शब्दों के अनुच्चरित रहने का रहस्य प्रकट होकर यह बता देगा कि अंग्रेजी कुमाऊँनी भाषा से ही विकसित है। इसे भारतीय भाषाओं से अलग भाषा मानना, अल्पज्ञता को ही पूर्ण विद्वत्ता मान लेना है।

विद्वान अपनी सूक्ष्म चेतना बढ़ायें तो उन्हें नालेज (knowledge) शब्द का मूल कुमाऊँनी क्नोले + डज के योग में दिखाई दे जायेगा। जो योगी नहीं है, योग के स्वरूप को नहीं जानता है वह इस योग से अनभिज्ञ रहता है। प्राचीन योगियों ने dge (डज) के 'ड' को अनुच्चरित कर उसका 'ज' उच्चारण कर दिया है परन्तु d (ड) शब्द को यथावत रहने दिया है। यहाँ पर 'ज' (ge) का अर्थ (जए, जाना), या आगे की क्रिया है, जिसे सम्पन्न किया जाना है। यही ज्ञान है। यह विवेचन शरीर यांत्रिकी और उसकी शाश्वत क्रियाओं पर आधारित है। भात जलने को डज या डजना कहा जाता है। इस अर्थ में डजने से उत्पन्न वेदना की चुभन ही ज्ञान (जानना) को उत्पन्न करती है ऐसा अर्थ बन जाता है। यह विवेचन यास्क प्रणीत 'निरुक्त' नाम के ग्रन्थ का सार है। जिसके आधार पर 'वेदों' के शब्दों का विज्ञान सम्मत अर्थ किया जाता है।

कुमाऊँ में कहा जाता है - भात डज नौछ = भात जल रहा है; दाल डजि गैछ = दाल जल गयी है; साग (सब्जि) डजनै छ = सब्जी जल रही है आदि आदि।

आज का पांडित्य प्राचीन परंपराओं के रहस्य को समझना नहीं चाहता है। कुछ लोग 'स्वपाकी' होते थे। वे स्वयं भोजन बनाते थे। भारत में अब भी कहीं-कहीं इसके अवशेष देखे जा सकते हैं। स्वयं खाना पकाने से लौकिक शब्दों का ज्ञान, प्रकिया के विज्ञान और उसके अर्थ का ज्ञान हो जाता है। 'स्वपाकी' होने के पीछे यही दर्शन है। आज का विद्वान 'लोकाचार' और उसमें निहित विज्ञान को जानता ही नहीं है। वह तो विश्वविद्यालयों द्वारा उस पर थोपी गई विद्वता को ही यथार्थ मान लेता है। इस स्थिति में उसे कहाँ से 'ज्ञान' प्राप्त हो सकता है?

भात डजने से मूलाधार चक्र में चुभन का 'स्पर्श' होने पर उत्प्रेरक तरंगे (खुजली, चुभन) उठने लगती हैं।। तब व्यक्ति को ज्ञान होता है कि अन्दर से उठने वाला शब्द क्या कह रहा है। लोक में पतीली में भात के 'डजने' चिपकने, जलने पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अग्नि से पतीली को उतार दिया जाता है या अग्नि को बुझा दिया जाता है। इस क्रिया को शरीर ब्रह्माण्ड में मूलाधार चक्र से अवशिष्ट द्रव्यों को बाहर निष्कासित (खनोलेज) कर दिया जाता है अथवा ऊष्म द्रव को सम्पूर्ण शरीर में सम्प्रसारित कर अग्नि को कम किया या बुझा दिया जाता है। इस प्रकार कनोलेडजे-खनोलेडजे (डिजि) की सम्पूर्ण यांत्रिकी से उत्पन्न क्रिया के भाव पक्ष को अंग्रेजी में 'नवो ले ज' (नावन = नो नवो, संप्रसारित करना, व्यवस्थित करना, हटाना) की क्रिया से उत्पन्न भाव को नॉलेज knowledge (नओवलेजइ) में संक्षिप्त कर दिया गया है। इस विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि कुमाउंनी भाषा तथा अन्य भारतीय लोक भाषाएँ अंग्रेजी एवं अन्य यूरोपीय भाषाओं की मूल (आधार) हैं। अतः उनके वैज्ञानिक पक्ष को भारतीय भाषाओं की व्युत्पत्ति के आधार पर ही स्पष्ट किया जा सकता है। अतः अंग्रेजी भाषा का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। वह कुमाऊँनी एवं अन्य भारतीय भाषाओं से ही विकसित हुई है, जिस प्रकार भारतीय लोक भाषाओं से हिन्दी विकसित हुई है। पहले मच (much), मोर (more), और मोस्ट (most) की व्याख्या कर चुके हैं। इससे भी स्पष्ट है कि अंग्रेजी की जड़ कुमाऊँनी में मिलती है।

17. Good, Better, Best : गुड, बेटर, बेस्ट

अंग्रेजी, भाषाविदों सहित भारत के मूर्धन्य भाषाविद् भी इस बात को बताने में अभी तक समर्थ नहीं हुए कि क्यों? अंग्रेजी में विशेषण good (गुड = अच्छा) के तीन रूप गुड, गुडर, गुडेस्ट (good, gooder, goodest) न होकर good, better, best बन गये हैं। प्रो. मैक्समूलर ने 19वीं शदी में अपने भाषा शास्त्र[1] की पुस्तक में इस प्रश्न को उठाया था। उसके पूर्व भी भाषा शास्त्रियों के समक्ष यह प्रश्न उठता रहा है। भारत में भी अंग्रेजी भक्त much, more, most तथा good, better, best जैसी समस्याओं को सुलझा नहीं सके हैं। जबकि हम लोग विश्व गुरू से नीचे की बात करते ही नहीं है। भारत में तो भारतीयों की अज्ञान से उत्पन्न पराभूत भावनाओं ने चेलों को सिर उठाने लायक रखा ही नहीं हैं। लोग यह कह ही नहीं सकते हैं कि अंग्रेजी आदि यूरोपीय भाषाओं का मूल हमारी लोक भाषायें हैं। यदि दम्भ के कारण कह भी देते हैं

1. Lecturers on the Science of Language.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तो अपनी बात को सिद्ध करने का कौशल हम लोगों में बचा ही नहीं है।

यदि कोई यह बताने का प्रयत्न करता है कि हम प्रमाण देते हैं। आप देखें, इस विधा को ऊपर उठायें, जिससे भारत की मूल भाषायें सभी यूरोपीय भाषाओं की मूल भाषा प्रमाणित की जा सकती हैं, तो इस बात पर विद्वानों की भाव-भंगिमा कह देती है, ऐसा कैसे हो सकता है? कहाँ सात समुन्दर पार यूरोप और कहाँ भारत?

अपनी दस पुस्तकों में से नौ पुस्तकों में मैंने शब्दों की व्युत्पत्ति को महत्त्व दिया है। इन पुस्तकों को प्रयोग के आधार पर अनेक भाषाविज्ञानियों, प्रोफेसरों, वैज्ञानिकों लेखकों, कवियों, कहानीकारों आदि को भेंट में दिया है। जिससे उनकी प्रतिक्रिया का ज्ञान प्राप्त हो सके। आश्चर्य इस बात का हुआ कि कुछ आचार्यों के अतिरिक्त किसी ने शब्द विज्ञान के सम्बन्ध में कोई जिज्ञासा, आलोचना अथवा अपनी सम्मति नहीं दी है। इससे भारत के प्रबुद्धों का स्तर स्वतः ही ज्ञात हो जाता है। भाषा ही नहीं अन्य सभी क्षेत्रों में भी हमारी विद्वत्ता, वैज्ञानिकता और राज्य प्रबन्धन ढाक के तीन पातों पर टिकी है। ढाक के तीन पात हैं - 1. परंपरा से प्राप्त विज्ञान की अवैज्ञानिक व्याख्या 2. पश्चिमी ज्ञान एवं आदर्शों को भी ठग विज्ञान में परिवर्तित कर लेना और 3. राज्य के आदर्शों का सर्वत्र उल्लंघन कर उसे जंगलराज में बदल देना।

जब किसी राष्ट्र या राज्यमें सियार विद्वानों की विद्वत्ता, वैज्ञानिक कौशल एवं शासन स्थापित हो जाता है। तो उसमें मानवता लबालब भरी रहती है, यह 'सियारवादियों' का दर्शन है। वह शृगाल के श्रम रहित दाँव-पेंच में ही महारत प्राप्त करते हुए स्वयं को चतुर पंडित, चतुर शासक, प्रशासक, न्यायाधीश आदि समझने लगता है। उसी का परिणाम विश्व देख रहा है। इससे अधिक और क्या कहा जा सकता है? पंचतंत्र की कथाओं का यही निचोड़ है। ऐसी स्थिति में यहाँ कोई कैसे आशा कर सकता है कि आधुनिक भारतीय पांडित्य गंभीर विषयों का अध्ययन कर लेगा। मनुष्यों के शृंगार भाव (दिखावा) का प्रतिनिधित्व शृगाल (सियार) ही करता है। पंचतंत्र का यह निष्कर्ष है। भारत में सभी ऐसी आराधना में नहीं लगे रहते हैं। श्रेष्ठता के कुछ अपवाद भी हैं। जो नये अनुसंधानों पर उत्साह से प्रेरणा देते रहने के लिये सदा तत्पर रहते हैं और नयी खोजों को स्वीकारते भी हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब अधिक न कहकर सीधा विषय पर आते हैं। अंग्रेजी good को कुमाऊँनी में गुद या गूद कहा जाता है। यह गेहूँ आदि के दाने या बीज के लिये प्रयुक्त किया जाता है जैसे ग्यूं को गुद =गेहूँ का दाना; जौं को गुद = जौ का दाना। हिन्दी आदि में गूदा (गुद्दी) कहा जाता है। यह खाद्य सामग्री का प्रतीक है। गुद या ग्रास को जब भीतर (भित्तर) खा लेते है तो वह अच्छी तरह बईत्तर >भइत्तर > better अर्थात् जल रूप में तर (तरल) या महीन द्रव हो जाता है (छोटी आंत में)। इस क्रम के बाद तीसरे क्रम में शरीर ब्रह्माण्ड के भीतर रस सर्वत्र फैल या बई (बहई) = भई st (सत) बिछ जाते हैं 'गुद' (बीज, अन्न, फल) की यही तीसरी स्थिति है। इसी को be (भई) + st (सत) = best (बेस्ट) अथवा बऐ (बहे) + सत = बेस्ट (सर्वोच्च स्थिति) कहा जाता है। इसी आधार पर इस सत के सर्वोच्च स्थान को बहिश्त (स्वर्ग) भी कहा जाता है। बहइसत अर्थात् जहाँ सत बहता है वही बहिश्त है। लोक की दृष्टि से जहाँ जीवन यापन के सभी साधन होते हैं वहाँ बहिस्त/बहिश्त या स्वर्ग कहा जाता है।[1]

इ, 'हि' में इसलिये परिवर्तित हो जाता है क्यों शरीर में प्राणायाम से उत्पन्न वायु दाव (हवा) के कारण ही इ का सर्वत्र संप्रसारण होता है अतः बइश्त का बहिस्त हो जाता है। आयुर्वेद में इसे पचन क्रिया के तीन आयाम कहते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं, good (गुड), better (बेटर) और best (बेस्ट) तीन शब्दों के मूल कुमाऊँनी, हिन्दी आदि भारतीय भाषाओं में विद्यमान हैं। साथ ही 'गुद' अथवा पोषण प्रक्रिया के तीनों स्तरों के वैज्ञानिक ज्ञान से भली भांति परिचित हैं। इससे निष्कर्ष निकलता है कि अंग्रेजी के मूल शब्द तथा उनके विशेषणों का रहस्य कुमाउँनी भाषा में छिपा है। आज यह रहस्य प्रकट होकर बता देता है कि अंग्रेजी या यूरोपीय भाषायें भारतीय भाषाओं से उत्पन्न या विकसित हैं। अतः भारतीयों को स्वयं की भाषाओं के प्रति सम्मान की भावना रखते हुए यूरोपीय भाषाओं को भी सम्मानित करने के सहज भाव का स्वागत करना चाहिये। अतः विश्व पांडित्य को शृगाल के पशु पांडित्य को त्याग कर मानव पांडित्य की ओर बढ़ने का प्रयत्न करना चाहिये। यह कटु वाक्य

---

1. शरीर ब्रह्माण्ड में पृथ्वी, अन्तरिक्ष, स्वर्ग के वर्णन के लिये देखें - वेद पुराण बाईबल कुरान का रहस्यमय संसार (पूर्व खण्ड) - ले0 हरिदत्त शर्मा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है पर सच है। विद्वानों, वैज्ञानिकों, शासकों, न्यायाधीशों, प्रशासकों, प्रोफेसरों, आचार्यों, धर्म गुरूओं और संतों आदि को शृगाल के शृंगार पांडित्य से स्वयं को प्रबुद्ध होने की कला को तिलांजलि दे ही देना चाहिये। अर्थात् शृगाल आडम्बरवाद के शृंगार लेखन को छोड़कर सादे जीवन दर्शन को अपना लेना चाहिये।

गुद, गूद/गूदा का एक नाम 'अन्न' है। इसी को अन्नं ब्रह्म कहा गया है। अंग्रेजी में इसी गूड/गुड (good) से व्युत्पन्न God (गॉड/ईश्वर/ब्रह्म) है जिसकी गोद (God) में सभी प्राणी समाये रहते हैं वही सर्वोच्च सत्ता 'God' = गोद है।

18. रोमन कैथोलिक (Roman Catholic)

जब स्वामी विवेकानन्द रोम की यात्रा पर गये थे तो अपने विवरणों में उन्होंने लिखा है, इस सभ्यता से भारत के कर्मकाण्ड का साम्य सर्वत्र दिखाई देता है। रोमन कैथोलिक की व्युत्पत्ति निम्न प्रकार से जाती है। इसमें सभी अर्थों को महर्षि वाल्मीकि की व्याख्या से तथा शरीर ब्रह्माण्ड की स्थितियों के साथ तुलना करते हुए देखना होगा। इसके लिये यह जानना आवश्यक होता है कि महर्षि वाल्मीकि शरीर ब्रह्माण्ड में किस पक्षी को व्याध द्वारा मारे जाने की बात करते हैं। शरीर ब्रह्माण्ड में लोक की तरह का क्रौंच पक्षी नहीं होता है। यदि शब्द ब्रह्म का पांडित्य लोक (भौतिक) और शरीर क्षेत्र (आध्यात्मिक जगत) में पक्षी को लोहे के बाण से मानव व्याध द्वारा मारा जाना अर्थ और व्याख्या कर दी जायेगी तो ऐसे पंडित्यों को ब्रह्मज्ञानी नहीं कहा जा सकता है।

शरीर में पृथ्वी चक्र में स्थित रसों के साथ रक्त तंत्र में स्थित ऊष्म रसों के संसर्ग को ही क्रौंच के जोड़े का मिलन कहा जाता है। व्याध (काल) दाहिनी ओर स्थिति नर पक्षी को बाणों (रेचक से उत्पन्न) से बींध देता है। तो मादा पक्षी भयंकर क्रंदन करती है। इसी दृश्य को देखकर बाल्मीकि इतने दुखी हो गये कि उनके मुख से रामायण की कथा अर्थात् जीव के सम्पूर्ण जीवन की समस्याओं के वर्णन का प्रवाह फूट पड़ता है। इसी को रोमन (roman) + काथो (catho कथा) + लिख (lic) शब्दों में व्यक्त कर दिया गया है। आज भी इस स्थिति में कोई अन्तर नहीं है हम अपने अन्धत्वकारी दुराग्रहों से इसे नहीं देख सकते हैं। इसके लिये कवि हृदय चाहिए तभी बहुत से सूक्ष्म रहस्य दिखाई देते हैं। यही कारण है कि वेदों में ऋषियों को कवि कहा गया है तथा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इसी जीव वेदना से जिस व्यक्ति में हृदय से कविता प्रवाहित हुई उसे प्रथम कवि कहा गया है। विश्व के सभी लोग जानते हैं कि ईसा मसीह दया के अवतार थे अर्थात् वे भी बाल्मीकि के ही कवि हृदय को धारण करते थे/हैं। विस्तार के लिये, भारत के लोगों का संविधान और दर्पण (ले. हरिदत्त शर्मा, पृष्ठ 62-64) का उद्धरण देते हैं-

"Roman Catholic" (रोमन कैथोलिक) शब्द आज हमें भले ही कुछ अजीब लगे, परन्तु जब इसकी निरुक्ति करते हैं तो इनका मूल हमें भारत में मिलता है। इसकी निरुक्ति इस प्रकार है। Roman Catholic की व्युत्पत्ति रो मन काथो लिक (लिख) अथवा रओ मन काथो लिख।

व्याख्या - जब मन रोता है अथवा व्यथित होता है तो कथायें लिखता है। यह शाब्दिक अर्थ है। काथो में कुमाऊँनी और बंगला उच्चारण के अंश स्पष्ट दिखाई देते हैं। संस्कृत हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में इसे 'कथा' कहते हैं। यह हमें ज्ञात है कि जब महर्षि वाल्मीकि का मन क्रौंच पक्षी की वेदना को देखकर व्यथित हुआ (रोया) तो उनके मुँह से राम कथा स्वतः निःसृत हुई। प्रकृति के सभी कार्य और विकास क्रम कथायें ही हैं। कथा/काथो का द्वितीय अर्थ कातो (कातना) भी होता है। लिख का प्राकृत अर्थ होता है 'लई ख' = लेकर खाना/स्थापित करना अथवा रखना, इस अर्थ में रोमन कैथोलिक का अर्थ है जब मन रोता है अर्थात् उसे आवश्यकता होती है, तो वह कातता है (क्रियाशील होता है) और उपभोग की वस्तुएँ प्राप्त करता है। इस अर्थ को बाद के लोगों ने "आवश्यकता अविष्कार की जननी है' के रूप में भी व्यक्त किया है। इसमें आवश्यकता मन अथवा इच्छा है, अविष्कार कातना, ढूढ़ना और निर्माण की प्रक्रिया है तथा लिख (ना) आवश्यकता की पूर्ति है। भारतीय चिंतन को देखें तो इसमें 'मन' को ही संसार की उत्पत्ति का कारण कहा गया है, चाहे यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का मन हो अथवा व्यक्ति का।

रोमन कैथोलिक की दूसरी निरुक्ति भी प्रथम से भिन्न नहीं है। इसके अनुसार जब मन रओ (रहता या उत्पन्न होता है)[1] तभी कथा लिखी जाती है। रओ शब्द

1. Ro= रओ, man = मन, रओ मन अथवा मन रओ दोनों का अर्थ समान है। जब मन रहता है तभी वह किसी वस्तु की इच्छा या आवश्यकता से बेचैन होता है, अतः यही रओ 'रो' (रोना, दुखित होना) में परिवर्तित हो जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुमाऊँनी, भोजपुरी आदि अनेक भाषाओं में प्रयुक्त होता है। मन कैसे उत्पन्न होता है इस का विशद वर्णन हमें पुराणों में मिलता है। यह वर्णन वर्तमान विज्ञान के मन उत्पत्ति के वर्णनों से भिन्न नहीं है। वर्तमान वैज्ञानिक शरीर में रासायनिक द्रव्यों की क्रिया-प्रतिक्रिया को मन विचार,भाव, बनने का कारण मानते हैं। भारतीय शास्त्र इसे योग का परिणाम कहते हैं। जो लोग भारतीय पद्धति के योग को केवल पलथीमार कर ध्यान करने के रूढ़ अर्थ को ही योग समझते हैं वे पुराणों के वर्णन को ऊल-जलूल समझ कर इसे अन्धविश्वास करार देते हैं। परन्तु जो योग शब्द का अर्थ प्रकरण के अनुसार कर सकने की बुद्धि रखते हैं, वे योग का अर्थ शरीरस्थ रसों, रसायनों के संयोग (=योग) का परिणाम मन को समझते हैं।

इस तरह हम शब्द निरुक्ति के द्वारा यह स्पष्ट देख सकते हैं कि रोमन कैथोलिक शब्द भारतीय है और इसका आधार भी अन्धविश्वास न होकर विज्ञान है। यदि उसके धारक इसका अन्धविश्वास के रूप में प्रयोग करते हैं तो यह दोष रोमन कैथोलिक शब्दों में धारित भावनाओं और अर्थों में नहीं वरन उनके अन्य सर्मथकों का दोष है। यही कथन सभी धर्मों के बारे में भी सत्य है।

'Ro man Catholic रो मन कैथोलिक की व्युत्पत्ति वही है जिसे बुद्ध ने 'सर्वं दुखं दुखं' कहा है। दुःख तभी होता है जब मन व्यथित होता है। इन सब शाखाओं और प्रशाखाओं का मूल वेद है।वेद सम्पूर्ण ज्ञान का नाम है,अर्थात वेद नामक पुस्तक और उसके छः अंगों में मन की व्यथा और उसके निराकरण का वैज्ञानिक ज्ञान समाया हुआ है। वेद शब्द की अनेकानेक व्युत्पत्तियाँ की गयी है। यहाँ के संदर्भ में वेद की एक व्युत्पत्ति यह है कि जिससे वेदना की उत्पत्ति और उसका समाधान होता है, उस सम्पूर्ण पद्धति का नाम वेद है। इस प्रकार वेद वेदना, व्यथा, दुःख का ही पर्यायवाची शब्द है। दुःख आवश्यकता के कारण उत्पन्न होता है और यह आवश्यकता आगे के प्रगति पथ को प्रशस्त करती है। भारतीय परंपरागत शैली के विद्वान वेद की इस व्युत्पत्ति से सहमत न हो क्योंकि वे वेद का अर्थ ज्ञान करते हैं। ज्ञान कैसे उत्पन्न होता है? जब इस की प्राक्रिया के वैज्ञानिक पक्ष का विवेचन करेंगे तो शरीर-यांत्रिकी के विश्लेषण से "वेद" का अर्थ "वेदना" भी होता है। आवश्यकता के कारण वेदना उत्पन्न होती है,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूसरे शब्दों में आवश्यकता ही वेदना है और जिस उपाय से इस वेदना का शमन होता है वही ज्ञान है। दूसरा तर्क यह है कि जब सभी कुछ वेद है तो उसमें वेदना भी सम्मिलित हो जाती है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वेद की उपरोक्त व्युत्पत्ति विज्ञान सम्मत है।''

19. सभ्यता का प्रारंभ (Civilization) = शिव (इ) लाई जैसन

भारत के रहस्यों को ढूढ़ते-ढूढ़ते मुझे पुराणों में एक रहस्यपूर्ण कथा के दर्शन हुए। महाप्रलय के बाद जब मनु की नाव में कुछ ही जीव बचे रह गये तो जगत के सम्पूर्ण विनाश की स्थित उत्पन्न हो गयी। सृष्टि के जनक भगवान शिव समाधि में चले गये। पार्वती (प्रकृति) शिव को ही पति रूप में वरण करने के लिये तपस्यारत थी। कामदेव की सहायता से किस प्रकार शिव को जगाया गया यह कथा (इतिहास) हम पहले देख चुके हैं।

इसके बाद सप्तर्षियों और देवों ने शिव को पार्वती से विवाह करने के लिये मनाया। देवता और शिव गण बाराती बने और शिवपार्वती का विवाह विधि विधान से सम्पन्न हुआ। इसी के बाद नवीन सृष्टि और सभ्यता का प्रारंभ होता है। भारत के शिव विवाह की यह सम्पूर्ण कथा पुराणों में विस्तार से दी गई है।

जब भारत से कुछ लोग यूरोप जाने लगे तो उनके एक परिवार के मुखिया से सोचा हम भारत ने, अपनी जन्म भूमि से जा तो रहे हैं। कल हमारे बच्चे हमसे पूछेंगे कि हमारी संस्कृति आस्था विचार और सभ्यता का मूल कहाँ है? हमारी जड़ें कहाँ से प्रारंभ हुई थी। मुखिया के इस विचार ने उसे भारत के ऋषियों से अपने मूल उद्‌गम और सभ्यता का इतिहास बताने का अनुरोध किया।[1] लोक व्यवहार में यह बात सर्वत्र देखी जाती है।

ऋषि ने एक वाक्य[2] में सब कुछ कह दिया क्योंकि उस मुखिया के परिवारी

---

1. लोक परंपरा हमें इसी प्रकार इतिहास की व्याख्या करने का मंत्र देती है। भारत की भाषाओं में भी शिव लाई जैसन शब्द हैं।
2. वृहदारण्यक उपनिषद में 'द' शब्द से देवों, दानवों और मनुष्यों को उनके प्रश्नों का उत्तर दिये जाने का वर्णन है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जन जल्दी चलने की उतावली में थे। ऋषि ने कुमाऊँनी,भोजपुरी भाषा में कहा 'शिव लाई जैसन' यह मंत्र तुम्हें सारा इतिहास बता देगा। अब आगे इसकी व्युत्पत्ति (व्याख्या) के रहस्य को समझने का प्रयास करें।

इस व्युत्पत्ति से स्पष्ट है कि सभ्यता का सम्पूर्ण विकास शिव को समाधि से उठा कर पार्वती के साथ उनका विवाह कराकर नये सिरे से जीवन में क्रिया कलापों के साथ स्वयं को जोड़कर एक नवीन संरचना कर लेना ही सभ्यता और संस्कृति है।

अब जब भी यूरोपवासी सभ्यता (civilisation) के विस्तार में स्वयं के मूल को ढूढ़ेंगे तो उन्हें भारत में ही अपने मूल मिलेंगे। इसके लिये उन्हें 'शिव ववाह' की पुराण कथाओं का गहन अध्ययन करना होगा। इसका अर्थ है, सभ्यता और संस्कृति को नये सिरे से प्रारंभ कंरने के लिये जिस प्रकार भगवान शिव को समाधि से उठाकर लाया गया था और उनका विवाह किया गया था उसी को 'शिव (ई) लाई जैसन' या civilization[1] सभ्यता कहा जाता है। civilization शब्द का वरण यूरोपीयों ने किया है अतः उनका मूल, सभ्यता एवं संस्कृति उसी शब्द में निहित है। शिव को समाधि से कैसे जगाया जाता है उसे calcium (कैलशियम) प्रकरण में भी देखें।

पुराणों में भारतीय महाद्वीप में स्थित राष्ट्र की कल्पना एक माता (प्रकृति का मातृ स्वरूप) के रूप कल्पना की है। शिव (कैलाश) की पुरुष रूप में कल्पना कर सकते हैं। इस धरती को अर्धनारीश्वर रूप दे दिया है। यहाँ तक तो विवरण में कोई रहस्य नहीं है। इस स्थिति की हम कल्पना कर सकते हैं। भारतीय भूखण्ड से मानव विकास की यात्रा में जो विशेष चिन्ह हमें मिलते हैं। वह अन्यत्र कहीं शायद ही हों। यहाँ पर हिमालय का कैलाश मानव काया का मस्तक है। मस्तक में दायाँ -बायाँ दो मस्तिष्क होते हैं। कैलाश में मानसरोवर दायाँ मस्तिष्क है और रावणताल (राक्षस ताल) बायाँ मस्तिष्क है। कैलास का मान सरोवर स्वयं मन का स्वरूप है। द्वादश ज्योतिर्लिंग शरीर के ढांचे का निर्माण करते हैं तथा इक्यावन शक्तिपीठ शरीर राष्ट्र की तरह प्रकृति प्रदत्त राष्ट्र की रस, रक्त, नाड़ी, मांस आदि के केन्द्र हैं। इस तथा अन्य सभ्यताओं

---

1. पुराणों में राज शिवि (civi) का वर्णन है, वह शिवभक्त था। लोक में शिवदत्त, शिष्या, शिवी आदि शिव के ही नाम कहे जाते हैं। शिव (ई) के 'ई' का अर्थ है - को।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के आधार पर कहा जा सकता है कि यही क्षेत्र मानव सभ्यता के प्रारंभ का स्थल रहा है। यूरोप की भाषाओं का civilisation शब्द भी इसे प्रमाणित कर देता है।

20. फेर्रो (Ferro)/Ferrum (फैरम) : फेरो/फेरूँ

फैरो, फैरम लैटिन भाषा के शब्द हैं। फेरोस/फेरोउस, फिरौंछा, फिरना (घूमना), फिराव, फेरा करना, फेरा लगाना आदि अनेक शब्द कुमांऊँनी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में हम लोग रोज बोलते हैं। हममें से किसी को यह भान भी नहीं होता है कि यही शब्द लैटिन भाषा में भी प्रयुक्त होते हैं। भारत का पांडित्य विशेषतः विधि से सम्बन्धित लोग (वकील, जज, विधिज्ञ) लैटिन शब्दों का अधिक प्रयोग करते हैं। ये लोग 'लैटिन' के नाम पर शब्दों की ऐसी व्याख्या करते हैं कि लोक में न्याय और अन्याय का अन्तर ही मिट गया है। आज किसी का साहस नहीं है इन विधिज्ञों से कहे कि आप लोगों के उड़ने की धुन्ध से मलिन आकाश, जिसे आप लोग न्याय समझ रहे हैं वह न्याय नहीं वरन न्याय प्रक्रिया का भयंकर प्रदूषण (विकिरण) है, जो समस्त व्यवस्था को नष्ट करता जा रहा है। ये विशेषज्ञ न्याय के प्रदूषण की बंदूक, स्थिति का सच बताने वाले पर ही तान कर उसे नष्ट कर देने की नकारात्मक ऊर्जा से अवश्य प्रदीप्त हो जाते हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे जंगलराज में बया (चिड़िया) के बंदर को घर बना लेने की सलाह देने पर बंदर, बया का घर ही उजाड़ देता है (पंचतंत्र की एक कथा से उद्धृत)। लैटिन भाषा और शब्दों के विद्वान विधि के आकाश में इतनी ऊँचाई पर उड़ते हैं कि इन्हें भारतीय भाषाओं के शब्द हेय, उपेक्षा योग्य एवं पिछड़ेपन के वाहक की तरह चुभते हुए दिखाई देते हैं।

यह सब बातें इसलिये लिखी जा रही हैं क्योंकि अभी तक 'शब्द विज्ञान' को केवल यूरोपीय प्रगति का प्रतीक माना जाता रहा है। उस विज्ञान से लोगों का कोई हित नहीं हुआ है। इसके विपरीत विश्व के भाषाविदों ने अपने मनमाने अर्थों और व्याख्याओं के द्वारा समस्याओं को उलझा दिया है।

यह एक उदाहरण मात्र है। सर्वत्र ऐसी ही स्थिति है। फरो, फेरो, फरोछ, फिरोइ (स) आदि शब्दों को जब हम देवनागरी लिपि में लिखते-पढ़ते-देखते और उच्चारित करते हैं तो भारत के बुद्धिजीवियों में सब कुछ उपेक्षा योग्य बना रहता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्यों ही इन शब्दों को रोमन लिपि में लिखकर देखा, पढ़ा या उच्चारित किया जाता है तो हमारा पांडित्य विदेशों में जाकर ज्ञान अर्जित करने के लिये पासपोर्ट और वीजा बनवाने में लग जाता है। भारत के ब्यूरोक्रेटों[1] का अब एक ही काम रह गया है, कानून का डंक मार कर लूट और भ्रष्टाचार से अपना घर (ब्यूरो, छत्ता) भरना।

इस विवेचना से यह बात कही जा रही है कि भारतीय फेरा, फेरो, फेरू, फिरोस, फेरना, फिरना, और लैटिन ferro, ferru, ferrous आदि एक से शब्द हैं। उच्चारण भी एक से हैं। अन्तर केवल लिपियों का है।

अगला प्रश्न उठता है कि जब दोनों शब्द एक हैं तो इनके भिन्न-भिन्न अर्थ किस प्रकार बन गये हैं? यह प्रश्न तुलनात्मक भाषाशास्त्र की कुंजी है। इस प्रश्न के उत्तर से वेदों का 'एकं सत विप्रा बहुधा वदन्ति' (सत्य एक है विद्वान उसको भिन्न-भिन्न शब्दों के द्वारा व्यक्त करते हैं) की पुष्टि हो जाती है।

यह बात मैंने बार-बार कही है कि हमारे सभी ज्ञान-विज्ञान की प्रयोगशाला हमारा अपना ही शरीर ब्रह्माण्ड है। इसे पिण्ड भी कहा जाता है। "यत् ब्रह्माण्डे तत् पिण्डे" संस्कृत भाषा का यह प्रसिद्ध कथन (उक्ति, मुहावरा) है। इसका अर्थ है जो बाहरी असीम ब्रह्माण्ड में हैं, उसी का लघु (छोटा) रूप यह मनुष्य शरीर है। शरीर तो एक ही है फिर इसे शरीर ब्रह्माण्ड क्यों कहा जाता है?

एक शरीर को इसलिये ब्रह्माण्ड के रूप में देखा जाता है क्योंकि शरीर के भीतर की सम्पूर्ण यांत्रिकी ब्रह्माण्ड का ही अत्यन्त छोटा रूप है।

अब फेरा, फिरा, फिरौस (छ) आदि शब्दों का अर्थ भारत में फेरा लेना (परिक्रमा), फिरना, फेरना (पलट कर लौटाना) आदि अनेक अर्थ किस प्रकार बन जाते हैं। शरीर प्रयोगशाला में आयें। यह प्रयोगशाला ईश्वर निर्मित होने के कारण इसकी

---

1. कुमाऊँनी 'ब्यूर' का अर्थ भ्रमर, मधुमक्खी, बर्रे होता है। ब्यूरोक्रेट का सही भाव न जान कर भारत के ब्यूरोक्रेट बर्रों के बरो (घर, छत्ता, कार्यालय) में बर्रों का स्वभाव अपना लिये हैं। ऐसे में वे मनमाने ढंग से डंक मारने के अतिरिक्त व्यवस्था नाम की किसी अन्य बात को नहीं जानते हैं। यही कारण है कि शब्द के साधु (पाजिटिव) = अर्थ को समझे बिना ब्यूरोक्रेटों ने ब्यूरोक्रेसी का अर्थ जनता का दमन (डंक मारना) अर्थ कर लिया है। शब्द के सही अर्थ को जाना जाय यही शब्द की व्युत्पत्ति का उद्देश्य होता है। - "हिन्द स्वराज के सौ वर्ष" हरि दत्त शर्मा, पृष्ठ 81-83 में ब्यूरोक्रेसी की विस्तार से व्याख्या/ व्युत्पत्ति की गई है - देखें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रियाओं का परीक्षण करने से निश्चित निष्कर्ष निकलते हैं।

शरीर में रक्त संचार फेरे (घेरे या चक्र) में चलता है। रक्त एक निश्चित घेरे में चलता-फिरता है और पुनः फेर (लौट कर) फिरता है यह अर्थ भारतीयों ने लिया है। महाभारत और पुराणों में अनेकों प्रसंगों में शिव-पावर्ती के संसार भ्रमण का वर्णन है। यही शिव-शक्ति का फेरा लगाना, फिरना, भ्रमण आदि कहा जाता है।

इस रूप के फेरों में मुख्य तत्त्व लोहा होता है फेरना, फिरना, आकर्षण - विकर्षण आदि उसी के गुण है। इसी के आधार पर फिरने, फेरने, फिराने वाली वस्तु को फेरस,(Ferrous), फेर्रोस (छ), फिरौछ) फेरम अर्थात् लोहा अर्थ कर लिया गया है। इस फिरौउस की अन्य क्रियाओं से अनेक अर्थ पुनः व्युत्पन्न हो जाते हैं जैसे तेजी से फेरा लगाने/फिरने से 'सी' या ची शब्द निकलता है। यह सी या चीं शब्द अधिक अग्नि (उर्जा) के उत्पन्न होने से निकलता है। इस का नाम क्रोध भी है। इसीलिये फेरोसियस (फैरो चियस) ferocious का अर्थ क्रोधी, क्रूर या आक्रामक हो जाता है।

महत्त्व :

शब्द ब्रह्म की यह खोज अपने में विशेष है। यह भारतीय सभ्यता और संस्कृति की निरन्तरता का इतिहास है। इससे विश्व में भारतीय वैदिक एवं पौराणिक ज्ञान-विज्ञान की विवेचना सहजता से हो सकेगी। यहाँ पर बहुत थोड़ी सी सामग्री का उदाहरण के रूप में विवेचन किया गया है। भाषा के क्षेत्र में मेरा इतना ही कार्य है यह सच नहीं है। मैंने अपने प्रत्येक लेखन में शब्द व्युत्पत्ति की वैज्ञानिक विवेचना करने की विधा को प्रश्रय दिया है। अधिक जिज्ञासा के लिये जिज्ञासुओं को उन पुस्तकों को देखना चाहिये।

हम बड़े-बड़े दर्शनों, कविताओं, कहानियों, नाटकों, ग्रन्थों, विज्ञान, संस्कृतियों, प्रगति, मानवता, न्याय, शासन, राज्य, समाज, अर्थ आदि पर बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। यह सब हम शब्दों के पेट से ही उगलते हैं, परन्तु शब्द कैसे बनते हैं? उनकी उत्पत्ति किस प्रकार होती है? और उनका अर्थ कैसे व्युत्पन्न (लगता है) है? इस आधारभूत बात को हम नहीं जानते हैं। विश्व की बुद्धिमान (बुद्धिवादी) यर्थाथ में बुद्धि विनाशी सभ्यताओं और संस्कृतियों का यही सच है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'तुम बड़े कि मैं बड़ा', 'तुम्हारा शब्द बड़ा या मेरा' अर्थात् ईश्वर (शब्द) बड़ा या अल्लाह (शब्द) बड़ा अथवा ईसा मसीह (शब्द) बड़ा; इसी पर सम्पूर्ण विश्व भयंकर घमासान मचाये हुये है। किसी को कहीं शांति नहीं है।

विद्वानो! नेताओ! वैज्ञानिको! क्या इतनी सी हमारी सभ्यता और संस्कृति है? इसका उत्तर हम सभी को देना होगा। बड़े-बड़े भाषण देकर विश्व को धोखा देने के लिये कौन हम सबको प्रेरित (उकसा) कर रहा है? इसका समाधान ढूढ़ें। शब्द ब्रह्म पर अनुसंधान ही हमें इसका समाधान एवं उत्तर दे सकता है। यह उकसाने वाली शक्ति वही तो नहीं है जिसका वर्णन दुर्मासप्तशती में किया गया है-

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।।

बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।। दुर्गा सप्तशती 1: 55-56 ।।

इसका भावार्थ है -महामाया भगवती ही ज्ञानियों (विद्वानों, वैज्ञानिकों) के चित्त को भी बलपूर्वक खींचकर कर मोह में डाल देती हैं। दुर्गाशप्तशती के इस कथन को फैरो, फैरस, फेरा, फिरना आदि शब्दों की व्युत्पत्ति और शरीर यांत्रिकी द्वारा प्रमाणित कर दिया गया है। इसलिये मनुष्य मात्र को ग्रन्थों के कथनों में पर संदेह करने की अपेक्षा उन पर शोध research करनी चाहिये। यह संक्षेप है, विस्तार नहीं। अब महामाया कौन है इसके वैज्ञानिक सत्य को जान लेते हैं। शरीर में रक्त परिभ्रमण (फेरा, फैरो) की यांत्रिकी से उत्पन्न सम्पूर्ण बल (आकर्षण, विकर्षण एवं अन्य बल) एवं अदृश्य रश्मियों से उत्पन्न प्रभाव ही महामाया है। जो सम्पूर्ण शरीर ब्रह्माण्ड का संचालन एवं नियंत्रण करती हैं तथा प्राणी मात्र की (बुद्धि, ज्ञान, क्रिया आदि) को उत्पन्न कर बलात् (बल पूर्वक) प्राणियों को माह में डाल देती है। भारतीयों को आज के वैज्ञानिकों से पूछना चाहिये क्या आप लोग विज्ञान और अध्यात्म की ऐसी आश्चर्यजनक व्याख्याकर सकते हैं?

मेरा मन करता है, हमें आज के अर्ध शिक्षित वैज्ञानिकों और प्रकाण्ड कहे जाने वाले व्याख्याकारों को चुनौती देनी चाहिये। अतः वैज्ञानिकों को चुनौती है कि वे बतायें कि किस प्रकार भारतीय शास्त्रों में कही गयी बातों को वे अन्धविश्वास और धर्मान्धता कहते हैं? यही बात विश्व के अन्य धर्म ग्रन्थों के लिये भी सच है। ग्रन्थों ने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्ध विश्वास नहीं फैलाया है। अन्ध विश्वास अधकचरे अर्थकारों ने फैलाया है। उन्हीं की अधकचरी व्याख्याओं को सत्य मानकर हम सभी अधकचरे ज्ञान के दंभ से दंभायमान हो गये हैं। विश्व की दुर्गति का यही कारण है। यह तभी दूर हो सकता है, जब हम विश्व के सभी मूल आधार (धर्म ग्रन्थों) की वैज्ञानिक व्याख्या कर विश्व में इसका प्रसार कर दें।

21. संस्कृत और भारत

यह बात निर्विवाद है कि संस्कृत साहित्य में वेद, पुराण, उपनिषद, ब्राह्मण, ग्रन्थों आदि में विश्व का महान ज्ञान-विज्ञान भरा पड़ा है। यह बात फैरो (Ferro) के विवेचन से भी प्रभाणित हो जाती है।

संस्कृत साहित्य ज्ञान का भंडार होने पर भी भारत की हजारों वर्षों से जैसी दुर्गति होती आ रही है, उसे हम अपनी मति कहें या दुर्मति कहैं, उसी के कारण है।

यूरोपीय विद्वानों ने भी संस्कृत भाषा, व्याकरण साहित्य, उसके ज्ञानविज्ञान की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है, यह बात वर्तमान 18वीं, 19वीं शदी से चली आ रही है। भारतीय विद्वानों ने यूरोपीय विद्वानों के कथनों को अपनी अवैज्ञानिक दिशाहीनता के कारण उत्पन्न पराभव की भावना में उत्साह की तरंगे लाने के लिये संस्कृत भाषा को सब भाषाओं की जननी घोषित कर स्वयं के प्राचीन स्वाभिमान को पुनः स्थापित करने के लिये एक प्रचार उपकरण की तरह इसका प्रयोग किया है।

जब तक हम अपने अन्दर की मेधा को जागृत कर प्राचीन ज्ञान पर सही शोध कर विश्व के समक्ष नहीं रखेंगे और उसका लाभ प्रत्येक को प्राप्त न होगा, कौन कौवों के कथनों पर विश्वास करेगा? दूसरे शब्दों में कहा जा रहा है कि हमें धरातल अर्थात् व्यवहार में अपने प्राचीन ज्ञान विज्ञान को उतारने की विधा को प्रत्यक्ष में लाना होगा। तभी हम संस्कृत भाषा की सर्वोच्च स्थिति का गुणगान कर सकने की स्थिति में आ सकते हैं।

संस्कृतज्ञों को यह भ्रम है कि संस्कृत भाषा सर्वश्रेष्ठ है। यह कटुसत्य उन्हें स्वीकार करना ही चाहिये, क्योंकि धरती में पहले प्राकृत भाषा उत्पन्न होती है क्रमशः प्राकृत भाषा अर्थात् द्रव्यों का शोधन होता जाता है जिसे सत कहा जाता है। तब संस्कारित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थात् संस्कृत भाषा का विकास होता है। प्रो. हरिदत्त शर्मा ने अपनी पुस्तक 'शब्द विज्ञान'[1] (प्रथम खण्ड) में इस प्रक्रिया को विस्तार से दिया है।

इस आलोचना से संस्कृतज्ञों को निराश नहीं होना चाहिये। इस प्रकरण में उन्हें द्वादश आदित्यों के विज्ञान को प्रमाण मानना चाहिए जिसमें कहा गया है कि विष्णु जन्म से सबसे छोटे होने पर भी प्रभाव और गुणों में सबसे बड़े (श्रेष्ठ) हैं (महाभा. आ.प. 65:14-16), यही स्थिति संस्कृत भाषा की समझनी चाहिये। सबसे कनिष्ठ होने पर भी संस्कृत भाषा अपने गुणों और व्यापकता के कारण सबसे श्रेष्ठ है।

21.1 संस्कृत भाषा की सर्वोच्चता

भाषा की माप का आधार भी शरीर ब्रह्माण्ड ही है। संस्कृत का अर्थ होता है संस्कारित शुद्ध जो शुकदेव की तरह मिठास युक्त प्रियवाणी बोले तथा अपने पुष्टिकरण गुणों के कारण सबको अपनी ओर आकर्षित कर ले। प्राकृत का अर्थ है - जिसमें आकर्षण और काटें दोनों होते हैं। जहाँ पर वाद-विवाद (काटों की चुभन से) होता रहता है।

भाषा का यहाँ पर अर्थ उन शब्दों से है जो द्रव्य का नाम हैं, उसका प्रभाव शरीर के जीवों पर कैसा पड़ता है यह उसका गुण कहा जाता है। जिस शब्द (द्रव्य) से शरीरस्थ जीव आकर्षित हो जाते हैं, उन्हें प्रिय लगता है वही भाषा संस्कारित अर्थात् संस्कृत कही जाती है।

संस्कृत भाषा की स्थिति समझने के लिये एक उदाहरण देते हैं- जब हम कोई फल या अन्न खाते हैं तो मुख में इन द्रव्यों के रसायनों से मिठास, प्रसन्नता, प्रफुल्लता उत्साह की उत्पत्ति होती है। इसी स्थिति को द्रव्य की शाश्वत भाषा कहते हैं। द्रव्य (सत) की इसी भाषा को 'देवभाषा, देववाणी' ईश्वर की भाषा divene language अथवा अल्लाह की भाषा या वचन कहते हैं। जो मनीषि जितनी तल्लीनता से इस भाषा को समझ लेता है वह उसी के अनुरूप उत्पन्न शब्दों को एक लय में लिख कर उनका गान करता है। मुख में, द्रव्य से उत्पन्न रसानुभूति ही द्रव्य की भाषा कही जाती है। इसी

---

1. शब्द विज्ञान (विश्व भाषाओं की कुमाऊँनी आधारित व्युत्पत्ति) प्रथम खण्ड, राजनीतिक अकादमी वाराणसी सन् 2002, पृष्ठ 26-28। विस्तार, इस पुस्तक के पृष्ठ 7, 8, 9 पर देखें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भाषा को संस्कारित भाषा कहते हैं। यहाँ पर भ्रम न हो। शुद्ध भोजन जो प्राणी को तृप्ति देता है वही संस्कारित या सत्त्व गुण युक्त भाषा (द्रव्य भी) कहा जाता है। इसी को द्रव्य के जलमय शरीर में उत्पन्न तरंग (शब्द, भाषा) कहा जाता है। इसी को देव भाषा कहते हैं। इस भाषा में सभी जीव समान रूप से लाभान्वित होते हैं।

भारत का पंडित वर्ग देव भाषा के इस दैवी स्वरूप को शायद ही समझता है। यदि समझता तो संस्कृत अर्थात् शब्द रूपी देव भाषा बोलते ही सबकी तृप्ति हो जाती। ऐसा नहीं होता है; इसलिये देवभाषा / ईश्वरीय भाषा का अर्थ द्रव्य की भाषा होता है जिससे प्राणी की आवश्यकतायें पूरी होती हैं।

आवश्यकताओं को ही प्राकृत भाषा कहते हैं। मार काट की भाषा को राक्षस या पिशाच भाषा कहा जाता है। अम्ल और क्षार पदार्थों की अधिकता से जब शरीर में कांटे चुभते हैं, मार काट मचती है तो उसे प्राकृत भाषा कहते हैं।

शरीर राज्य में दोनों भाषायें (दोनों द्रव्य) सर्वत्र फैले होते हैं। परन्तु जिस क्षेत्र में जिस भाषा (द्रव्य के गुणों) की अधिकता होती है वहां उसी भाषा को बोला जाता है। यही वहां की लोकभाषा कही जाती है।

संक्षेप में कहें तो भारत का पांडित्य कोरे संस्कृत शब्दों को रट कर क्या करेगा? जब यहाँ के मनुष्यों की जीभ में देवभाषा /ईश्वरीय भाषा का एक कौर भी उपलब्ध नहीं होता हो। भाषा के इसी विज्ञान को न समझने के कारण अभाव जन्य प्राकृत भाषा (कष्ट, कठोरता, देव भाषा की अज्ञानता) आदि से भारत अभाव ग्रस्तों, दरिद्रों, घूसखोरों और भ्रष्टाचारियों का देश हो गया है। जब भारत में यह सब होता है तो विश्व के अन्य देश कैसे अछूते रह सकते हैं। क्योंकि उन्हें भी लोक में बोली जाने वाली कोरी शाब्दिक भाषा और देव भाषा, Divine Language या अल्लाह की भाषा का कोई ज्ञान नहीं है। इस भाषा को विश्व के पंडित जानते तो दुनियाँ का ऐसा हाल नहीं होता? आज जो लोग देवभाषा को पढ़ना जानते भी हैं अर्थात् धन संपन्न हैं उन्होंने लूट के माध्यम से, इस दैवी भाषा पर अधिकार जमा रखा है अब ये लोग अन्य लोगों को दैवी भाषा (साधनों की प्राप्ति) को पढ़ने (पाने) से रोक कर सबको कोरी या शाब्दिक भाषा को पढ़ने की प्रेरणा दे रहे हैं। शिक्षाशास्त्री बतायें कि शब्द की निराकार शिक्षा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किस प्रकार व्यक्ति के भौतिक शरीर का पोषण कर सकती है? उत्तर इसी प्रश्न में है।

इससे यह प्रमाणित हो जाता है आज जिसे हम पढ़ना, लिखना कह रहे हैं वह केवल शब्दों की गूंज है। यदि शाब्दिक पढ़ाई-लिखाई से व्यक्ति सभ्य (संस्कृत) हो जाता तो करोड़ों लोग देवभाषा बोलने के दैवी अधिकार से वंचित अर्थात् बेरोजगार या वृत्तिहीन न होते।

21.2 संस्कृत साहित्य का विज्ञान

वेदों की किस प्रकार हम वैज्ञानिक व्याख्या कर उसका लोक हित में प्रयोग कर सकते हैं? यह अभी तक अंधेरे में हैं। सभी लोग शब्दों की व्याख्या या अर्थ भर कर देते हैं।

अपनी पुस्तकों 'वेद पुराण बाईबल कुरान का रहस्यमय संसार' (पूर्व एवं उत्तर खण्ड) में मैंने वेदों के विज्ञान स्वरूप की कुंजी खोल दी है। यहाँ पर शरीर ब्रह्माण्ड के विवेचन में 'सोम' के भौतिक या विज्ञान रूप को स्पष्ट किया गया है। स्वर्ग और पृथ्वी के भौतिक रूप को स्पष्ट कर वेदों के हिरण्यअण्ड के भौतिक (वैज्ञानिक) अर्थ को स्पष्ट कर दिया है। साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया है कि मूल द्रव्याणु (परमाणु आदि) ही पुराणों से सम्बन्धित विज्ञान है। इन पुस्तकों में दी गई वैज्ञानिक सामग्री को कुछ ही विद्वानों की तीक्ष्ण दृष्टि ने तत्काल पहचान लिया।

22. पुराणों का विज्ञान

वेदों के विज्ञान - विधा की बात ऊपर कर दी गई है। अब पुराण कथाओं के विज्ञान को कैसे चिन्हित करते हैं इस रहस्य से यहाँ पर पर्दा हटाते हैं।

एक उदाहरण लेते हैं - भगवान विष्णु का वाहन गरुड़ कहा गया है। लोक में गरुड़ एक पक्षी है। शरीर ब्रह्माण्ड के भीतर इस प्रकार का कोई पक्षी नहीं होता है। ऐसी स्थिति में गरुड़ के अध्यात्मिक स्वरूप वो हम कैसे देख सकते हैं अर्थात् हम गरुड़ शब्द ही दुहराते रहते हैं उसकी व्याख्या नहीं कर पाते हैं। हजारों वर्षों से यही क्रम चला आ रहा है। यह गरुड़ शब्द न तो अध्यात्म है, न विज्ञान की किसी यांत्रिकी (टेक्नालॉजी) का ज्ञान देता है। गरुड़ शब्द का अर्थ हम हजारों वर्षों से एक पक्षी ही लगाते आ रहे हैं। इस अवस्था में हम ऋषियों की उस वैज्ञानिक टेक्नालॉजी से वंचित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रह गये हैं जिसे उन्होंने पुराण कथाओं में छिपा रखा है।

गरुड़ का अर्थ हम लोक प्रचलित शब्द से सहजता से कर लेते हैं। 'गर' का अर्थ गरल = विष = कूड़ा कर्कट = अथवा धूल आदि द्रव्य हैं + 'उड़' का अर्थ उड़ना अर्थात् आकाश की ओर प्रवाहित होना या जाना है। जब गरूड़ पक्षी उड़ता है तो उसके उड़ने से जल, धूल, घास आदि हल्की वस्तुयें उसके पखों के आकर्षण से आकाश की ओर उड़ते हुये जाती हैं।

अब अध्यात्मिक गरूड़ का वर्णन करते हैं। पक्षी का स्वाभाविक गुण है आकाश में उड़ना। आकाश में जब पतीली के चावल का उफान उड़ता है तो उसमें तीन द्रव्यों के विशेष गुण होते हैं पहला जल, दूसरा वायु और तीसरी अग्नि। पक्षी को पुराणों में अग्नि स्वरूप बताया गया है जैसे गर्म भाप वायु का बल पाकर आकाश में उड़ जाती है। अग्नि शरीर के भीतर, जल और वायु में मिश्रित रहती है। वहाँ पर लोक की अग्नि की तरह अलग से केवल अग्नि ज्वाला के रूप में नहीं होती है। इस प्राकृत लोक में जैसे गरुड़ अपनी विशेष यांत्रिकी और टेक्नीक से आकाश गमन करता है। उसी प्रकार की विशेष टेक्नालॉजी से शरीर ब्रह्माण्ड में कल्पित गरुड़ विष्णु को अपनी पीठपर बैठा कर वैकुण्ठ लोक को उड़ता है। अग्नि से संपृक्त द्रव्य (रज, धूल आदि) जो पृथ्वी के लिये गर (असह्य, भारी) हो जाते हैं वे प्रणायाम की रेचक क्रिया में वायु के साथ आकाश में उड़ जाते हैं। यही गर + उड़ = गरुड़ कहा जाता है। शरीर में वायु मिश्रित भाप और भोजन के सूक्ष्म कणों को ही 'धूल' कहते हैं।

यह कथा का संक्षिप्त रूप है। शरीर ब्रह्माण्ड की सम्पूर्ण टेक्नालॉजी इन दोनों क्रियाओं को एक साथ संपन्न कर देती हैं। प्राणायाम की रेचक क्रिया में अग्नि, जल (भाप) और गर्मवायु, पृथ्वी (आधार) चक्र में स्थित अधिक रसों को अथवा परिपाक को ऊपर के आकाश में उछाल देती है, इसी को गरुड़ का आकाशमन कहा जाता है। विष्णु का स्वरूप, विष्णु व्याप्नोति, (सर्वत्र/सबमें) व्याप्त विराजमान द्रव्य का सार है। इसलिये गरुड़ में भी विष्णु ही समाये हैं अतः दोनों शब्दों का एक ही अर्थ है। इस गरुड़ में ही पोषक तत्त्व विष्णु, समाये या बैठे रहते हैं। गरुड़ यांत्रिकी का स्थूल तत्व है। जो रेचक के माध्यम से बाहर निकल जाता है। उसके साथ कुछ अंश विष्णु तत्त्व

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भी जाता है। शरीर के भीतरी ब्रह्माण्ड की सापेक्षता में इसी बाहरी ब्रह्माण्ड को वैकुण्ठ कहा जाता है। विष्णु व्याप्त तत्त्व (पदार्थकी सूक्ष्म उर्जा) है उसका कुछ अंश सम्पूर्ण शरीर ब्रह्माण्ड में वहाँ की रक्त प्रणाली एवं अन्य यांत्रिक टेक्नीकों से संप्रसारित होकर कर सर्वत्र व्याप्त (पोषक तत्त्व के रूप में) हो जाता है। इसी आधार पर विष्णु की निरुक्ति 'विष्णु व्याप्नोति' (जो सर्वत्र व्याप्त है वह विष्णु है) कहा गया है। इस विवेचन से हमें ज्ञान हो गया है कि विष्णु का व्याप्त स्वरूप क्या है? अन्यथा केवल व्याप्त अमूर्त रूप ही हमारे ध्यान में आता है। अब स्पष्ट हो जाता है कि व्याप्त गुण अध्यात्म है तथा स्थूल रूप द्रव्य से सम्बन्धित है। यही विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय है। दूसरे शब्दों में विज्ञान (यांत्रिकी) से ही व्याप्ति का गुण (पोषक गुण) उत्पन्न होता है। यह भी विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय है।

इस प्रकार हमारे शरीर ब्रह्माण्ड में गरुड़ की पीठ पर बैठ कर उड़ने वाले विष्णु भगवान के विज्ञान स्वरूप की व्याख्या कर यह बता दिया है कि पुराण विज्ञान के रहस्यों को छिपाये हुये हैं। अब यह भौतिक वैज्ञानिकों का कार्य है कि वे गरुड़ और विष्णु की यांत्रिकी को मूर्त रूप देकर किस रूप में इस धरती के लोगों का हित साधने के लिये बना देते हैं।

यहाँ पर विष्णु शब्द के साथ व्याप्ति का जो गुण है वही लोक हित का दर्शन है। इसका तात्पर्य है कि वैज्ञानिकों को लोक के लिये ऐसे आवागमन के साधनों की टेक्नालॉजी विकसित करनी चाहिये जो सभी मनुष्यों के हितों की पूर्ति करने वाले व्याप्ति गुण से युक्त हो। जब इस सिद्धान्त के अनुरूप राज्य कार्य करेंगे तो सभी लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति होकर व्यवस्था बनी रहेगी। यदि लौकिक टेक्नालॉजी में व्याप्ति गुण का अभाव होता है तो संसार में वैसी ही स्थिति बन जाती है जैसी आज के युग में बन गयी हैं कुछ लोग विष्णु तत्त्व से वंचित हैं और कुछ लोग विष्णु तत्त्व को अपनी तिजोरियों में भर कर उसके व्याप्ति गुण पर बंधन लगा कर उसे कारागर[1] में डाल दिये हैं। जब समाज में व्याप्ति गुण नहीं रहते हैं तो अराजकता स्वतः उत्पन्न हो जाती है।

---

1. रावण ने देवताओं को बंदी बना लिया था, कंस ने देवकी और वसुदेव को कारागार में डाल दिया था। परिणाम हम सब जानते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस प्रकार इस कथन के माध्यम से यहाँ पर भौतिक विज्ञान के द्रव्य जगत, उसकी टेक्नालॉजी, क्रिया तथा उसके दर्शन की व्याख्या भी कर दी गयी है। अबः यह राज्य, समाजविज्ञानियों, वैज्ञानिकों, दार्शनिकों आदि का कार्य है कि वे विष्णु के इस शाश्वत स्वरूप का राज्य और समाज के हित में किस प्रकार उपयोग करते हैं।

महात्म्य -

पुराणों की शैली में अब हम इस विश्लेषण अथवा ज्ञान की उपयोगिता और इसका पालन न करने पर हानि को कहते हैं। इसी को पुराण महात्म्य कहते हैं। जो लोग इस कथा को प्रतिदिन पढ़ते हैं उन्हें सुख समृद्धि प्राप्त होती है। यह पुराणों की भाषा है। इस विज्ञान की कथा के अनुरूप राज्य की यांत्रिकी का संचालन किये जाते रहने राज्य में सुख-शांति बनी रहती है तथा इस यांत्रिकी और इसके सार्वभौम दर्शन के अनुरूप प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहती है। यही कथा पढ़ना अर्थात् उसको प्रत्यक्ष धरती पर उतारना है। जो लोग इस कथा की उपेक्षा करते हैं वे घोर नरक में जाते हैं। यह भी पुराण शैली है। इसका तात्पर्य होता है जो राज्य इस कथा की वैज्ञानिक यांत्रिकी और साधनों का उपयोग नहीं करते हैं उनकी गति वर्तमान राज्यों की नरक जैसी हो जाती है। श्राप की इस स्थिति को आज हम सभी भोग रहे हैं इसमें कुछ अधिक विवेचना की आवश्यकता नहीं है।

अब भारतीय पांडित्य बताये कि वे अपनी श्रेष्ठ विद्या बुद्धि का ढोल बजाते रहने के अतिरिक्त क्या किये हैं? आज का और अधिक प्रबुद्ध वर्ग वैदिक एवं पौराणिक ज्ञान-विज्ञान का लाभ सब तक पहुँचने में क्यों सफल नहीं हो पा रहा है?

मैं इसका दो संक्षिप्त उत्तर देता हूँ - एक अहंकार! मुझसे बड़ा विद्वान कौन?

23. Sir (सर) -सिर/शिर-

अंग्रेजी का सर प्रत्येक छात्र और छात्रा जानते हैं। पहले तो प्राथमिक विद्यालयों में उपस्थिति के समय नाम पुकारते समय विद्यार्थी जी हाँ या यस सर कहते थे। अब सर्वत्र ही यस सर (हाँ श्रीमान् /जी श्रीमान्) बोलते हैं।

अंग्रेजी सर (Sir) का अर्थ है -बुद्धिमान, आदरणीय, ज्ञानवान, ज्ञानबृद्ध और सम्प्रभु। सर Sir शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए अंग्रेजी शब्द कोशों में यही कहा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गया है। शब्द मध्य अंग्रेजी से आया है। ME(मध्य अंग्रेजी में पुरानी फ्रेंच (OF) के Sire (सिर/सिरी) से आया है और पुरानी फ्रेंच का शब्द लैटिन senior से आया है। यूरोपीय भाषाविदों की शब्द व्युत्पत्ति इसी क्रम तक सीमित है। अंग्रजी के शब्द विज्ञानी तो लैटिन और ग्रीक शब्दों से अंग्रेजी के शब्दों की उत्पत्ति बताते हैं और इन शब्दों का अर्थ भी बता देते हैं। यह अर्थ किस पद्धति से निकलता है पश्चिमी भाषाविद् इसे नहीं बता पाते हैं।

शब्द व्युत्पत्ति की यह विधा यथार्थ में व्युत्पत्ति या निरुक्ति है ही नहीं।शब्द का विशेष अर्थ किस आधार पर व्युत्पन्न होता है यही वास्तविक व्युत्पत्ति है। यहाँ पर Sir (सर) शब्द का अर्थ ज्ञानवान, आदरणीय, श्रीमान् आदि किस आधार पर हो गया। इसका कोई संकेत यूरोपीय भाषाविदों से नहीं मिलता है।

भारत की विद्वता भी आपस में ही मुझसे बड़ा ज्ञान वृद्ध कौन? की भावना से त्रस्त रहती आयी है। यहाँ एक से एक पंडित हुए हैं उन्होंने अनेक पुरस्कार सरकारी और गैर सरकारी प्राप्त किये हैं अथवा यह कहना उपयुक्त होगा कि पुरस्कार बटोरे हैं, फिर भी वे स्वयं अंग्रेजी (सर) की व्याख्या करने में स्वयं को असमर्थ कहते हैं। जबकि उनके ज्ञान का अंधड़ कहता है सारा ज्ञान विज्ञान अंग्रेजी के अतिरिक्त और कहीं नहीं उपलब्ध है। इसके विपरीत भारत के देशी और परंपरागत भाषाविदों का मानना है संस्कृत ही सब भाषाओं की जननी है। हम लोग ढोल तो पीटते हैं परन्तु इसे प्रमाणित नहीं कर पाते हैं।

अपनी ही आलोचना इसलिये की जा रही है क्योंकि हम हमारे अपने ही ज्ञान से ठगे गये हैं। विद्वान हो या सामान्य व्यक्ति सभी एक सी शिक्षा प्रणाली के अभूर्तपूर्व ज्ञान से ज्ञानवान हुए हैं।भारतीय पुरुस्काराधिकृत विद्वता नई खोजों की उपेक्षा करने में सिद्धहस्त है। उसके अनुसार उनके ज्ञान के समक्ष सब कुछ अंधेरा है। हमारे इसी ज्ञान ने भारत को सदा से अंधेरे में रहने को बाध्य कर रखा है।

अब यहाँ पर उस तथ्य का उद्घाटन किया जा रहा है। जो विश्व के समस्त भाषाविदों और व्याख्याकारों के नये सिरे से सोचने के लिये प्रेरित करेगा अथवा विवश करेगा। यह उदाहरण एक है, परन्तु यही विधा सर्वत्र लागू रहती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब सर (Sir) का विवेचन करते हैं। लगभग साठ वर्ष पूर्व ही मेरे मन में यह बात उठी थी कि अंग्रेजी का सर (Sir) हिन्दी और कुमाऊँनी और अन्य भारतीय भाषाओं का सर = सिर, शिर है। भाषाविदों की अद्भुत विद्वत्ता को देखकर इसे निश्चयपूर्वक कहने का साहस नहीं होता था। भाषाविद् (अंग्रेजी, हिन्दी या अन्य भाषाओं के) यह नहीं बता पाने की स्थिति में हैं कि Sir में i शब्द का उच्चारण क्यों नहीं किया जाता है? यदि उच्चारण नहीं किया जाता है तो i (आइ) शब्द S और r के बीच में लिखने की क्या आवश्यकता है?

सत्य यह है कि अंग्रेजी का Sir कुमाऊँनी, हिन्दी और भारत की अन्य भाषाओं से लिया गया शब्द है। भारत में इसे सिर, सर या शिर कहा जाता है। पहले बता दिया है कि शरीर यांत्रिकी या शरीर ब्रह्माण्ड शब्दों के अर्थ का आधार और प्रयोगशाला है। अंग्रेजी एवं भारतीय पांडित्य यह बताने में संकोच करता है कि भारतीय सिर/शिर ही अंग्रेजी में सर बन गया है। लोक में 'सर' भी कहते हैं जैसे सर दुःख रहा है। शब्द वही हैं अंग्रेजी ने केवल इ (i) का उच्चारण नहीं किया है। प्राचीन शब्द वेत्ता जानते होंगे कि लिखने और उसे अनुच्चारित रखने से भविष्य में इसी आधार पर Sir (सर) का मूल ढूढ़ लिया जायेगा। मुझे प्रसन्नता है कि अंग्रेजी और यूरोपीय भाषाओं का मूल भारतीय भाषाओं में है। यदि इसे ये लोग मानने में हिचकते हैं तब इन विद्वानों को बताना होगा कि sir (सर) का अर्थ श्रीमान, माननीय, ज्ञानी, श्रेष्ठ किस प्रकार हो गया है? क्या ईश्वर ने सर बोला और उसके सभी अर्थ अंग्रेजों के पूर्वजों के मस्तिष्क में गूँज गये? स्वयं को विश्व के भाषाशास्त्रियों के पूर्वज मानने (यथार्थ में गाल बजाने) वालों को भी इस प्रश्न का उत्तर देना होगा अन्यथा उन्हें व्यर्थ ही स्वयं की विद्वत्ता का ढ़िढ़ोरा पीट कर अपनी भद्द करने से बचना होगा।

मुझे पता है कोई भी प्रकाण्ड विद्वान यह बताने की स्थिति में नहीं है कि अंग्रेजी का Sir (सर) शब्द भारत की अनेकों भाषाओं का सिर/शिर शब्द है।

23.1 शिर/सिर का Sir 'सर' कैसे बन गया?

मानव शरीर में शिर/सिर पांचों तत्त्वों का प्रतिनिधित्व करता है। सिर/शिर में पंचमहाभूत के गुणों का प्रत्यक्ष ज्ञान करने के लिये प्रकृति ने पांच उपकरण लगाये हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इन उपकरणों को आज हम एन्टेना कहते हैं। कान, आकाश तत्त्व के प्रतिनिधि हैं, आंख तेज (अग्नि) की क्रियाओं का संचालन करते हैं, ओंठ वायु के स्पर्श गुण का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिह्वा जल के रस और अग्नि दोनों गुणों का प्रतिनिधित्व करती है और नाक पृथ्वी तत्त्व (गंध) को धारण करती है। इसके अतिरिक्त मस्तिष्क, अहंकार, मन और बुद्धि तीनों की क्रियाओं को सम्पन्न करता है। इस प्रकार शिर या सिर (Sir) अष्टधा प्रकृति (गीता 7:4) के गुणों का ईश्वर प्रदत्त स्थूल रूप है।

शिर भौतिक रूप भी है और गुणों के आधार पर विशेषण (adjective) का रूप भी ग्रहण कर लेता है। अब हम तुलना करते हैं। अंग्रजी पंडितों ने शिर को ही सर कह कर उसका गुणात्मक रूप में अर्थ लिया है परन्तु मूल उच्चारण सिर को (Sir) ही रहने दिया। इससे यह बात प्रमाणित हो जाती है कि शिर या सिर (स्थूल) रूप को भाववाची गुणों की अभिव्यक्ति के लिये शिर/सिर को ही 'सर' बना दिया गया है। शरीर में शिर ही श्रेष्ठ, बुद्धिमान, विचारक होता है इसी कारण शिर का सर बना कर उसका अर्थ श्रीमान् 'बुद्धिमान' ज्ञानवृद्ध आदि हो जाता है।

बाईबल में Sir शब्द से सिराक/शिराक (Sirach) शब्द व्युत्पन्न है। बुद्धि और बुद्धिमत्ता (Wisdom) को शिराक (Sirach) पुत्र कहा गया है (Chambers Dictionary)। शिराक की व्युत्पत्ति है सिर/शिर (Sir) + आक (ach) = शिराक या सिराक। 'आक' का अर्थ अग्नि होता है। इसी को भारत में आच (आंच) भी कहते हैं। सिर में जब रसों-रसायनों से तीव्र अग्नि (आक, ach) उत्पन्न होती है, तो उसी को 'बुद्धि' (Wisdom) कहते हैं। यह बुद्धि ही आक/अग्नि ach का शमन कैसे किया जाय इसके उपाय बताती है।

24. इस्लाम

विश्व के महापंडित हजारों वर्षों से अज्ञान के रौरव नरक को ही स्वर्ग समझ कर अपने-अपने शास्त्रों का अर्थ और व्याख्या करते आ रहे हैं। ये ज्ञानी स्वयं तो नरक में पड़े रहे इन्होंने विश्व को भी नरक में धकेलने में महती भूमिका निभायी है। 'इस्लाम' अरबी भाषा का शब्द है।

अन्य देशों के भाषाविदों को छोड़ दें तो भी भारत के व्याकरणाचार्य इस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लांछन से किसी भी तरह बच नहीं सकते हैं। क्यों?

इस क्यों का उत्तर है कि भारत के पूर्वाचार्यों जैसे पाणिनी के अष्टाध्यायी में एक सूत्र है 'रलयोऽर्भेदः'। इस सूत्र का अर्थ है र और ल में कोई भेद नहीं है। एक ही शब्द (द्रव्य) को कोई ल कहता है तो इसी को कोई र कहता है। यह सूत्र क्यों बनाया गया है? इसका विज्ञान कोई विद्वान नहीं बता पाता है। यदि यह सत्य कह दिया जाता है तो पाणिनी कुल आग उगलने लगता है।

जल का तापमान शरीर के बाहर कम होता है। जब यही जल शरीर में जाता है तो ऊष्मा को सोख लेता है, इसमें अग्नि का प्रभाव अधिक हो जाता है तब यह र अर्थात् अग्नि का वाहक बन जाता है अन्यथा यह जल ही रहता है। ल जल का प्रतीक है। इस प्रकार शरीर के भीतर जल में दोनों तत्त्व सदा होते हैं अतः इन्हें जल (ल) कहें या जर (ना) = अग्नि (र) कहें उनके स्वरूप में कोई भिन्नता नहीं आती है।

इस्लाम के अध्येता इस रहस्य से अपरिचित हैं। वे इसे जानना भी नहीं चाहते हैं इस कारण उनका ज्ञान विश्व को आज भी अन्धकार की ओर ले जाता है।

संस्कृतज्ञों की मति इस्लाम के ल को र में परिवर्तित कर इस्लाम को इस्राम बनाने से संकोच करती है। शब्द ब्रह्म का विज्ञान हमें बताता है कि 'इस् राम' ही 'इस्लाम' भी कहा जाता है। इस् /इश् अर्थ है द्रव्य का सूक्ष्म या मृदु रूप। पृथ्वी आदि पंचमहाभूत स्थूल हैं। इनके भीतर जो सूक्ष्म पोषक तत्त्व या रस हैं वही इस् या इश् कहलाते हैं। आज की भाषा में इसे हम अग्नि-सम्पृक्त या आक्सीडाइज्ड द्रव्य कहते हैं। जैसे जल का वैज्ञानिक नाम हाइड्रोजन आक्साइड है। इसी जल में सभी अन्य महाभूत घुले रहते हैं। यही जल (इस/इश/ईश/या ईसा) सबका पोषक और अमृत समान होता है। इसलिये इसे ईश्वर/ईशा, इस्लाम और ईशु कहा जाता है। इसी आधार पर इन सब शब्दों का अर्थ सबका जन्मदाता, रक्षक या सहायक किया जाता है।

अब हमें अपने मस्तिष्क को कम्प्यूटर की तरह बना लेना होता है। ईश्वर, ईशा, ईसा, ईशु का एक नाम विष्णु भी है। विष्णु सहस्रनामावली में देखें तो वहाँ पर विष्णु को ईश्वर भी कहा है। विष्णु के अवतार राम हैं। राम सूर्यवंशी हैं। सूर्य में जो तेज (फोटान) होते हैं उन्हीं को इस/ईसा/या ईशु कहा जाता है। यही स्थिति "दलाईलामा"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की है। दलाई को दराई करें तो इसका अर्थ होता सूक्ष्म करना। द्रव्य के सूक्ष्मीकरण से ही प्रकाश (जीवन और विस्तार) उत्पन्न होता है। विस्तार का नाम ही लामा/लाम् या लाम है। जब सूर्य का उद्दाम असह्य रूप किरणें (प्रकाश, इस्/इश्) के रूप में विस्तार (लम्बायमान) होती हैं तो शांति और पोषण गुण के कारण प्रसन्नता का आविर्भाव होता है। इस्लाम का अर्थ भी शांति, शांति चाहना, शांति देने वाले के साथ रम जाना उसको, सिर झुकाना आदि है।

इसी तरह शब्द ब्रह्म का भाव है कि 'इस राम' और 'इसलाम' समानार्थक शब्द हैं। दोनों में किंचित अन्तर नहीं है। अब प्रश्न पुनः उठता है कि जब इन शब्दों का एक ही अर्थ है तो विश्व के महान व्याख्याकारों और स्वयं को चोटी में बैठी विद्वत्ता के अधिपतियों द्वारा क्यों ईश्वर, राम और (इस/ इश् से व्युत्पन्न) इस्लाम को एक दूसरे का कट्टर शत्रु बना दिया है?

25. राम और अल्लाह का विज्ञान स्वरूप

राम वह तत्त्व है जिसमें सभी 'रम' जाते हैं। जब प्राणी क्षुधा (भूख) से व्याकुल होता है तो अन्न मुख में जाते ही शरीर ब्रह्माण्ड स्थित सभी जीव (सूक्ष्म जीवाणु/रक्त कण आदि) इसी अन्न में रम जाते हैं उनमें पोषण, आशा, उत्साह और पूर्ण शांति का संचार हो जाता है। विज्ञान की दृष्टि से मूल द्रव्य पंचमहाभूत हैं। पृथ्वी में पांचों तत्त्वों (महाभूतों) का वास है। प्राणी अन्न खाता है। अन्न का उत्पादन मिट्टी से जिस विज्ञान (प्रक्रिया) से होता है वह पांचो महाभूतों का 'सार', इस् या इश् कहा जाता है। इसे हम उदाहरण से समझते हैं। वृक्षों, पौधों में जो रस बनते हैं वह सूर्य, वायु, जल, पृथ्वी तत्त्व और आकाश के संलिष्ट रसायनीकरण से ऊष्मित होकर बीज, दाने या फल का रूप ले लेते हैं। इसी को अग्नि दग्ध, कार्बन प्रधान इस् /इश् कहते हैं। विज्ञान की शब्दावली में हम इसे (आक्सीकृत द्रव्य) कहते हैं। यह इस् का स्थूल रूप है, यथार्थ इस्/इश् इस अन्न या फल में निहित पोषक तत्त्व है जो प्राणी को जीवन दान देता है।

उसी तत्त्व को पाकर शरीर के भीतर स्थित जीव उसी में रम जाते हैं और स्वयं के पृथक् अस्तित्व को भूल जाते हैं। इसी इस् या इश् का एक नाम श्री (धन, संपदा पोषक सत्ता) भी है। भारतीय मनीषियों ने 'इस् राम' न कह कर 'श्रीराम' कहा है। अरबी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मनीषियों ने 'इस्' राम के स्थान पर इसलाम कर दिया है। इस् को नहीं बदला है परन्तु 'राम' के 'रा' को परिवर्तित कर उसे 'ला' कर दिया है। प्राचीन लोग इसी तरह की पहेलियों का आविष्कार करते रहते थे। यही बात महाभारत में महर्षि व्यास ने कही है उन्होंने श्लोकों में ऐसी ग्रन्थि लगायी है कि उसका अर्थ खोलना सबके लिये सहज नहीं है।

पाणिनि व्याकरण के अनुसार 'र' और 'ल' दोनों शब्दों का समान अर्थ होता है। यह शाश्वत सिद्धान्त है। ऊपर इसके विज्ञान का वर्णन कर दिया गया है। अतः जो अर्थ 'श्रीराम' का होता है वही अर्थ इसलाम् का होता है। इसका अर्थ है इस् की प्राप्ति से शरीर के जीव उसी में आराम करने लगते हैं अथवा निश्चिंत होकर लम्बायमान हो जाते हैं (लेट जाते हैं)। यह अर्थ शरीर ब्रह्माण्ड अर्थात् शारीरक भाष्य अथवा शरीयत (शरीर विज्ञान, शरीर यांत्रिकी) के आधार पर किया जा रहा है। इस्लाम के व्याख्याकार 'शरीयत' के विज्ञान स्वरूप को समझने से इनकार कर देते हैं। घोर अहंकार से उत्पन्न इस अज्ञान की दवाई लुकमान के पास भी नहीं है।

भूटान, भारत और तिब्बत (अब चीन) की सीमा में एक स्थल का नाम डोक लाम है। लाम का यहाँ अर्थ है विश्राम स्थल जहाँ पर अनेक दिशाओं से आने वाले अपने सामान (डोक, कंडी) को रखते हैं और विश्राम कर अपनी-अपनी वस्तुओं का अदान प्रदान करते हैं। इस 'लाम' शब्द में निहित अर्थ और इस + लाम के लाम शब्द का अर्थ समान है। डोकलाम के 'लाम' का अर्थ विश्राम, शांति एवं पोषण सामग्री की प्राप्ति (अदान-प्रदान) है। यही अर्थ इस्लाम का और श्रीराम अथवा राम का है।

इस् /इश् द्रव्य में निहित अमूर्त जीवनी शक्ति है। शरीर में रासायनिक क्रियाओं से यह इस् /इश् उत्पन्न होता है। इसकी ऊर्जा (जीवनी शक्ति) पोषण में लग जाती है, शेष स्थूल धुआँ या कालिख में बच जाता है। कुमाऊँनी में धुए और कालिख को इश् या इश्शो/इस्सो/मस् / मस्सो भी कहते हैं। इन्हीं मूल धातुओं से ईश, इस्लाम, ईशा, ईसा, मसीह (ईसा मसीह) शब्द व्युत्पन्न हो जाते हैं।

भोजन पकता है तो अग्नि युक्त धुआँ और उबलते चावल की भाप कुटी की छत पर कालिख, मस्, इस् के रूप में जम जाती है। उसका एक नाम ध्वाँर (धुआँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

+ र = अग्नि से उत्पन्न इस् /मस् /इश्) भी है।

कुरान में कहा गया है सब कुछ अल्लाह का है (2:29,3:2, 3:129) । कुरान के अनुसार जब सब कुछ अल्लाह का है तो भौतिक, स्थूल, दृश्य एवं मूर्तिमान जगत अल्लाह से भिन्न किस प्रकार हो सकता है? दूसरे शब्दों में कहा जा रहा है कि सम्पूर्ण ईशा (ईश्वर, येसु, इस्लाम, ईश (श्री राम या इस्लाम) का ही स्वरूप है। यदि इस्लाम के विद्वान पुराण[1] की परिभाषा का गूढ़, अध्ययन, मनन, चिंतन करें तो उनकी सूक्ष्म चेतना स्वयं बता देगी कि यह विवेचन विज्ञान ही है।

विश्व का पांडित्य इस पर विचार करे? अपने अन्धकारावृत्त व्याख्याकारों को विज्ञान के लेप से प्रकाशित कर विश्व के कल्याण में अपना योगदान दें तो हम सब उनके कृतज्ञ होंगे।

सार बात यह है कि भाषा पांडित्य को, शब्दों की विज्ञान सम्मत व्याख्या कर युगों-युगों से चली आ रही विद्वेषवादी अवैज्ञानिक व्याख्याओं को समाप्त करने हेतु नवीन व्याख्याओं को, सामान्य व्यक्तियों के मार्गदर्शन के लिये, रखना आवश्यक है। आधारभूत विचार, दर्शन या सिद्धान्त के बिना कोई भी समाज अपने पूर्ववर्ती विचारों और अभ्यास (आदतों) को छोड़ नहीं सकता है। अतः प्रत्येक को इस क्षेत्र में आगे आने का उत्साह स्वयं में लाना ही होगा।

26. Noon (नून/दोपहर) : नून = नमक

अंग्रेजी शब्द नून का अर्थ दोपहर होता है। विश्व के भाषाविदों यहाँ तक कि वर्तमान के शीर्ष वैज्ञानिकों और विश्व के शीर्ष पांडित्य को भी यह ज्ञात नहीं है कि 'नून' का अर्थ दोपहर किस प्रकार होता है?

पुनः हम कुमाऊँनी शब्दों की ओर अपना ध्यान देंगे। कुमाऊँनी में नून का अर्थ नमक होता है। कुछ इसे लूण कहते हैं। भारत की अन्य भाषाओं में भी नून का अर्थ नमक होता है। जब से मैं कक्षा 6 में पढ़ता था अंग्रेजी noon = दोपहर शब्द आते ही मेरे मस्तिष्क में कुमाऊँनी नून (नमक) शब्द आ जाता था। इस पर मंथन करते-

---

1. पुराण शब्द की विस्तृत व्याख्या के लिये देखें - वेद पुराण बाईबल कुरान का रहस्यमय संसार, पूर्वार्ध एवं उत्तरार्ध, ले0 हरिदत्त शर्मा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करते अंत में इसके रहस्य का ज्ञान हो गया कि नून को अंग्रेजी में दोपहर क्यों कहते हैं। वर्तमान में सभ्य होने संस्कारित होने की होड़ में कुमाऊँ में नून के स्थान पर नमक शब्द का प्रयोग करने लगे हैं। यदि कुमाऊँनी में नमक के लिये नून नहीं बोला जाता तो तुलनात्मक भाषा शास्त्र में नून (नमक) और noon (दोपहर) के विज्ञान को खोलना कठिन ही होता है। भोजपुरी, अवधी, ब्रज, नेपाली आदि भाषाओं में पुराने लोग नून (नमक) शब्द का प्रयोग करते थे अब यहाँ भी सभ्य होने की होड़ में इन भाषाओं से नून शब्द विलुप्त होता जा रहा है।

पहले अनेकों बार बताया गया है कि शरीर ब्रह्माण्ड ही शब्द व्युत्पत्ति की वैज्ञानिक प्रयोगशाला है। प्रत्येक व्यक्ति भोजन के साथ नून खाता है। जब सूर्य (अन्न) नाभि के पास पहुंचता है तो नमक में अन्य रसायन मिलने से ऊष्मा का उत्सर्जन अधिक मात्रा में होने लगता है। उससे सूरज की किरणों की तरह तीव्र ताप निकलने लगता है। नून के इसी ताप उत्सर्जन के कारण नून का अर्थ दोपहर हो गया। जब नाभि से नीचे को सूर्य (भोजन) बढ़ता है तो उसकी रासायनिक क्रिया मन्द होने से ताप उत्सर्जन भी धीमा हो जाता है। नाभि की त्रिबली में ऊपर कर्क रेखा से दक्षिण (मकर रेखा) की ओर गमन करते समय मध्य बिन्दु (विषुवत रेखा) पर रासायनिक ऊष्मा (नून के कारण) अधिक बनती है उसी से नून noon का अर्थ दोपहर हो गया है। भोजन (सूर्य या सूर्यवंशी राम) उत्तर से दक्षिण को ही जाते हैं। दक्षिण में लंका विजय के पश्चात् वे (सूर्य) रसों के रूप में पुनः चक्रीय गति से पश्चिम से उत्तर पूर्व में प्रकट हो जाते हैं। इसी आधार पर प्राचीन विद्वानों ने सूर्य का पृथ्वी के चारों ओर घूमना कहा है। अध्यात्म में दिशा निर्धारण शरीर ब्रह्माण्ड की क्रियाओं के आधार पर होता है। जो लोग इसे नहीं जानते हैं वे अध्यात्मिक सूर्य के परिभ्रमण चक्र को नहीं जान सकते हैं। भारत में भी लोक में यही माना जाता था। चूंकि भारत के मनीषी हजार मतों में एक ही तत्त्व (विज्ञान) का निवास मानते थे। इसी कारण यहाँ पर यूरोप की तरह का जड़त्व नहीं था। इसका परिणाम यह रहा कि यूरोप में अज्ञानता के घनत्व के कारण वैज्ञानिकों को मृत्यु का ग्रास बनना पड़ा। भारत में ऐसा नहीं हुआ क्योंकि यहाँ सभी विधाओं (अध्यात्म, ज्योतिष, आयुर्वेद, लोक आदि) क्षेत्रों के लिये एक ही शब्द के अलग-अलग अर्थ हो जाते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इसके अतिरिक्त 'योग वासिष्ठ' में अनेकों ब्राह्मणों के होने और उनके एक दूसरे से भिन्न या विपरीत नियमों का भी वर्णन है। इसे लोग जानते रहे हैं इसी कारण यहाँ भारत में यूरोप एवं अरब जगत की तरह की क्रूरता पनपने नहीं पायी। हालांकि इन सभ्यताओं के संसर्ग में आने पर संसर्ग दोष के कारण भारत में भी मानवीय गुणों में राक्षसों का आधिपत्य हो गया, जो आज भी यथावत है।

अरबी भाषा में 'नून' का अर्थ मछली (fish) होता है। इसका यह भाव(अर्थ) नहीं कर लेना चाहिये कि 'नून' का अर्थ मछली होने से अरबी का नून शब्द अंग्रेजी और भारतीय 'नून' से भिन्न है। इन तीनों शब्दों का मूल (सत) एक ही है एकं सत विप्रा बहुधा वदन्ति। सत्य (नून, नमक, salt) एक है परन्तु विप्र (विद्वान) अर्थात् अग्नि की भिन्न-भिन्न क्रियाओं के कारण उस एक सत्यके अनेक अर्थ हो जाते हैं। नून का मछली अर्थ करना भी विज्ञान सम्मत है। यहाँ पर (अध्यात्म या शरीर ब्रह्माण्ड में) मछली के गुणों को आधार बना कर उसका मूल 'नून' (द्रव्य) को माना है। जिस प्रकार मछली समुद्र में लहरें उठाती है, उसमें ऊर्जा तरगें उत्पन्न कर देती है, उसी प्रकार नून भी शरीर में रासायनिक क्रिया से ऊर्जा तरंगें उत्पन्न कर देता है। इसी समानता से नून का अर्थ मछली हो गया है।

Noon का अर्थ दोपहर किये जाने का एक और प्रमाण ओल्ड टेस्टामेंट (बाईबल) से दिया जा रहा है। Numbers (गणना ग्रन्थ) Num13 : 16; 14: 6; 27: 18 तथा Deut 34:9 में Joshua जोशुआ को "Joshua the son of Nun" (नून पुत्र जोशुआ) कहा गया है। जोशुआ = जोश = ऊष्मा, उमंग, बल, अग्नि को धारण करने वाली सत्ता है। दोपहर में तपन (गर्मी) बहुत होती है। अतः हिब्रू Nun भारतीय नून शब्द एक ही हैं, यही अंग्रेजी में noon बन गया है। इस उदाहरण से एक शब्द के अनेक अर्थ कैसे हो जाते हैं, इसका विज्ञान स्पष्ट कर दिया गया है। इससे यह भी स्पष्ट कर दिया है कि ओल्ड टेस्टामेंट भी पुराण गाथाएं हैं। इसमें भी पुराणों की तरह नून (Nun) को व्यक्तिवाची बना कर उसके पुत्र को जोशुआ कहा गया है। Joshua की व्युत्पत्ति है - जौ (जव) + शुआ = जौ द्रव्य का उफान बनकर शुआ (पक्षी) की तरह आकाश में उड़ जाना। जब इसका योशुआ उच्चारण करते है तो जव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के स्थान पर यव हो जाता है। स्पष्ट है कि हिब्रू जैसी कठिन मानी जाने वाली भाषा के शब्दों की व्युत्पत्ति हम कुमाऊँनी या भारत की अन्य भाषाओं के आधार पर सरलता से कर सकते हैं इससे प्रमाणित होता है कि अंग्रेजी की तरह हिब्रू भाषा (Hebrew Language) का मूल भी भारत है।

27. उतिल (Util/Utel)

अपनी पुस्तक 'शब्द विज्ञान' में मैंने कुमाऊँ में उतिल नाम के एक व्यंजन (पकवान) का यूरोपीय भाषाओं में utencil (बर्तन) अर्थ बन जाने की बात लिखी थी। बात विद्वानों के गले नहीं उतरी। किसी ने प्रश्न उठाने का प्रयत्न भी नहीं किया विद्वानों का पांडित्य अपने ही कुण्डों में उछालें मारता रहा। इसे लिखे सोलह वर्ष हो गये हैं। यदि गंभीरता से इस अनुसंधान पर रुचि जगाई होती तो अब तक सभी क्षेत्रों में विज्ञान का स्वरूप स्पष्ट हो गया होता। ऐसा नहीं हो सका, इसे समय/काल की इच्छा मान कर ही संतोष कर लेना पड़ता है।

उतूल शब्द पारस्कर गृहस्थसूत्र (3/7) में उतूल परिमेह प्रक्रिया में आया है। यह च्यूड़ा जैसे खाद्य पदार्थों में प्रसिद्ध व्यंजन है। इसके अन्य नाम हैं- उलित/उतील, उत्यौल, त्यौल।

उतिल शब्द का अर्थ बर्तन किस आधार पर बना है? मुख्य विषय यही है। पुनः शरीर यांत्रिकी की शरण लेते हैं। उतिल का प्रत्येक दाना तथा ग्रास स्वयं एक बर्तन का रूप लेता है उसी का आकार (स्वरूप/ढांचा) बर्तन है क्योंकि उसी में सभी पौष्टिक द्रव्य भरे हुए रहते हैं। उतिल खाया जाता है अंत में उससे लार बनती है।यही लार शरीर ब्रह्माण्ड में बर्तन (भाण्ड) का रूप ले लेती है क्योंकि बाहर से जो अन्न आता है वह इसी बर्तन में रखा जाता है। इसी आधार पर उतिल (util/utel) से लैटिन, फ्रैंच और अंग्रेजी के utensil (=बर्तन, भाण्ड) तथा उससे व्युत्पन्न अन्य शब्द और उनके अर्थ निष्पन्न हुए हैं। जैसे utility (यूटीलिटी = उपयोगी, तुष्टिगुण), utilize (यूटीलाइज= काम में लाना, उपयोग करना) आदि।

इस गवेषणात्मक विवेचन से स्पष्ट है कि यूरोपीय भाषाओं का मूल भारत है। अब भारत की विद्वत्ता की आँखे ही बंद हैं तो कौन क्या कर सकता है?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकरण के विस्तार के लिये देखें शब्द विज्ञान (विश्व भाषाओं की कुमाऊँनी आधारित व्युत्पत्ति) प्रथम खण्ड- हरिदत्त शर्मा, पृष्ठ 3-6।

28. Magistrate : मैजिस्ट्रेट या मजिस्ट्रेट

हम भारत के लोग स्वयं को प्राचीनतम सभ्यता और संस्कृति के अवतार मान लेते हैं। किस रूप में भारतीय संस्कृति का विस्तार विश्व में हुआ है इसे हम जानते ही नहीं हैं। हम उतना ही जानते हैं जितना यूरोप के विद्वान हमें बताते आये हैं।

हम मैकाले को कोसते हैं कि उसने अंग्रेजी भाषा और व्यवस्था को लागू कर भारतीयों को उसका गुलाम बना दिया है। तब मैकाले को भी यह बात ज्ञात न थी कि भारतीय लोक भाषाएं ही यूरोप में जाकर अंग्रेजी, फ्रेंच, लैटिन, ग्रीक आदि के रूप में विकसित हुई है।[1] अतः इस बात में गोरे और काले अंग्रेजों में समानता है कि दोनों ने भाषा के नाम पर अंधों की तरह लाठियां चलाई हैं। दोनों ही स्थितियों में विधि (law) के नाम पर सामान्य व्यक्तियों का घोर उत्पीड़न हुआ है और हो रहा है।

यहाँ पर संदर्भ के अनुरूप हम कुमाऊँनी, हिन्दी, अवधी, भोजपुरी, बंगला, राजस्थानी, अवधी, संस्कृत आदि भाषाओं में प्रयुक्त मांझी शब्द की बात करते हैं। विद्वान भाषाविद अपनी चेतना को सूक्ष्म क्यों नहीं बना पाते हैं? यही सबसे बड़ी समस्या विश्व भर के प्रत्येक क्षेत्र के पांडित्य की है। जब मैं कहता हूँ कि भारतीय भाषाओं के दो शब्द मांझी या माजी Magi और तरात trate यूरोप में जाकर योग में पारंगत होकर भारत में माझी + स् + तरात अर्थात् Magi +s + trate माझिस्तरात या मैजिस्ट्रेट बन कर हम पर ही शासन कर, भारतीयों पर ही कोड़े बरसाने लगे तो हम उनके समक्ष नत मस्तक होकर उनकी उच्च सभ्यता का गुणगान करते रहे। हमारे प्रबुद्धजन इस बात को नहीं खोज पाये कि मजिस्ट्रेट शब्द भारत का अपना शब्द है। हम सभी अंग्रेजी मजिस्ट्रेटी रंगे सियार को अबूझ पहेली का पशु समझते रहे। आज भी भारत के मजिस्ट्रेट पशुत्व से बाहर नहीं आ पाये हैं। भारत में माजी और माझी दोनों उच्चारण होते हैं।

---

1. देखें - शब्द विज्ञान (विश्व भाषाओं की कुमाउनी आधारित व्युत्पत्ति) (प्रथम खण्ड) विश्व भाषाओं की रहस्यमय एकता, पृष्ठ 1-30, हरिदत्त शर्मा, सन् 2002 ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामचरित मानस में माझी ने राम को गंगा पार करा कर उन्हें संकट से पार कराया था और राम के प्रिय बन गये थे। जब से माझी /Magi महोदय माजिस्ततरात बन गये तो ये भारत में रंगे सियार बन गये। आज भी सम्पूर्ण भारत इनके रहस्य को नहीं जानता है।

यहाँ पर अधिक विवरण में न जाकर 2014 में लिखी पुस्तक 'अध्यात्म विज्ञान राजयोग = स्वराज (ले. हरि दत्त शर्मा), पृष्ठ 17-20 से Magistrate की व्युत्पत्ति को यथावत देते हैं-

28.1 Magistrate (माजीस/मागीस् + तरात्) का रहस्य

हम लोगों को अंग्रेजी के प्रति जो मोह और विजातीय होने का भ्रम है, दोनों बातें सही नहीं हैं। अंग्रेजी एवं यूरोप की अन्य भाषाओं का जन्म स्थान भारत है। हमारी सभी लोक भाषाओं में ग्रीक, लैटिन, फ्रेंच, जर्मन, इटालियन, अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्द जस के तस मिलते हैं।

"दो या दो से अधिक रसों (रसायनों) में रसायनीकरण की जो क्रिया होती है उससे उत्पन्न ध्वनि ही शब्द कही जाती है, विशद व्याख्या यहाँ नहीं दी जा रही है। इसका सारांश है कि क्रिया के कारण जो भाव और परिणाम उत्पन्न होते हैं वह उस शब्द का अर्थ होता है (निरुक्त)। इस प्रकार शब्द और विज्ञान दोनों में कोई अन्तर नहीं है। शब्द अमूर्त सत्ता है तो विज्ञान मूर्त सत्ता और क्रिया है। शब्द में ही विज्ञान की सम्पूर्ण क्रिया/प्रक्रिया निहित होती है। शब्द की इसी विशेषता के कारण मैंने अपनी तीनों पुस्तकों में शब्दों की व्युत्पत्ति दी है। इससे मुझे आश्चर्यजनक निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं। श्री अरविन्द ने भी इस तुलनात्मक विधा की यूरोपीय शैली का अनुकरण करने का प्रयत्न किया परन्तु उनके हाथ निराशा लगी। (वेद-रहस्य-पूर्वार्ध पृष्ठ 66; 87-97; उत्तरार्ध पृष्ठ 259-263)।

28.2 माझी से मजिस्ट्रेट -

"इस कथन की पुष्टि की पुष्टि में यहाँ पर कुछ उदाहरण दिये जाने आवश्यक प्रतीत होते हैं। अंग्रेजी शब्द है Magistrate (मैजिस्ट्रेट या मजिस्ट्रेट)। हम लोग इसे अंग्रेजी शब्द मान कर इसका बहिष्कार कर देते हैं। इसे भारतीय शब्द मानने के लिये सामान्य व्यक्तियों को तो छोड़ दें। विशिष्ट भाषाविद् , अनेकानेक सरकारी व

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गैरसरकारी अलंकरणों से विभूषित विद्वान भी इस सत्य को मानने के लिये अपनी रूढ़ परंपरा से बाहर जाने को तैयार नहीं होते हैं। सभी लोग यह प्रश्न करने लगते हैं कहां भारत और कहां सात समुद्र पार का इंग्लैंड? दोनों के शब्द एक से कैसे हो सकते है?[1]

"मजिस्ट्रेट (Magistrate) का उच्चारण 'माजिस्तरात' (Magis+trate) या माझिस् + तरात् करें तो स्पष्ट हो जाता है कि यह शब्द भारत में सर्वत्र प्रयुक्त होता है। हिन्दी, बंगला, अवधी, ब्रज, भोजपुरी, नेपाली , कुमाऊँनी, गढ़वाली आदि अनेक भाषाओं में यह शब्द है। हम 'माजी' या 'माझी' दोनों शब्दों का प्रयोग करते हैं। Magi का अंग्रेजी उच्चारण माजी ही है। यही शब्द भारतीय भाषाओं में भी है। (स्) शब्द क्रिया (करना) का अर्थ व्यक्त करता है। कुमाऊँनी, गढ़वाली, गुजराती या बंगला का 'छ' शब्द ही अंग्रेजी का (स्) है। अंग्रेजी का (ट्रेट) शब्द हिन्दी का तरात या तराते है। भोजपुरी और अन्यत्र इसे हम तरातई कहते हैं। इसका तराति उच्चारण भी लोक में मिलता है। इस प्रकार मजिस्ट्रेट का पूरा अर्थ या भाव होता है माझी जो (संकटों) से तराता है या पार कराता है, वह माझिस्तरात या मैजिस्ट्रेट है। इस शब्द को हम पौराणिक आधार पर भी प्रमाणित कर लेते हैं। रामायण एवं पुराणों में माझी ने राम को गंगा पार कराई थी। इस क्रिया में माझीस्तरात या मजिस्ट्रेट शब्द के सभी अर्थ या भाव आ जाते हैं। निरुक्त ने इस अर्थ को भाव कहा है, इसी कारण यहाँ पर भी अर्थ के साथ भाव रखा गया है। अध्यात्म में माझीस्तरात सर्वत्र लागू होता है - जैसे हम राज्यपाल,मुख्यमंत्री, सचिव से लेकर पटवारी पुलिस तक के सभी पदों को माझिस्तरात

---

1. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (इण्डोलाजी कालेज) के पुराण मर्मज्ञ डॉ. महेश चन्द्र जोशी का कथन है कि वे शब्द व्युत्पत्ति की इस विधा का कदापि समर्थन नहीं कर सकते हैं। फिर भी वे कुछ नये शब्दों को व्युत्पत्ति हेतु मुझे देते हैं। स्पष्ट है कि उनकी वाह्य दृष्टि और अन्तर्दृष्टि में संघर्ष चल रहा है। मेरे मित्र और सहपाठी विधि के प्रोफेसर एवं संविधान विशेषज्ञ डॉ0 श्रीप्रकाश मिश्र, हरिश्चन्द्र पी.जी.कालेज वाराणसी भी तुलनात्मक भाषाविज्ञान की इस विधा का कहीं पर मुक्त कंठ से समर्थन करते हैं और कहीं पर उनके ऊपर विधिवादियों की कागद की लेखी के अनुरूप स्वमत रखने का जनतांत्रिक अधिकार हावी हो जाता है। पाणिनी व्याकरण के प्रकाण्ड विद्वान आचार्य डॉ. महेन्द्र शुक्ल (पूर्व प्राचार्य, गवर्नमेंट पी.जी. कॉलेज शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश) इस विधा का अपने ढंग से पूर्ण समर्थन करते हुए मेरे निष्कर्षों की पाणिनी सूत्रों से पुष्टि करते हैं। अन्य बहुत से लोग हैं जो इस विधा को जानना चाहते हैं, परन्तु उनके लोक व्यवहार का अभ्यास उनकी अन्तर्दृष्टि के विरोध में खड़ा हो जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(मजिस्ट्रेट) कह सकते हैं, क्योंकि इन सभी के कार्य जनता को उसके संकटों से पार करना या निवृत्त करना है। लोक में भ्रम न हो जाय इसलिये एक 'पद' के रूप में इसे रूढ़ कर दिया जाता हैं।

"जिसे हमारे शास्त्र शब्द का साधु अर्थ कहते हैं उसे यहाँ दिया गया है। अब इसी शब्द का असाधु अर्थ देखें Magistrate = मजिस्ट्रेट/ माझिस्तरात/माजिस्तरात के अंग्रेजी शब्दों पर ध्यान दें। शब्दशास्त्र में 'ज' 'ग' में भी परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार यही मजिस्ट्रेट शब्द मागीस् (magis) तरात + (trate) में परिवर्तित हो जाता है। तरात अर्थात् संकट से पार कराने के बदले कुछ मांगने वाला (ही) मागीस्तरात या मजिस्ट्रेट है। 'कुछ मांगना' ही लोक में घूस नाम से प्रचलित है। अंग्रेजी के (magis) में ज (j) न होकर ग (g) शब्द है, परन्तु उच्चारण 'ज' किया जाता है। यदि दो पक्षों में विवाद है तो, उसमें मजिस्ट्रेट/ मागीस्तरात दोनों पक्षों से मांगता जाता है। कभी पक्ष से कभी विपक्ष से और दानों पक्ष संकट पार कर ही नहीं सकते हैं। यदि आपको इस असाधु व्युत्पत्ति पर विश्वास न हो तो पटवारी, पुलिस से लेकर सचिव, मुख्यमंत्री; राज्यपाल आदि पदों पर बैठे 'मागीस्तरातों (मजिस्ट्रेटों) पर शब्द का प्रभाव देख सकते हैं। भारत के 'मागीस्तरातों' (पदासीनों) ने आज मजिस्ट्रेट (माझीस्तरात) को मागीस्तरात (घूस या चुंगी लेने वाला) बनाकर रख दिया है।" शब्द विज्ञान का स्वरूप है। वह अच्छे (साधु) और बुरे (असाधु) दोनों प्रकार की पशु प्रवृत्तियों को धारण करता है। समाज और राज्य में शब्दों का साधु (पाजिटव) अर्थ ग्रहण किया जाता है और उसी पर सबको दृढ़ (खड़ा) रहना पड़ता है, तभी समाज और राज्य की व्यवस्था राज्य को स्वर्ग बना देती है। अन्यथा आज जैसी मजिस्ट्रेटी (मागीस्तराती) से नरक ही उत्पन्न होता है। शब्द व्युत्पत्ति का यह भी एक उद्देश्य होता है साधु अर्थ को ग्रहण करें और उसी पर स्वयं के आचरण को ढाल लें। इसी को नीति,सदाचार अथवा यम-नियम भी कहते हैं। बाईबल में इन्हें दस आदेश कहा गया है।

29. Director (डाइरेक्टोर/डाइरेक्टर)

अंग्रेजी डाइरेक्टर को हिन्दी, संस्कृत तथा अन्यान्य भारतीय भाषाओं में निदेशक या संचालक कहते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भाषाविदों के अनुसार डाइरेक्टर शब्द का मूल dire है। यह dire (डाइर/डायरे) शब्द लैटिन के dirus (डाइरुस/डाइरस) से व्युत्पन्न है। यह विशेषण (adjective) है। डायर/डाइरेस का अर्थ भयानक या खतरनाक होता है। इसी शब्द से direct (डाइरेक्ट), director (डाइरेक्टर) आदि शब्द बनते हैं। डाइरेक्ट का अर्थ सीधा, स्पष्ट, प्रत्यक्ष, ठीक, निर्दिष्ट धारा आदि होते हैं। कुमाऊँनी में dire (डाईरे) का उच्चारण है - डाई + रये = डाईरये = डाई का रहना या उत्पन्न होना।

यहाँ पर शब्दकोश या भाषा विज्ञानी हमें यह नहीं बता पाते हैं कि dire (डायर) का अर्थ भयानक, विपरीत या दुखदायी कैसे होता है। दूसरे शब्दों में भाषाविदों को यह ज्ञात नहीं हो पाता है कि डायर शब्द का वैज्ञानिक आधार क्या है? कि उससे डराने की क्रिया या भाव का अर्थ उत्पन्न हो जाता है। विश्व के भाषा शास्त्री, लेखक, वैज्ञानिक आदि सभी भाषा (शब्द) के अर्थ के विज्ञान को समझ पाने में अभी तक समर्थ नहीं हो पाये हैं।

विश्व के भाषाविदों को छोड़ भी दें तो भारत के प्रकाण्ड विद्वानों को क्या हो गया कि वे भी विश्व के विद्वानों को शब्दों के अर्थ का वैज्ञानिक आधार देने में सफल नहीं हो सके हैं, जबकि भारत के पास भाषा विज्ञान से सम्बन्धित अगाध साहित्य-निरुक्त, निघन्टु अनेकों प्रकार के व्याकरण एवं महाभारत जैसा व्युत्पत्ति शास्त्र परक महान ग्रन्थ (महा.आ.प. 62:40) आदि -- भरे पड़े हैं। विश्व को सब कुछ देने वाले सवा सौ करोड़ गुरुओं की यह स्थिति निश्चय ही कष्टदायी है। विद्वत्ता विनम्रता से आती है अतः विद्वानों को विनम्रता से ही इस प्रकरण को ग्रहण करना चाहिये।

हजारों वर्ष पूर्व में जाते हैं। क्या भाषा विज्ञानी अथवा वैज्ञानिक यह जानते हैं कि डाइ (di) शब्द कब बना अथवा समाज में प्रचलन में आया? शब्द बनने के पूर्व 'डाई' को उत्पन्न करने वाला द्रव्य (पदार्थ/matter) बना। उस द्रव्य से डाई तरंगों को उत्पन्न करने वाली वनस्पति बनी। जब उस वनस्पति को मनुष्य ने खाया तो उससे जिस गुण (तरंग दैर्ध्य से उत्पन्न भाव) की अनुभूति हुई उसी को मनुष्य ने 'डाइ' नाम दिया।

'डाइ' को उत्पन्न करने वाली वनस्पति का नाम मिर्च (chilli) को हरी या लाल मिर्च कहते हैं। कुमाऊँनी में 'डाई' शब्द लाल या हरी मिर्च से उत्पन्न गुण (प्रभाव) का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नाम है। मुख में जो स्वाभाविक तरंगे होती हैं, मिर्च खाने से मिर्च से उत्पन्न तरंगें उन सामान्य तरंगों के विपरीत क्रियाशील हो जाती हैं। इससे मुख में रस स्राव तीव्र गति से उत्पन्न होकर पूर्व की ढीली-ढाली गति को बढ़ा कर भोजन को आगे की ओर गतिमान कर देता है। यही डाइ रएक तोड़ = डाई रहने से पूर्व अवरोध को तोड़ कर आगे की दिशा का निर्देश करने के कारण है di से director शब्द व्युत्पन्न हो जाता है।

जब लाल मिर्च खाने से उत्पन्न झन-झनाहट असह्य हो जाती है तो चेहरा लाल हो उठता है, वेदना भी असह्य हो जाती है। मुख में स्थित सभी जीवों में भी भागमभाग मच जाती है, व्यक्ति पानी-पानी चिल्लाने लगता है। लालमिर्च के प्रभावों के इतने सारे अर्थ हो जाते हैं। इसी आधार पर डाइ (di) का अर्थ भयानक, खतरनाक असह्य या दुखदायी अर्थ व्युत्पन्न हो जाते हैं।

लाल मिर्च खाने से जब व्यक्ति शू-शू करते हुए मिर्च के प्रभाव को कम करने का प्रयास करता है तो उसी असह्य स्थिति को 'डाई' का प्रभाव या डाई कहा जाता है। कुमाऊँ में इसे डाई लागि गै छ = डाई लग गई है, कहते हैं।

डाई के अनेक नाम है ड्यैल, ड्यालो शब्द भी प्रयुक्त होते हैं। इस गुण के अन्य नाम भी हैं झल-झल या जीभ में झनझनाहट के कारण इसे झाल कहते हैं। इसी आधार पर लाल मर्च को झाली कहते हैं। अंग्रेजी में यह चिल-चिल गुण के उत्पन्न होने के कारण इसे चिल्ली/चिली (chilli) कहते हैं। च और झ एक ही वर्ग के वर्ण हैं। कुमाऊँनी, बंगला आदि भाषाओं में लाल मिर्च को झाली भी कहा जाता है इसका आधार झनझनाहट उत्पन्न करने वाले पदार्थ के गुण के आधार पर रखा गया है। चिल्लाहट उत्पन्न करने के कारण इसे अंग्रेजी में 'चिल्ली' कहते हैं।

29.1 शरीर ब्रह्माण्ड ही भाषा का आधार है

ऊपर के विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि भाषा का आधार शरीर ब्रह्माण्ड या क्षेत्र है। जो भाषाविद् प्रकृति में शब्दों के अर्थ की खोज करते हैं, वे विज्ञान को नहीं जानते हैं। शब्द और उसके निश्चित अर्थों का आधार हमारा शरीर ब्रह्माण्ड है। यही इसकी वैज्ञानिक प्रयोगशाला भी है।[1]

---

1. देखें - वेद पुराण बाइबल कुरान का रहस्यमय संसार - (पूर्व खण्ड) हरिदत्त शर्मा, पृष्ठ 20-25

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस विवेचन से गीता, महाभारत तथा अन्य ग्रन्थों का यह सिद्धान्त भी प्रमाणित हो जाता है कि गुण,कर्म और विभाग के आधार पर द्रव्यों, वस्तुओं और प्राणियों के नाम रखे जाते हैं (गीता)।

यह भी प्रमाणित हो जाता है कि अंग्रेजी भाषा का मूल भारतीय भाषाएँ हैं इनके बिना हम अंग्रेजी और अन्य यूरोपीय भाषाओं की उत्पत्ति का आधार और उनके विज्ञान स्वरूप को नहीं जान सकते हैं।

जिसे अंग्रेजी में dire (डायर/डाईरे) कहा है उसे कुमाऊँनी भाषा में डाईरए = डाइ गुण का आना या उत्पन्न होना कहा जाता है। लैटिन dirus (डाइरस/डाइरउस) को कुमाऊनी में डाई रऊछ = डाई का रहना या आना कहा जाता है। इसके लिये डाइ रओछ = डाई का रहना या आना शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है।

इस विवेचन से वेद का यह कथन भी प्रमाणित हो जाता है कि ऋचा (= रयि + चआ = ऊर्जा की चाह) के पोषक या जीवन दायी तत्त्व, पुस्तकों की शाब्दिक ऋचाओं से नहीं उत्पन्न होते हैं, वरन् इन ऋचाओं का निवास परम व्योम (=प्राकृतिक आकाश) में होता है। शब्द रूपी ऋचाओं से परम व्योम में रहने वाली द्रव्य रूपी ऋचाओं को जानने और उनका उपयोग करने को ही वेद((=ज्ञान) कहते हैं।

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन्देवा अधि विश्वे नषेदुः।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते।।

- ऋ. वे. 1:164:39।

यहाँ पर इस ऋचा का लघु भावार्थ दिया गया है ऋचा के भाव को अनेकों प्रकार से कहा जा सकता है। विस्तार पृष्ठ 25 में देखने का कष्ट करें।

29.2 एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति

लाल मिर्च का भौतिक स्वरूप एक है। इसी को सद् या सत् कहा जाता है। प्रत्येक देश, प्रत्येक क्षेत्र में इसके अनेक नाम हैं (बहुधा वदन्ति)। यहाँ पर लाल/हरी मिर्च भारत की अनेक भाषाओं में जिन नामों से जानी जाती है, उसका विवरण नीचे दिया जाता है।[1]

1. भारतीय व्यवहार कोश, विश्वनाथ दिनकर नरवणे - संपादक, मेहता पब्लिशिंग हाउस, पुणे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भाषा	हिन्दी	कुमाऊँनी *	English	पंजाबी	उर्दू
	मिर्च (लाल)	डाई, झाली खुरसानी लाल मिर्च	Chilly	लाल मिर्च	लाल मिर्च
भाषा	कश्मीरी	सिंधी	मराठी	गुजराती	
	मर्चु बांगुन्	गाढ़ा मिर्च	मिरची	मर्ची, मरची	
भाषा	बंगला	असमीया	ओड़िया	तेलगू	तमिल
	लङ्का, लॉङ्का	जलकीया जालोकीया	लङ्का लाङ्का	मिरपकाय	मिळकाय
भाषा	मलयालम	कन्नड़	संस्कृत		
	मुळकुँ, बट्टल	मेणसिनकायि	मरीचिका		

विवेचन- ऊपर के चार्ट को ध्यान से पढ़ें एक ही सत्य (सत्) 'लाल मिर्च' के भिन्न-भिन्न भाषाओं में भिन्न-भिन्न नाम हैं।

भौतिक नामों से लेकर अध्यात्म से सम्बन्धित नामों की यही स्थिति है। विश्व के धर्म प्रेमी धर्मान्धों की स्थिति तो भयावह है। उन्हें कितना ही कहा जाय कि नाम पर मत लड़ो। नाम के आधार पर भेदभाव मत करो, यथार्थ को देखो। परम व्योम के सत्य को देखो तो हमें सत् /सत्य का ज्ञान हो जायेगा। जैसे मनुष्य जाति एक है, उसका धर्म एक है - मानव धर्म। उसके जन्म, जीवन और मृत्यु का अधिष्ठाता एक है, केवल उसके नाम में भिन्नता है। इस सत्य को जानना और उसी के अनुरूप आचरण करना ही विद्वानों की विद्वत्ता की महिमा है,परन्तु विश्व में तो उलटी धारा को बहाने में विद्वान और व्याख्याकार व्यस्त दिखाई देते हैं।

Direct (डाइरेक्ट) की कुमाऊँनी आधारित व्युत्पत्ति है डाइ रए कत = डाइ रहने या आने से ही क्रिया (कातने की) सम्पन्न/ सम्पादित/निर्देशित होती है। जो इस क्रिया को सम्पन्न करता है वह डाइ रए कतोर = डाइ आने पर कातने (कत/कट) का

*कुमाऊँनी शब्द लेखक ने जोड़े हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कार्य करता है या निर्देशित करता है वह डाइरेक्टर है। डाइ की व्युत्पत्ति दई/डई (di) /दही से भी की जा सकती है। कत= कातना या क्रिया करना है। कतोर = कातने या क्रिया संपन्न करने वाला है। कुमाऊँनी, हिन्दी के 'त' को अंग्रेज 'ट' बना देते हैं।

30. Deliver (डेलीवर /देली भर)

अंग्रेजी शब्द डेलीवर का अर्थ देना, पहुँचाना, मुक्त करना होता है। यहाँ पर भी वही शाश्वत प्रश्न उठता है कि डेलीवर शब्दों के योग से किस आधार पर यहाँ बताये गये अर्थ व्युत्पन्न हो जाते हैं? शब्दों में ऐसा कुछ नहीं होता है कि उच्चारण करते ही उनसे देने या पहुँचाने की आवाज निकलती है।

शब्दों के अर्थ के लिये हम शाश्वत यांत्रिकी अर्थात् शरीर ब्रह्माण्ड की प्रयोगशाला में जाते हैं। देवनागरी (संस्कृत, हिन्दी) का 'द' अंग्रेजी मे 'ड' हो जाता है। अंग्रेजी के डेली से मूल (शाश्वत) यांत्रिकी का ज्ञान हमें नहीं हो पाता है। मूल शब्द कुमाऊँनी भाषा में बोला जाता है। वहाँ इसे 'देली' कहते हैं। कुमाऊँ में देली की पूजा भी होती है। प्रतिदिन प्रातःकाल देली की साफ सफाई कर 'ऐपन' बनाये जाते हैं। 'ऐपन' में देली की ओर जाने वाले पद चिन्ह चावल के घोल से बनाये जाते हैं। लोक में इसे 'लक्ष्मी' (धन संपदा) का घर में आने का प्रतीक माना जाता है। घर के भीतर देली से ही प्रवेश होता है। देली का अर्थ दरवाजे की चौखट है। इस चौखट में भूमि से लगी लकड़ी लगभग चार इंच ऊँची उठी होती है। यही उठी हुई लकड़ी 'देली' कही जाती है। आज कल के मकानों में द्वार के चौखट में यह देली नहीं होती है। क्योंकि विज्ञान और वैज्ञानिक इस पुरानी परंपरा को - द्वार के चौखट में भूमि से चिपकी परन्तु चार अंगुल ऊँची लकड़ी को - शाश्वत विज्ञान की जीवन्त यान्त्रिकी का शिल्पकोश या पुस्तक नहीं मानते हैं। आज के वास्तुशास्त्री 'देली' के रहस्य को न जानकर निवास में पाजिटिव ऊर्जा लाने के नाम पर अनेकों प्रकार की ओझाई करते हैं, पर कुछ लाभ नहीं होता है।

अंग्रेजीकरण के कारण अंग्रेजों ने 'देली' को 'डेली' बना दिया और इस शब्द के मूल अर्थ को भुला दिया गया। यही स्थिति आंज भारतीय पांडित्य की है। हम भी वेद में कहे गये 'ऋचो' अक्षरे परमे व्योमन, ऋचा (शब्द) का अर्थ लोक में रहता है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की आत्मा को पकड़ नहीं पाते हैं। (विस्तार पृष्ठ 25 में दिया गया है)

लोक (कुमाऊँ) में कहते हैं "ये सामान देली में राखि दिया, मी भितर बठे ली ल्यूनु" अर्थात् इस सामान को देली में रख देना मैं भीतर से ले लूँगा। हिन्दी में देली को देहली कहते हैं।

अब हम लोक के बाद शरीर यांत्रिकी और उसकी क्रियाओं का अध्ययन करते हैं। शरीर मंदिर (घर, प्रासाद, मकान) की 'देली' मुख होता है। सारी लक्ष्मी (धन, वैभव, अन्न आदि) उसी देली (द्वार) से शरीर के भीतर प्रवेश करती है। जब ग्रास मुख (देली, द्वार) के पास रख दिया जाता है तो वह स्वतः ही आगे की क्रियाओं की सहायता से गले से नीचेको चला जाता है। मुख में ग्रास रखना, भरना भी है। इस प्रकार देली को भर (ver/भइर) देने से देना, पहुँचाना, मुक्त करना आदि अर्थ व्युत्पन्न हो जाते हैं। सम्पूर्ण शरीर यांत्रिकी के अलग-अलग खण्डों में हजारों द्वार और देली (ओष्ठ, कपाट) होते हैं। उनके भरते ही द्रव्य दूसरी ओर पहुँच जाते हैं। या पहुँचा दिये जाते हैं। इसी को 'देली भर' (deliver) या deliver (डेलीवर) कहते हैं। अब हमारा और विश्व का पांडित्य यह नहीं कह सकता है कि यूरोप की भाषाओं का मूल कुमाऊँनी या भारतीय भाषाओं में नहीं है। कुमाऊँनी भाषा के बिना अंग्रेजी अथवा अन्य यूरोपीय भाषाओं की व्युत्पत्ति अथवा उनके मूल को नहीं जाना जा सकता है। अतः विश्व की भाषाओं का अध्ययन नवीन दृष्टि से किया जाना चाहिये।

31. Human (ह्यूमन) = शांत मन

अंग्रेजी का ह्यूमन शब्द ह्यू+मन का योग है। ह्यू या ह्यूं शब्द कुमाऊँनी, गढ़वाली, नेपाली में 'हिम' के लिये प्रयोग किया जाता है। पहाड़ में ह्यूं/ह्यू पड़ि रौ छ= पहाड़ में ह्यू पड़ा है। ह्यूंमाल= हिमालय।

ह्यूमन का अर्थ मानव स्वभाव या मानवीय गुण होता है। इसका अर्थ शांत एवं चिंतनशील स्वभाव है। ह्यू = हिम शांति लाता है। गर्म वातावरण से उत्पन्न बेचैन स्वभाव को शांत करता है। जब ह्यू/ह्यूं पड़ता है तो उस समय वातावरण भी शांत बना रहता है। उस काल में न ठंडा होता है, न गर्म। ठंडा तब होता है जब बर्फ/ह्यू पड़ने के बाद हवा चलती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंग्रेजी ह्यूमन के साथ लगा मन (man) शब्द भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त मन (=इच्छा.चाह, कामना आदि) है। इस प्रकार ह्यूमन का अर्थ होता है शांत मन या शांत स्वभाव वाला प्राणी या मानव अथवा जिसका मन शांत होता है, मनन और चिंतन करता है। अथवा ह्यूं की तरह समाधि की भाषा में रहना जिसे अच्छा लगता है वही मानवमन (Human) या मानव का गुण है। कुमाऊँनी ह्यू + मन के योग से अंग्रेजी का human (ह्यूमन) बना दिया गया है। शब्द के उच्चारण समान हैं, केवल लिपि में अन्तर है।

वर्तमान में मनुष्य का ह्यू = शांत मन नष्ट हो गया है। हर समय उथल-पुथल (अशांति) की स्थिति में रहता है। यही कारण है कि विश्व से मानव का शांत रहने, चिंतन मनन करने का मानवीय स्वभाव या गुण नष्ट हो गया है। इसके स्थान पर शैतान (दैत्य) स्वभाव हावी हो गया है। उसे कहीं पर भी शांति नहीं प्राप्त होती है। चारों ओर गला काट प्रतिस्पर्धा है। इसी कारण (अशांत, बेचैन मन) आज के मनुष्य (मन) को शांति (ह्यू का गुण) से सोचने विचारने का समय मिलता ही नहीं है। यही कारण आज के मनुष्य को पिशाच अथवा राक्षसी कर्मों को करा देता है। ह्यूमन का एक अर्थ निर्विचार मन या द्वन्दातीत अवस्था (मन) भी है। अरबी में शांति के लिये 'अमन' (=निर्विचार मन) शब्द का प्रयोग होता है।

विश्व के मूर्धन्य विद्वानों को भाषाशास्त्र के इन वैज्ञानिक अर्थों पर ध्यान देना होगा। इसके रहस्य को समझे बिना हम विश्व में मानवीय मन (=शांत एवं विचारशील मन) को बनाये नहीं रह सकते हैं। शय (इच्छा) को तानता (शय + तान) ही शैतान मन है वही अशांति का कारण है।

अंग्रेजी के शब्दकोशों के अनुसार human शब्द पुरानी फ्रैंच के humain/ humaniti (=ह्यमैं/ ह्यूमय/ह्यमनाई /ह्यूमनाइति) से व्युत्पन्न है। फ्रेंच ह्यूमनाइति का अर्थ मन का ह्यू के गुणों से युक्त होना है। यह ध्यान में रखना चाहिये कि जिन शब्दों का उच्चारण फ्रेंच में नहीं होता है, उनका पूरा उच्चारण कुमाऊँनी सहित सभी भारतीय भाषाओं में होता है। इसी आधार पर फ्रैंच humain और humaniti का कुमाऊँनी उच्चारण ह्यूमय और ह्यूमनाइति किया गया है। इसका निष्कर्ष है कि अंग्रेजी की तरह फ्रेंच भाषा का मूल भी भारत है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फ्रेंच humaniti (ह्यूमनाइति/ह्यूमनाई) शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन के humanus ह्यूमानुष (=हिम मानव) से हुई है ऐसा कहा गया है। ह्यूमानुष (हिम मानव) अर्थात् शांत स्वभाव या वातावरण में रहने वाला मन अथवा मनुष्य ही humanus (ह्यूमानुष) होता है।

इस प्रकार कुमाऊँनी भाषा में प्रयुक्त ह्यू/ह्यूं (=हिम) के आधार पर अंग्रेजी, फ्रेंच और लैटिन शब्दों की व्युत्पत्ति के वैज्ञानिक पक्ष की व्याख्या की गयी है। विश्व की लंगड़ी मार विद्वता इसे स्वीकार करे या न करे यह उसके स्वभाव (ह्यूमन = शांत मन अथवा daimon (दैमन) - 'विरोध के लिये विरोध का शैतान मन' पर निर्भर करता है।

शब्द ब्रह्म की इस विधा से यह प्रश्न भी उठता है कि, क्या विश्व के भाषा पांडित्य की शब्दों के अर्थ की अधकचरी (अवैज्ञानिक) व्याख्या के कारण ही मानवता विनाश के कगार पर तो नहीं पहुँच गयी है? क्योंकि शब्द और उसके अर्थों में ही हमारा सम्पूर्ण ज्ञान और विज्ञान, सभ्यता और संस्कृति समाई (भरी) हुई है। ह्यूमन की व्याख्या से स्पष्ट है कि मानव जीवन शांति पूर्ण वातावरण में ही सम्भव है। इसके विपरीत वर्तमान विश्व भागम्-भाग की हाईटेक्नालॉजी वाली सभ्यता, मन को शांत वातावरण प्रदान नहीं कर पा रही है। परिणाम हम सबके सामने है।

सब क्षेत्रों का हमारा अग्रगामी नेतृत्व, शब्द 'ब्रह्म' अथवा भाषा विज्ञान की इस वैज्ञानिक व्याख्या में निहित परम सत्य को देख पाता है अथवा नहीं इसे भविष्य ही बता सकेगा।

वेदों में यह भविष्यवाणी हजारों वर्ष पूर्व कर दी गई थी - 'त्वरा' (गति) का अतिवाद, गलाकाट प्रतिस्पर्धा, भागमभाग - के कारण सर्वत्र यमराज उपस्थित हो जाते हैं। यमराज का अर्थ मृत्यु और विनाश है। आज की हाईटेक्नालाजी में क्या आपको सब कुछ विनाश की ओर बढ़ता हुआ दिखाई नहीं दे रहा है? ऋग्वेद (7/41/2) में इसे 'तुरश्चिद् राजा' कहा है। यास्क ने निरुक्त (12/2/8) में त्वर को त्वरा (तीव्रगति) वाला चित्त कहा है जिसका अर्थ यमराज बताया है (अध्यात्म और कुलयुग (हाई टेक्नालाजी), हरिदत्त शर्मा, फुटनोट पृष्ठ 58 से उद्धृत।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

32. Diaspora (दियास्पोरा) = दियाछपोरा

दियासपोरा ग्रीक शब्द है। इसका अर्थ बिखरना, अलगाव, फैल जाना होता है। बाईबल (नई) में इस शब्द दियासपोरा का उल्लेख हुआ है (NT, जॉन 7:35, 12:20 तथा Acts (प्रेरितों) 2:9-10) । कुमाऊँनी में यह शब्द इसी रूप में बोला जाता है - पोरो दियो छ = पोरा दिया है या पोरादियो/पोरोदियो/दियो पोरो आदि अनेक प्रकार से यह ग्रीक दियासपोरा बोला जाता है। यह शब्द नेपाली, गढ़वाली में भी है। इनका अर्थ भी एक सा है।

कुमाऊँनी में 'पोरो' मडुवा के बीजों से निकले महीन छिलकों को कहते हैं। इसे गाय-भैस को दिया (खिलाया) जाता है। पूरा प्रकरण लोक (ऋचो अक्षरे परमेव्योमन .....,ऋग्वेद 1:164:39) में देख लिया जाता है।

अध्यात्म में 'पोरा' जल के साथ भाप और वायु संग उड़ने वाले महीन द्रव्य या ऊफान के साथ बहने वाले द्रव्य को कहा जाता है। जब शरीरस्थ आधार चक्र (पृथ्वी) में मडुवा पक जाता है तो उसके सूक्ष्म तत्त्वों (पोरा) को सम्पूर्ण शरीर में रेचक प्राणायाम की क्रिया से संप्रसारित या बिखेर दिया जाता है अथवा अन्यत्र को दे दिया जाता है। इसी को 'दियासपोरा' कहते हैं। कुमाऊँनी में इसे 'दियाछपोरा' कहा जाता है। कुमाऊँ में शब्द भी 'प्वर' शब्द भी 'पोरा' के लिये प्रयोग में लाया जाता है। इसी पचन क्रिया को कबीरदास ने कहा है- सार-सार गहि लियो भूसा दियो उड़ाय।' इस पोरे को हिन्दी या अन्य भाषाओं में भूसा/भूस भी कहते हैं। कुमाऊँनी में इसे भुस, भुसो, भुस्सो कहा जाता है। कुमाऊँनी में धान और गेहूँ के भूसे को चिल्, चिलो कहा जाता है। इसी से अंग्रेजी का चिल्ड्रन (Children =चिल्डरेन) शब्द बन जाता है। इस प्रकार diaspora (दियास्पोरा) के उदाहरण से ग्रीक शब्दों के मूल स्थान का भी यहाँ पर दिग्दर्शन करा दिया गया है।

33. Bá al (बाल) = बाल देवता

बाल हिब्रू शब्द है, इसका अर्थ 'lord' ईश्वर, मालिक, स्वामी, संप्रभु आदि होता है। बाईबल में भी 'बाल' का देवता के रूप में वर्णन आया है। 'बाल' भारत में मक्के की बाल, गेहूँ की बाल और धान की बाल के रूप में सभी भाषाओं में बोला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाता है। इसी बाल में मनुष्यों की जीवनी शक्ति बसती है। कहा भी जाता है-'कलियुग में अन्न में ही प्राण बसते हैं'।

कुमाऊँ और देश के अन्य क्षेत्रों में खेतों में बाल पकने पर कटाई के पूर्व जो पूजा की जाती है वह 'बाल देवता' की ही पूजा है। कुमाऊँ में धान की बालों को दरवाजों के चौखट पर भी लगा कर इसे पूजा जाता है इसे 'सिर बाल्ली' (= पूजनीय) बाल कहा जाता है।

भारत में से बाल देवता को को बालेश्वर या बालेश्वर महादेव के रूप में पूजते हैं। कुमाऊँ के चन्द राजाओं ने चम्पावत में जो मंदिर बनाया था, उसको भी बालेश्वर या बालेश्वर महादेव का मंदिर कहते हैं।

भारत के देवों के 'बाल' स्वरूप (जैसे राम, कृष्ण) की पूजा भी हाती है। अध्यात्म में बाल देवता की उत्पत्ति सोम या चन्द्रदेव के रूप में मुख (सिर) में होती है। इसी आधार पर 'बाल' को सिर झुकाते हैं।उसे नमन करते हैं। प्रतीक रूप में दरवाजों के चौखट के ऊपर भी 'बाल' (गेहूँ और धान की) लगाते हैं,जिससे हम उस बालदेवता की सदा अधीनता में रहने की संस्कृति के भीतर रहने की विनम्रता को बनाये रह सकें। इस व्युत्पत्ति के द्वारा यह बताया जा रहा है कि भारतीय भाषाओं से ही हम हिब्रू भाषा, सभ्यता एवं संस्कृति के रहस्यों को खोल सकते हैं। हिब्रू 'नीसान' का वर्णन पूर्व में कर चुके हैं।

34. B³ ūlah बेउला : ब्योलो-ब्योलि = वर - वधू

कुमाऊँनी में 'बेऊला' को ब्योल/ब्योला/ब्योलो तथा बधू को ब्योली कहा जाता है। बेउला हिब्रू भाषा का शब्द है।

ये शब्द 'ब्यू' (कुमाऊँनी) से व्युत्पन्न हैं। 'ब्यूँ' का अर्थ बीज होता है। शेष अर्थ लोक व्यवहार से जाना जाता है।

35. B³ dōlah (हिब्रू); Bdellion (ग्रीक)

इन दोनों शब्दों का अर्थ चिपचिपा पदार्थ (रस) होता है। दोनों के उच्चारण में भिन्नता होने पर भी अर्थ समान है।

हिब्रू शब्द 'बेड़ो/बेडू लाह' (रस) तथा ग्रीक शब्द का उच्चारण 'बढ़े

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लिओंन' दोनों का उच्चारण कुमाऊँनी उच्चारण के अनुरूप होता है।

व्युत्पत्ति- इन दोनों शब्दों का अर्थ चिपकन या चिपकाने वाला पदार्थ किस प्रकार होता है, इसे हिब्रू भाषाविद एवं ग्रीक भाषाविद् व्याख्यायित नहीं कर पाते हैं।

जो द्रव्य किसी अन्य द्रव्य को 'बेड़' देता है, या चिपका देता है, वह बेड़ने या चिपकन उत्पन्न करने वाला पदार्थ है। यह हिब्रू शब्द की व्युत्पत्ति है (पूर्व प्रसंग bed को भी देखें)। ग्रीक शब्द का उच्चारण हम दो प्रकार से कर सकते हैं - बढ़ेल्लि ओं और बदे (बघना) ल्लिओ- दोनों का अर्थ चिपकन उत्पन्न करने वाला द्रव्य होता है। शरीर में जो बढ़ाव होता है, वह मांसपेशियों में द्रव्य के चिपकने से ही होता है। बांधने वाला द्रव्य भी अपने चिपकाने वाले गुण के कारण दो वस्तुओं को बेड़ देता है। उन्हें एक कर देता है। कुमाऊँनी में बांधने के लिये मूल शब्द 'बद' है जैसे - बाद् दे = बांध दे; बदी गोछ' या 'बादी गोछ' = बंध गया है।

इस प्रकार इस व्युत्पत्ति से हिब्रू और ग्रीक दोनों भाषाओं के शब्दों की विस्तृत व्याख्या हो गयी है। इसी कारण कहा जा रहा है भारत ही सभी भाषाओं का मूल या आधार भूत केन्द्र है। यही कारण है कि सम्पूर्ण विश्व जाने-अनजाने युगों पूर्व संस्कारों के प्रभाव से भारत की ओर टकटकी लगाये रहता हैं।

36. Professor (प्रोफेसर) = परो/परा फिस्सोर /- पिस्सोर

अंग्रेजी शब्द कोशों में कहा गया है प्रोफेसर (Proessor) शब्द का मूल लैटिन शब्द Professus (प्रोफेसुस) है। यह शब्द स्वयं Profiteri (प्रोफिटेरी) से सम्बन्धित है। यह शब्द स्वयं Pro + fateri (प्रो + फेटेरी) के योग से बनता है। प्रोफेस का अर्थ होता है कहना, बताना, भविष्यवाणी करना, ज्ञान देना, घटनाओं को बताना आदि। इस प्रोफेस/प्रोफ्यस में or लगा देने से प्रोफेसर अर्थात् कहने वाला, वक्ता, ज्ञान देने वाला, विश्लेषण करने वाला अर्थ हो जाता है। लैटिन का यह प्रोफेसुस (कहना, बताना) शब्द पुरानी फ्रेंच में Profes (प्रोफेस) तथा वहाँ से यह मध्य अंग्रेजी में Professed (प्रोफेसड) हो गया है।

अंग्रेजी कोशकार इससे आगे नहीं बढ़ पाते हैं। उनकी सीमा यहीं तक है। वे शब्द की सीमा निर्धारित कर देते हैं। इसके विपरीत भारतीय मनीषी शब्द को नित्य,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

असीमित एवं व्याप्त कहते हैं। शब्द के इसी गुण के कारण संस्कृत सभी स्थानीय (सीमा में बद्ध) भाषाओं में श्रेष्ठ एवं सम्माननीय भाषा है ठीक वैसे ही जैसे द्वादश आदित्यों में सबसे कनिष्ठ हेने पर भी विष्णु सबसे श्रेष्ठ हो जाते हैं।

भारतीय मानस में यह भावना व्याप्त तो है कि विश्व का गुरू होने का अधिकार उनका ही है परन्तु जब कहों कि यूरोप की भाषाओं का मूल भारत में है तो भारतीय आचार्यो, बौद्धिकों, प्रोफेसरों और वैज्ञानिकों की आँखों की पुतलियाँ उलट जाती हैं। उन पर एक प्रकार की संज्ञा शून्यता (बेहोशी) व्याप्त हो जाती है। उनकी संज्ञाशून्यता को दूर करने के उपक्रम में इन बौद्धिकों में चेतना ले आने के लिये शिष्यगण टी.वी., समाचार पत्र, स्कूलों, विश्वविद्यालयों में अनेक प्रकार के प्रालापानुष्ठान करते हुए इस प्रकार कहते हैं-

"महान भारत के श्रेष्ठ बौद्धिकाचार्यगण उठें, देखें आपके नेतृत्व के बिना राष्ट्र पंगु हो गया है, जिन प्रधानमंत्री, मंत्री, राष्ट्रपति, सुप्रीम कोर्ट के जज, आई.ए.एस., पी.सी.एस. आदि को आप लोग ज्ञान देकर पदों पर आरूढ़ करने में सहायक हुये हैं, वे आज क्यों व्याकुल हैं?

"आप लोगों द्वारा बाँटा गया घूस, भ्रष्टाचार, अहंकार, दम्भ आदि का ज्ञान आज इन क्रियाशील कर्मठों को छोड़कर अन्यत्र जाने का उपक्रम क्यों बना रहा है? हे प्रोफेसरो! आचार्यों ! आप उठें अपने तर्कास्त्रों से संविधान = ज्ञान, धर्म, न्याय, व्यवस्था आदि को पुनः उसी स्थिति में ले आयें। यदि आप लोग सोयें रहेंगे तो हम शिष्यगण किस तरह जीवित रह सकेंगे क्योंकि आप लोगों द्वारा दी गयी शिक्षा और उद्बोधित आचरण ही हमारे जीवन का आधार है। हे आचार्योंवरो/प्रोफेसरो/गुरुवरो! हम आप लोगों को नमन करते है बार-बार नमन करते हैं! उठें! अपने द्वारा शिक्षित एवं दीक्षित ज्ञान प्रधानमंत्री, मंत्रियों, न्यायाधीशों, पुलिस, प्रशासन आदि को पहले की तरह उत्साहित करता रहे। जिससे आपकी, हमारी और सम्पूर्ण तंत्र की जीविका चलती रहे। टी.वी., अखबारों, शिक्षालयों, रास्तों, चौराहों पर आपकी और हमारी जय जयकार होती रहे। जब तक सूरज चांद रहेंगे उनके नाम भी हमारे नाम पर रख दिये जाते रहेंगे।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विद्वानों को इस प्रकार के अनुष्ठानों को देख-सुन कर आश्चर्य नहीं करना चाहिये। रोज यही हो रहा है, हम लोग देखते हुए देखते नहीं हैं। आज विश्वविद्यालयों से लेकर प्रत्येक क्षेत्र में प्रोफेसरों की भरमार है। प्रोफेस से ही प्रोफेसन (=व्यवसाय, वृत्ति, रोजगार) व्युत्पन्न है। प्रत्येक व्यवसाय में विशेषज्ञ, भविष्यवक्ता, प्रवक्ता, सम्बन्धित वृत्ति का ज्ञान देने वाले हैं। अतः विश्वविद्यालय के लोगों को ही प्रोफेसर होने का भ्रम नहीं पाल लेना चाहिये। भिन्नता लाने के लिये प्रत्येक व्यवसाय के पदों के नाम में भले ही भिन्नता दे दी जाय परन्तु सबमें अपने-अपने प्रोफेसर (प्रवक्ता, ज्ञानी, विज्ञानी, भविष्य वक्ता) होते हैं।

सामान्य ज्ञानी समझता है कि शिक्षा अनुशासन, नैतिकता आदि विद्यालयों और विश्वविद्यालयों का कार्य है। यथार्थ में यही वर्तमान शिक्षाविदों की भूल है। जैसा कि ऊपर बता दिया है कि प्रत्येक क्षेत्र/विभाग में उसके अपने प्रोफेसर होते हैं। जैसी शिक्षा जिस क्षेत्र का प्रोफेसर (प्रमुख, प्रधानमंत्री, प्रधान, मुख्य मंत्री, प्रधान न्यायाधीश, प्रधान सचिव आदि अपने अधीनस्थों को देते हैं और जैसा स्वयं के आचरण से व्यावहारिक ज्ञान बिखेरते हैं, उनके अधीनस्थ वैसा ही अनुकरण करते हैं। इससे निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा एवं नैतिकता छात्र जीवन तक ही अनिवार्य नहीं है। यह प्रत्येक के जीवन पर्यंत तक का एक अनिवार्य प्रशिक्षण एवं तप है। भारत एवं अन्य देशों में यही शिक्षितान्धता छाई है कि सभी लोग शिक्षा पाने के बाद शिक्षा के नैतिक, सामाजिक, मानवीय बंधनों से मुक्त हो कर सभी क्षेत्रों में स्वेच्छाचार अपना लेते हैं। आश्चर्य तो इस बात पर होता है कि इसी को ये लोग संविधान प्रदत्त मूल अधिकार कहते हैं। इनके काम करने के अधिकार को विभागीय नियमों द्वारा संरक्षण दिया जाकर इन्हें कुछ भी करने की स्वतंत्रता दे दी गई है। तात्पर्य यह है कि सरकार और सरकारी विभागों के प्रोफेसरों (ज्ञानियों) पर कोई बंधन नहीं है और असफलता का ठीकरा गुरूजी, आचार्यजी और प्रोफेसरों के सिर फोड़ दिया जाता है। जब सम्पूर्ण व्यवस्था सड़ गई हो तो शिक्षा तंत्र किस प्रकार सड़न से मुक्त रह सकता है?

प्रशासक, विधिज्ञ, संविधान निर्माता, जज, विशेषज्ञ, भविष्य वक्ता, प्रोफेसर लोग बताये यदि कोई किसी गरीब की वृत्ति (रोजगार) छीन ले तो क्या खाकर वह सुप्रीम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोर्ट तक अपना पक्ष रखता रहेगा? आप सभी प्रकार के इलीट के पास कोई उत्तर नहीं है। सिवाय अपनी जिह्वा में तर्कों की छुरी बांध कर मानवता को निरुत्तर कर देने के। यही कारण है कि आज के विश्व में मानवता कराह रही है।

प्रोफेसर की व्युत्पत्ति के लिये हम शरीर यांत्रिकी (प्रयोगशाला) की दीवरों के भीतर प्रवेश करते हैं। आप लोग भी साथ में रहें और सब कुछ का निरीक्षण-परीक्षण एवं विवेचना करते रहें।

भोजन के ग्रास को अपने मुख में लें। उसे चबायें, कूटें और जिह्वा से उलटें-पलटें। इस क्रिया का ध्यान से निरीक्षण करें और शब्दों को ध्यान से सुनें। इस क्रिया से फिच-फिच, फेच-फेच, फ्यच-फ्यच और फिस-फिस, पिस-पिस आदि ध्वनियाँ निकलती हैं। अन्न ग्रास, दांत, जीभ को तो हम प्रत्यक्ष देख लेते हैं। उस सत्ता को नहीं देख पाते हैं जो शब्द का उत्सर्जन करती है।

इस अदृश्य सत्ता को हम परा, प्रो, परो, (pro/परोक्ष) सत्ता कहते हैं। इसी परो proप्रो+ फ्यस = प्रोफ्यस/प्रोफेस का अर्थ कहना,बताना या व्याख्यान है। इस सम्पूर्ण यांत्रिकी को व्यक्ति वाची बना कर इसमें or (ओर) जोड़ कर प्रोफेस को प्रोफेसर/प्रोफेस्सोर = बोलने वाला, कहने वाला, भविष्य वक्ता अर्थ निकल आता है। प्रोफेस्सोर के 'स्सोर' को शोर ही कहना चाहिये। इसी शोर (स्पष्ट ध्वनि) से हमें शब्दों का चुनाव कर उनका अर्थ निकालना होता है। लोक में उसी को रूढ़/मानकीकरण कर दिया जाता है।

प्रोफेसर का Pro स्पष्ट कर दिया गया है, फ्यच, फिच शब्द फीचने (जैसे कपड़ा धोने को फींचना कहा जाता है) से उत्पन्न होते हैं यही शब्द मुख में अन्न फीचनें से भी उत्पन्न होते हैं। यहाँ पर ग्रास चबाना ही फीचने का प्रतिरूप है। ग्रास चबाने (फीचने) से जब मुख खुल जाता है तो फ्यस शब्द भी निकलता है। यहाँ पर अंग्रेजी में फ्यस (फेस्स) को लिया गया है। संस्कृत वाक्यों में इसीलिये 'स' च या 'छ' में परिवर्तित हुआ मिलता है। क्योंकि दोनों शब्द एक ही क्रिया के दो रूप हैं या एक ही अर्थ धारण करते हैं। अंग्रेजी का or शब्द कुमाऊँनी में औड़/औड़ना कहा जाता है। औड़ शब्द घड़े में से पानी निकालने की क्रिया को कहा जाता है जिससे शब्द (शोर)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उत्पन्न होता है।

इस प्रकार pro (परा/परो) + फिस्स/फेस्स/+ (औड़/ओर) से परोफिस्सर परोफिस्सल/प्रोफेसर शब्द बनता है जिसका अर्थ है वह परा या परोक्ष सत्ता जिसके संयोग से फिस्स ध्वनि निर्गत होती है तथा जो इस क्रिया को सम्पन्न करता है (or औड़ता है) वह प्रोफेसर है। मुख में जीभ इस ओर (or/औड़) से उस ओर (or) को ले जाती है उसी को औड़ना /औड़ कहा गया है। अथवा जो परा शक्ति के साथ क्रिया होने पर Profess से एक s को or के साथ संयुक्त कर देने से सोर (sor) या शोर शब्द बनता है। तब वह परा (प्रो) फिच्चोर उच्चरित होता है। सब जानते हैं कि प्रोफेसर कितना शोर करते हैं अर्थात् शब्दों को बोलते हैं।

अभी तक Professor का जो विवेचन किया है वह शरीर-ब्रह्माण्ड के प्रोफेसर और लौकिक प्रोफेसर का मिला जुला रूप है। अब शुद्ध रूप में शरीर-ब्रह्माण्ड अर्थात् अध्यात्मिक प्रोफेसर (आचार्य) का विवेचन करते हैं।

मुख में अन्न और लार के मिश्रण तथा जीभ के द्वारा (औड़ने = उलटने-पलटने) से पराशक्ति (परोक्ष/ pro) द्वारा जो ध्वनि फिच्च/फ्यस/फेच शब्द उत्पन्न होते हैं। वह केवल शब्द मात्र नहीं है। इन शब्दों के बार-बार दुहराते रहने से मुख में स्वाद आता है, कम होता है या बढ़ता है, अन्त में ग्रास चबाया जाना ही कठिन हो जाता है। इन सभी क्रियाओं में सम्पूर्ण शरीर से लार के अण या कण अन्न से मिश्रित होते हैं उन्हें पहचानते हैं, किस क्षेत्र से ये अण (मालीक्यूल) आये हैं उसी क्षेत्र में ये लार कण अन्न से प्राप्त पोषक तत्त्वों को पहुँचाकर शरीर का पोषण करते हैं। इसी को बालकों की शाश्वत/सार्वभौम शिक्षा कहा जाता है। इसी कारण शिक्षक/आचार्य/प्रोफेसर चबाने से उत्पन्न शब्द प्रो+फ्येस + or को दुहराते हैं जिससे बालक (लार रूप) को अन्न के पोषक तत्त्वों और क्षेत्र के भूगोल का (जो उन्हें इसी क्रिया से ज्ञात हो जाता है) का भलीभांति ज्ञान हो जाता है। यही कारण है कि ग्रास को चबाचबा कर खाया जाता है जिससे उत्पन्न शब्दों के प्रभाव से शरीर के सम्पूर्ण अंग प्रत्यंगों तक तृप्ति का सम्प्रसारण (फैलाव) हो जाता है। भारतीय दर्शन की शब्दावली में कहें तो इसी शिक्षालय में बालकों को धर्म अर्थ काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थों का मानसिक ज्ञान करा दिया जाता है। समय के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साथ-साथ उनमें व्यावहारिक ज्ञान स्वतः उत्पन्न होता जाता है।

वक्ता या भविष्यवक्ता अर्थ प्रोफेसर या आचार्य का इसलिये किया जाता है क्योंकि शरीर में उस अन्न एवं लार कणों का भविष्य क्या होगा यह भी प्राणायाम क्रिया से फीचे/कूटे जाने वाले शब्दों की ध्वनि तरंगों से ज्ञात कर लिया जाता है। आयुर्वेद में इस क्रिया से उत्पन्न ध्वनि (शब्द) तरंगों के ज्ञान को नाड़ी विज्ञान कहा जाता है।उसी से वैद्य शरीर से सम्बन्धित भविष्यवाणी करते हैं। यहाँ पर नाड़ी से उत्पन्न शब्द और उसके ज्ञान को अध्यात्म स्तर का प्रोफेसर (pro + fess+ or = परा फिस शोर) के रूप में जाना जाता है।

अब प्रोफेसर शब्द के आधारभूत जिन शब्दों को शब्द कोशों में बताया है तथा जिनका ऊपर उल्लेख किया है। उनका भारतीय मूल भी बताना उचित है जिससे भाषाविदों को सहजता से इन शब्दों के भारतीय मूल का ज्ञान हो सके। देखें-

अंग्रेजी शब्द कोशों में कहा गया है profess की उत्पत्ति लैटिन शब्द professus (प्रोफेसुस) से हुयी है। यह शब्द स्वयं profiteri (प्रोफेटीरि) से व्युत्पन्न है। यह शब्द स्वयं दो शब्दों के योग से pro + fateri (परो + फाटेरी/ प्रो फेटेरी) से बना है इसका अर्थ कहना बताना, स्वीकार करना है।

पहले शब्द को हम परो/परा फेस्सुस या परा फेच्चुस (पराशक्ति के संयोग से फेचने कूटने पीसने) की क्रिया कहते हैं। परो फाटेरी या पातेरी/पातेरई जैसे भात पकने में भी फात शब्द उत्पन्न होता है। इसे फेटेरी/फेटेरई = फेटना भी कहते हैं। एक सत्य को और जान लेना यहाँ पर हितकर होगा। प्रोफेसर के लिये हम प्रोपिसर शब्द भी प्रयोग (रूढ़) कर सकते हैं। परा + पिस्सेर या परो पइस्सइर = अन्न कूटने-पसने में चक्की से पिस-पिस ध्वनि निकलती है। इसी प्रकार की ध्वनि दाँतों द्वारा अन्न पीसने से भी उत्पन्न होती है। इसी आधार पर गेहूँ को पीसने से उत्पन्न आटे को पिस्सो या पिसान कहते हैं। फ्रेंच में profes (प्रो फीस)/प्रोफ्यस) को कुमाऊँनी में परो /परा+पीस कहते हैं। इसका अर्थ होता है पराशक्ति द्वारा पीसने की क्रिया आदि का संचालन करना। इसमें प और फ शब्द यांत्रिकी के स्वरूप के अनुरूप उच्चारण करते हैं। दोनों का अर्थ एक ही होता है जैसे मुँह में पानी भर कर पिच्च करें या फिच्च करें दोनों शब्द एक ही क्रिया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुंह से पिचकारी/फिचकारी का संपादन करते हैं। इसलिये विद्वान लोग यही शब्द सही है इस पर लड़ते नहीं हैं। यहाँ के प्रसंग के अनुसार परो/परा + पिस्सोर (प्रोपिस्सर/प्रोपिस्सोर/प्रोपेस्सोर का अर्थ बोल-बोल कर शरीर-यांत्रिकी का संचालन है। संचालन का अर्थ (ज्ञान) बताना आदि हो जाता है। शब्दों (प और फ) के मूल अर्थ में कोई अन्तर नहीं है भले ही शब्दों में परिवर्तन हो गया है। इसी आधार पर संस्कृत में कहा गया है 'एकं सत विप्रा वहुधा वदन्ति'। सत्य एक है शब्दों की भिन्नता सत्य को नहीं बदल सकती है।

शिक्षाविदों, प्रोफेसरों, आचार्यों से नम्र निवेदन है कि जहाँ पर तारतम्य में उलझाव दिखाई दे, तो कृपा कर उसे स्वयं सुलझा लेने का कष्ट करें। शब्द विज्ञान के सम्पूर्ण स्वरूष का संक्षेप और विस्तार दोनों रूपों से वर्णन कर दिया गया है। यह विस्तार 'नेति-नेति' का अति अल्प अंश है उसका अतिक्रमण नहीं। इसे तभी समझा जा सकता है, जब हम ध्यान और योग के माध्यम से बताई जा रही यांत्रिकी, उसकी क्रिया और उत्पन्न शब्दों से स्वयं को एकाकार कर लेते हैं। यह बहुत श्रम साध्य प्रणाली है। यही कारण है कि 'तप' के बिना 'शब्द ब्रह्म' के व्यवहार को जान पाना कठिन हो जाता है।

शब्द ब्रह्म के सभी साधकों को मेरा नमन!

"इति शुभम्"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शब्द ब्रह्म या भाषा का रहस्यलोक

शुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
17	11	मिश्र निकाल	मिश्र से निकाल
17	20	गुण	गुणों
18	7	बात में पूजा	बात, पूजा
18	15	व्यस्थित	व्यवस्थित
18	17	अर ताक्से रक्से	अर ताक्से र कसे
31	16	एकोऊहम्	एकोऽहम्
32	5	रहस्य संसार	रहस्यमय संसार
34	16	'रार'	'शर'
45	4	(कौंछ) कहता है	कहता है (कौंछ)
45	10	सभ्यता	साम्यता
46	23	'पुराणों' इन्हें	'पुराणों' में इन्हें
70	13	अन्य	अन्ध
92	1	ब्राह्मणों	ब्रह्माण्डों
105	24	कुलयुग	कलियुग
106	16	कुमांऊँ में शब्द भी 'प्वर'	कुमाऊँ में 'प्वर'
107	10	भारत के	भारत में
107	10	हाती	होती
109	20	आचार्योवरो	आचार्यवरो
111	4	दीवरों	दीवारों
113	20	पसने	पीसने

◆

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

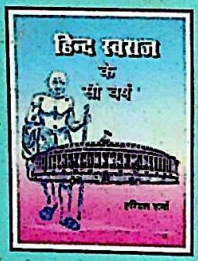

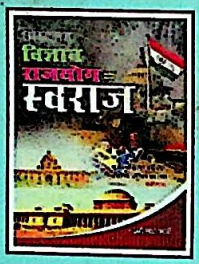

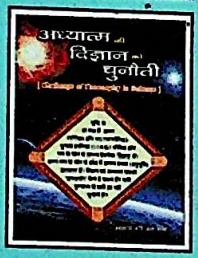

लेखक की अन्य रचनाएँ

1. राजनीतिक अस्तित्ववाद
2. परमाणु, मन और विज्ञान
3. भारत के लोगों का संविधान और दर्पण
4. शब्द विज्ञान
   (विश्व भाषाओं की कुमाउनी आधारित व्युत्पत्ति) प्रथम खण्ड
5. हिन्द स्वराज के सौ वर्ष
6. अध्यात्म विज्ञान राजयोग = स्वराज
7. अध्यात्म और कलियुग (हाई टेक्नोलॉजी)
8. वेद पुराण बाईबल कुरान का रहस्यमय संसार (पूर्व खण्ड)
9. वेद पुराण बाईबल कुरान का रहस्यमय संसार (उत्तर खण्ड)
10. अध्यात्म की विज्ञान को चुनौती

राजनीतिक अकादमी
वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi